आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 1 ★ मूल्य : 10 रु.
15 जनवरी, 2008 ★ पौष सं. 2064

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

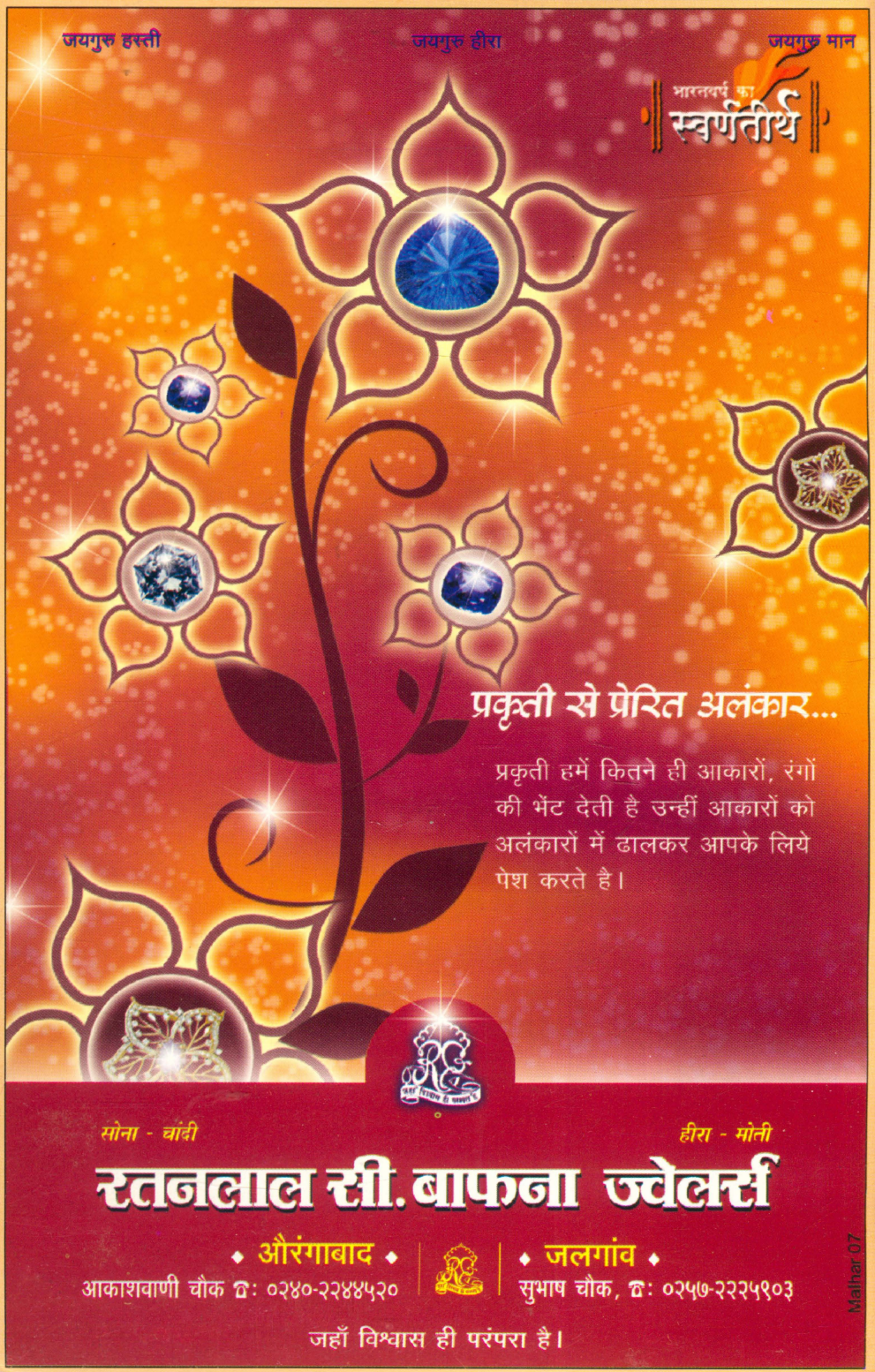
जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
भारतवर्ष का
स्वर्णतीर्थ
प्रकृती से प्रेरित अलंकार...
प्रकृती हमें कितने ही आकारों, रंगों की भेंट देती है उन्हीं आकारों को अलंकारों में ढालकर आपके लिये पेश करते है।
सोना - चांदी
हीरा - मोती
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
• औरंगाबाद •
आकाशवाणी चौक ☎: ०२४०-२२४४५२०
• जलगांव •
सुभाष चौक, ☎: ०२५७-२२२५९०३
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।
Malhar 07

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

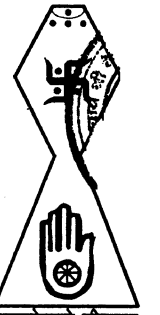

विसालिसेहिं सीलेहिं,
जक्खा उत्तर-उत्तरा।
महासुक्का व दिप्पंता,
मन्नंता अपुणाच्चवं।।

- उत्तराध्ययन सूत्र ७.१४

विविध शीलव्रत का पालन कर,
देव परम उत्तम बनते।
महाशुक्ल-सम दीप्तिमान् हो,
नहीं च्यवन को मन धरते।।

जनवरी २००८
वीर निर्वाण संवत् २५३४
पौष २०६४

वर्ष ६५ अंक १

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	पारिवारिक कलह	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	कषाय को घटाएँ, कर्मास्रव को रोकें	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	११
	भावे दीजो दान	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	१५
	क्रोध का क्षण टालें जरा	-श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	१९
	एक बेटा या बेटी जिनशासन को समर्पित करें	-श्री उदयमुनि जी म.सा.	२८
शोधालेख-	श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी	२२
अंग्रेजी स्तम्भ-	Study of Jain Canon	-*Shri A.L. Sancheti*	३१
वैज्ञानिक लेख-	ऊर्जा का वैश्विक रूप	-प्रो. प्रभात कुमार जैन	३६
प्रश्न-मंच-	अभय	-श्री पी.एम. चोरडिया	४४
जिज्ञासा समाधान-	व्यवहार राशि एवं अव्यवहार राशि	- संकलित	४९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (४४)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५६
युवा-स्तम्भ-	साधनों के ढेर में ढूँढ रहें हैं 'अपनापन'	-श्री पदमचन्द गाँधी	६०
उपन्यास-	भाई-बहन (३)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	६३
नारी-स्तम्भ-	बालकों का लालन-पालन	- डॉ. भीकमचन्द प्रजापति	६७
बाल-स्तम्भ-	अनाथ कौन?	-प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा.	७०
प्रेरक प्रसंग-	मानव की केंकड़ा वृत्ति	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	२१
कविता/गीत-	गुरुवर के गुण अनन्त अपारा	-श्री प्रसन्नचन्द बाफना	२६
	मानचन्द्र गुण-कीर्तनम्	-श्री सम्पतराज चौधरी	३०
	स्मरणीय क्षणिकाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	१०८
विचार-	शास्त्र	-श्री नवरतनमल डोसी	२७
	स्वास्थ्य-चिन्तन	-श्री चंचलमल चोरडिया	४८
	Surprise about Mankind	-*Shri Ketan Surana*	६६
संवाद-	समस्या : समाधान (९)		७५
परिणाम -	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (१६)		७९
	नन्दीसूत्र खुली पुस्तक प्रतियोगिता परिणाम		८२
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	७७
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		८७
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१०४

सम्पादकीय

पारिवारिक कलह

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

१५ दिसम्बर २००७ को जोधपुर में बार काउन्सिल ऑफ इन्डिया एवं बार काउन्सिल ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय विधि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश माननीय के.जी. बालकृष्णन ने सम्बोधित करते हुए यह रहस्य उद्घाटित किया कि अदालतों में सर्वाधिक मुकदमे पारिवारिक विवाद से सम्बद्ध हैं। यह निश्चित रूप से परिवार के पारस्परिक कलहों के बढ़ते ग्राफ को इंगित करने वाली सूचना है। भारत में शान्ति एवं समत्व की कामना करने वाले हृदयों को इस सूचना से आघात पहुँचना स्वाभाविक है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन का प्रारम्भ परिवार से होता है तथा विकास में परिवार के साथ समाज का भी योगदान रहता है। किन्तु यह विडम्बना ही है कि वह जिससे कुछ पाता है उसी का विरोधी बन जाता है। इसका कारण उसकी दृष्टि का दोष है जो उसे कृतज्ञ बनाने की बजाय कृतघ्न बना देता है। प्रधान न्यायाधीश ने यद्यपि सम्पूर्ण भारत के परिवारों को दृष्टिगत रखकर पारिवारिक विवादों की बात कही है, किन्तु इन विवादों से जैन समाज भी अछूता नहीं है। समाज के अनेक सदस्यों का बहुत सा समय न्यायालयों के चक्कर लगाने में पूरा हो जाता है। न्यायालय में समय, शक्ति एवं धन व्यय करने के बाद भी अधिकतर लोगों को अन्त में पश्चात्ताप की अग्नि में दग्ध होने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

भारतीय परिवार की नींव एक-दूसरे के हित में सहयोग पर टिकी है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, भाई-बहन आदि रिश्ते एक-दूसरे के हित में सहयोग करते हैं, किन्तु जब मन में द्वेष की खटास पैदा हो जाती है तो पारस्परिक प्रेम का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है और फिर एक-दूसरे के शत्रु बनकर उन्हें समाप्त करने, नीचा दिखाने एवं अपने अस्तित्व की ताल ठोकने के लिए तैयार हो जाते हैं। कभी सम्पत्ति, भूमि, भवन के बंटवारे को लेकर; कभी परिवार में अपनी उपेक्षा को लेकर;

तो कभी एक-दूसरे पर अपमान की छींटाकशी से कलह का वातावरण बन जाता है।

यह कलह विभिन्न स्तरों पर होता है। प्रारम्भ में मन के स्तर पर दूसरे के प्रति द्वेषभाव पैदा होता है, उसकी त्रुटियाँ ही त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति अनिष्टकारी एवं अमनोज्ञ प्रतीत होती है। उसे देखना भी मन को नहीं सुहाता है। मन में बोए गए ये द्वेष के बीज पारस्परिक कलह के मुख्य आधार बनते हैं। यह द्वेष छोटी-छोटी बातों को लेकर पैदा हो सकता है। मन में जब द्वेष की खटास उत्पन्न हो जाती है तो फिर वह वाणी एवं अन्य प्रवृत्तियों में प्रकट होती है। कटाक्षपूर्ण व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग अथवा तुनक कर अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल होने लगता है। फिर गाली-गलोच भी होने में देर नहीं लगती। धीरे-धीरे नौबत हाथापाई एवं मारपीट तक पहुँच जाती है। समय पर इस दुराव एवं कलह को न संभाला जाय तो यह झगड़ा घर के बाहर मौहल्ले में एवं सड़क पर भी दिखाई पड़ता है। पड़ौसियों को एवं विरोधियों को इस झगड़े को सुलझाने में जितना आनन्द नहीं आता उससे अधिक उसे सुलगाने में या भड़काने में आता है। कोई विरले ही समझदार पड़ौसी होते हैं जो सुलह कराने के लिए तत्पर होते हैं। कदाचित् कोई पड़ौसी तत्पर हो भी जाए तो प्रायः परिवारजन उन्हें बीच में बोलने से मना कर देते हैं।

इस तरह मन का वह द्वेष क्रोध एवं अशांति को निरन्तर बढ़ावा देता रहता है। सम्बन्धों की खटास बढ़ती रहती है। एक-दूसरे के प्रति सशंक बने रहते हैं। मौखिक सम्प्रेषण विकृत हो जाता है। पारस्परिक दूरियां बढ़ जाती है। पति-पत्नी हों तो स्थिति तलाक तक पहुँच जाती है। यह ध्यातव्य है कि पूर्वापेक्षा तलाक की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। तलाक लेना जितना कठिन है सम्भवतः साथ में रहना उतना नहीं, क्योंकि न्यायालय से तलाक लेने में लगभग डेढ़ वर्ष का समय व्यय होता है। नियमानुसार एक वर्ष तक परस्पर अलग रहने वाले पति-पत्नी ही तलाक के लिए आवेदन कर सकते हैं। फिर न्यायालय भी उनको छः माह का समय देता है। तब भी यदि साथ रहने में उनकी सहमति नहीं होती है तब कहीं जाकर तलाक हो पाता है। अब इस दीर्घावधि से बचने के लिए कुछ युगल सम्बन्ध विच्छेद करके अलग-अलग रहने में अपनी शान समझते हैं। इसके पीछे उनका अहंकार एवं असमायोजन का दोष मुख्य हेतु होता है। एक-दूसरे को सम्मान एवं प्रेम देने की अपेक्षा उन्हें अपमान और तिरस्कार की भाषा अच्छी लगती है। एक-

दूसरे की तकलीफों को दूर करने की अपेक्षा उन्हें तकलीफें उत्पन्न करना आनन्ददायी लगता है।

भाई-भाई का सम्बन्ध प्रगाढ़ होता है तो उस कुल-परिवार की बड़ी प्रतिष्ठा होती है, किन्तु जब उनमें द्वेष घर कर जाता है तो उन्हें एक-दूसरे का सुख नहीं सुहाता। तब एक भाई दूसरे भाई को अपने से अधिक सुखी नहीं देख सकता। इसलिए छोटी-छोटी बातों में उलझकर वह मनमुटाव की ओर अग्रसर हो जाता है। कभी पुत्र अपने पिता से इसलिए नाराज़ हो जाता है कि पिता का व्यवहार उसके प्रति दूसरे भाइयों की अपेक्षा अच्छा नहीं है। आज धन की आकांक्षा सम्बन्धों को गौण करती जा रही है।

हम परिवार के अन्य सदस्यों से तो अच्छे व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं किन्तु स्वयं उनके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं, तो इससे पारस्परिक सम्बन्धों की गाड़ी में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रेम हो, एक-दूसरे के दुःख को दूर करने की भावना हो, समर्पण एवं त्याग हो तो पारस्परिक प्रेम के सम्बन्धों की डोर ऐसी मजबूत हो जाती है कि छोटी-मोटी बातें उस डोर को नहीं काट सकती हैं।

श्रेष्ठ तो यह है कि पारस्परिक कलह की स्थिति उत्पन्न ही न हो, किन्तु उत्पन्न हो जाए तो उसका समाधान पारिवारिक सदस्यों के बीच मिल-बैठकर हो जाना श्रेयस्कर है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा था कि प्रत्येक जिले में एक पारिवारिक न्यायालय अपर्याप्त है। आवश्यकता पारिवारिक न्यायालयों की संख्या बढ़ाने की नहीं, अपितु परिवार में सामंजस्य उत्पन्न करने की है। फ़िल्मी कथाओं एवं विभिन्न धारावाहिकों ने पारिवारिक सदस्यों के बीच गहरी खाई उत्पन्न करने में भूमिका का निर्वाह किया है। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के प्रति सशंक होने, उनकी अच्छी प्रवृत्तियों में भी बुराई ढूंढने के प्रति अधिक सजग हो रहे हैं। यह परिवार के कलह को निरन्तर तूल दे रहा है। अब तो परिवार भी छोटे हो रहे हैं। आगामी पीढ़ियों में पारिवारिक रिश्ते और भी संकीर्ण होने वाले हैं। यदि पारिवारिक विवाद बढ़ते रहे तो मनुष्य एकाकी, अशांत, निराश, हताश होकर विभिन्न रोगों से ग्रस्त होता रहेगा।

भारत में परिवार एक-दूसरे के सुख-दुःख का साथी रहा है। इसलिए किसी भी कीमत पर परिवार का प्रेम सुरक्षित रहे, इसके लिए सजग एवं प्रयत्नशील

होने की आवश्यकता है। परिवार में सांमजस्य एवं प्रेम उत्पन्न करने के कुछ साधारण सूत्र हैं, जिन पर ध्यान दिया जाए एवं आचरण में लाया जाए तो विभिन्न कलहों से एवं उनकी वृद्धि से बचा जा सकता है, यथा-

१. हम किसी को जानबूझ कर दुःख न दें।
२. किसी का अपमान न करें।
३. ईर्ष्या एवं द्वेष से बचें।
४. परस्पर विचारों का सम्प्रेषण बनाए रखें।
५. अपने अधिकार की अपेक्षा कर्त्तव्य-पालन पर अधिक ध्यान दें।
६. यथायोग्य प्रेम दें। प्रेम सब रोगों की औषधि है।
७. दूसरों से ही समायोजन की अपेक्षा करने की बजाय स्वयं भी समायोजन करने के लिए तैयार रहें।
८. एक-दूसरे की मदद के लिए सदैव तत्पर रहें।
९. सामूहिक प्रार्थना एवं पारस्परिक विचार-चर्चा अवश्य करें। इससे मनोमालिन्य दूर होता रहता है।
१०. परिवार का मुखिया समुचित परामर्श के द्वारा पारिवारिक सदस्यों की समस्याओं का निराकरण करे एवं उसे वे सदस्य सहर्ष स्वीकार करें।
११. अनावश्यक रूप से उत्तेजित होकर एवं भ्रान्त धारणा बनाकर कलह को बढ़ावा न दें।

परिवार व्यक्ति के विचारों एवं भावनाओं के प्रशिक्षण का केन्द्र होता है। उन्हें कैसे विकसित एवं संतुलित रखा जाता है, यह परिवार की प्रयोगशाला में ही सीखने को मिलता है। परिवार में स्वाध्याय एवं सामायिक का क्रम चलता हो तो वहाँ वैचारिक विकास एवं भावनाओं का संतुलन सरल हो जाता है। किन्तु जिस परिवार में सदैव संसार की एवं एक-दूसरे को नीचा दिखाने की बातें ही चलती हों तो वहाँ अच्छे विचारों का प्रवेश नहीं हो पाता है और परिवार में कलह की भूमि सिंचित होती रहती है। धन एवं सुख-सुविधाओं के आधिक्य मात्र से परिवार में सुख एवं शान्ति का वास नहीं होता। वहाँ परस्पर प्रेम की सुवास भी आवश्यक होती है। वस्तुतः सद्विचार एवं सद्भावना के साथ जिस परिवार में प्रेम का वातावरण होता है वह परिवार ही सुखी परिवार के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ। निस्संगत्तेणं जीवे एगे, एगग्गचित्ते दिया वा राओ वा असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।।

विवित्त-सयणासणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

विवित्त-सयणासणयाए णं चरित्त-गुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभाव-पडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ।

विणियट्टणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ। तओ पच्छा चाउरंतं संसार-कंतारं वीइवयइ।

-उत्तराध्ययन अ.२९, सूत्र ३०, ३१, ३२

भगवन्! अप्रतिबद्धता से जीव को क्या प्राप्त होता है?

अप्रतिबद्धता से जीव निःसंगता को प्राप्त करता है। निःसंगता से जीव एकाकी (अकेला-आत्मनिष्ठ) और एकाग्रचित्त हो जाता है तथा दिन और रात वह सदैव सर्वत्र अनासक्त एवं अप्रतिबद्ध अर्थात् ममत्वविहीन होकर विचरण करता है।।३०।।

भगवन्! विविक्त शयनासन के सेवन से जीव किस गुण को प्राप्त करता है?

विविक्त शयनासन के सेवन से जीव को चारित्र-गुप्ति (चारित्र रक्षा) उपलब्ध होती है और चारित्र गोपक (रक्षक) जीव शुद्ध, सात्त्विक विकृतिरहित एवं पवित्र आहारी, दृढ़ चारित्री, एकान्त-रत (एकान्तप्रिय) और मोक्षभाव से सम्पन्न होकर आठ प्रकार की कर्म-ग्रन्थियों की निर्जरा कर लेता है।।३१।।

भगवन् विनिवर्तना से जीव किस गुण को प्राप्त करता है?

विनिवर्तना से जीव नये पापकर्मों को न करने के लिए उद्यत रहता है और पूर्वबद्ध पापकर्मों की निर्जरा से पाप कर्मों को क्षय कर उनसे निवृत्ति पा लेता है। तत्पश्चात्, चतुर्गतिक, संसाररूपी अरण्य का अतिक्रमण कर (लांघ) जाता है।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मनुष्य-जन्म में आत्मशुद्धि हेतु धर्मकरणी नहीं की तो थली के उस जाट की तरह पछताना पड़ेगा, जिसने चिड़ी उड़ाने के लिए हीरे फेंक दिए।
- जिस प्रकार अफीम में नशा होता है उसी प्रकार परिग्रह में भी नशा होता है, अतः सद्गृहस्थ परिग्रह को अफीम समझकर इसकी मर्यादा करे।
- सामग्री की अल्पता में भी संतोषी सुखी होता है और विशाल सामग्री में भी कामनाशील दुःखी होता है।
- भय, लज्जा और स्वार्थ से किया गया विनय कल्याणकर नहीं होता।
- तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।
- वेशपूजा एवं नामपूजा के बदले गुणपूजा ही समाज को श्रेय की ओर ले जा सकती है।
- सम्प्रदाय का आवेश भी मानव से कई पाप करा डालता है।
- करोड़ों की सम्पदा मानव-मन में काम-क्रोध-लोभ के ताप को नहीं मिटा सकती।
- हम वीतरागमार्गी तभी हो सकते हैं, जब राग-द्वेष को भुलाकर उपशम भाव की साधना करें।
- ज्ञानपूर्वक पुरुषार्थ करो, दुःखमुक्ति दुष्कर नहीं है।
- दृष्टि भोगप्रधान के बदले हितप्रधान बनायी जावे।
- ममता से नरक और समता से मोक्ष, यही शास्त्रों का सार है।
- ज्ञानादि चतुष्टय आत्महित और समाज रक्षण के प्रमुख उपाय हैं।
- जिस तरह मनुष्य को अपनी ही जूती काट खाती है, उसी तरह अपना ही मन जीव को दण्ड देता है।
- यदि अपने को, अपनी वाणी को, अपनी काया को आत्मा के अभिमुख कर दिया, आत्मभाव में लगा दिया तो वह मन अदंड का कारण बनेगा।

-'नमो पुरिसवरसंघहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

कषाय को घटाएँ, कर्मास्रव को रोके

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज

कर्नाटक की धर्मधरा शोरापुर में २७ जून २००७ को आचार्यप्रवर द्वारा दिए गए उद्‌बोधन का संकलन श्री जगदीश जी जैन ने किया है।-सम्पादक

अनन्तज्ञानी, अनन्तदर्शी, अरिहंत प्रभु महावीर ने अपनी अन्तिमवाणी उत्तराध्ययन सूत्र के ३०वें अध्ययन में जीव को शिव, नर को नारायण और आत्मा को परमात्मा बनने का मार्ग बताया। परमार्थतः यह जीव अनन्त ज्ञानी है, अनन्तदर्शी है, किन्तु इस पर ज्ञानावरणादि कर्मों का आवरण आया हुआ है। उत्तराध्ययन के ३० वें अध्ययन में कहा गया-

जहा महातलायस्स सण्णिरुद्धे जलागमे।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥५॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा णिज्जरिज्जइ ॥६॥

तीर्थंकर भगवान् ने कर्म-मुक्ति हेतु संवर एवं निर्जरा ये दो कार्य बताये। उदाहरण के लिए एक तालाब पानी से भरा है। उसे खाली करना चाहें तो दो कार्य करने होंगे। पहला- संचित पानी को बाहर निकालना होगा या उसे सुखाना होगा। दूसरा- नया पानी आने का मार्ग बन्द करना होगा। इसी तरह आत्मा रूपी तालाब में कर्म रूपी पानी भरा है। इस कर्म रूपी पानी को बाहर निकालने या सुखाने के लिये आप तपस्या कर रहे हैं, लेकिन कर्म आने का रास्ता बन्द नहीं कर रहे हैं तो इससे कर्मों से मुक्ति होने वाली नहीं है।

तप कर्मों को काटने वाला, खपाने वाला है, इसके द्वारा करोड़ों भवों के संचित कर्म खपाये जा सकते हैं। जिससे जितना बनता है, तप कर रहा है। कोई ध्यान करता है तो कोई स्मरण कर रहा है, कोई आतापना लेकर तप कर रहा है। कहते हैं -सयंमी का तप सार्थक होता है। तालाब में जो पानी की सीर है, आने का

स्रोत है, उसको यदि बन्द नहीं करेंगे तो तालाब खाली होने वाला नहीं है। अतः कर्मों के आने के कारणों को भी समाप्त करना है।

कर्म-निरोध संयम से ही संभव है। जब तक संयम नहीं अपनायेंगे सिद्धि मिलने वाली नहीं है। कर्म आने का प्रमुख कारण है- कषाय। ट्यूमर, केंसर जैसे रोग शरीर की कोशिका में विकृति आने से होते हैं। कुछ रोग संक्रमण जन्य होते हैं - दमा, कुष्ठ आदि; कुछ जल जन्य रोग होते हैं- बाले निकलना आदि; कुछ प्लेग जैसे रोग महामारी के रूप में होते हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) के कनार्टक प्रदेश पदार्पण के समय संवत् १९९७ में यहाँ शोरापुर में महामारी थी।

संसार में एक रोग ऐसा है जो तीनों लोकों में फैला हुआ है, वह है- कषाय का रोग। इस रोग से न नारकी बचे हैं, न तिर्यंच, न मनुष्य और न देवता। चारों गतियों के प्राणी इससे ग्रस्त हैं। यह रोग नरकगति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति सभी के साथ है। आपने आज तक जितनी भी अच्छाइयाँ की, उन्हें क्रोध खा गया। यह व्यक्ति को पाताल में पहुँचा देता है। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री फरमाया करते - सांप के पास मणि है, मणि में अनेक गुण हैं। गुण होते हुए भी सांप की मणि को कौन लेने की हिम्मत करता है? पिताजी जब प्रेम करें, तो सब पास जाते हैं, जब उन्हीं पिताजी को गुस्सा आ जाय तो.... पास जाना तो दूर कोई बात तक नहीं करता, धारा १४४ लग जाती है। उनके आते ही सब अपने-अपने काम में लग जाते हैं; सब गाय बन जाते हैं। पिताजी परिवार की सार संभाल करते हैं, सुख सुविधा देते हैं, पर क्रोध के कारण उनके आते ही चुप्पी। सब अच्छी आदतें हैं, एक बुरी आदत ही पाताल में धकेल सकती है।

जब तक जीवन में संयम नहीं आयेगा तब तक कषाय जरूर रहेगा। अन्य अच्छाइयाँ होने पर भी यदि कषाय की अधिकता है तो व्यक्ति सबका प्रियभाजन नहीं हो सकता। मैं आपको तप के मूल में ले जा रहा हूँ। सभी धर्मों ने तप के महत्त्व को स्वीकार किया है। वैष्णव, बौद्ध, मुस्लिम, सिक्ख सभी तप की आराधना यथाशक्ति करते हैं। आपको भी यदि कर्मों को काटना है तो - माला, सामायिक, नवकारसी, पौरसी, एकासन, उपवास, आयम्बिल, दया में से जो कर सकते हैं,

करें- पर एक बात अवश्य करें - अपने को काबू में रखें। तप में, जीवन में, व्यवहार में जब तक संयम नहीं आयेगा, तप बदनाम हो जायेगा। राम नाम का दुपट्टा ओढ़ने मात्र से कोई राम का भक्त नहीं बन सकता। जिसने राम के किसी गुण को ग्रहण किया है, वह ही रामभक्त कहला सकता है। साधक हर परिस्थिति में समता को नहीं छोड़ता।

जवानी दीवानी होती है, भान भुला देने वाली होती है। यौवनावस्था हो और धन-दौलत आ जाय तो हम चौड़े, गली संकड़ी लगती है। कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। सोना तिजोरी में रखा है, बैंक के लॉकर में हैं, पर नशा यहाँ बैठे-बैठे आ रहा है। यौवन एवं सम्पत्ति के साथ यदि प्रभुत्व, अधिकार, पद आदि मिल जाये तो.... सरपंच, एम.एल.ए., सांसद, मंत्री बन जाये तो व्यक्ति उछल-कूद करने लग जाता है। मैं आपको कर्म आने के कारण बता रहा हूँ। आने के रास्तों को बंद करना है।

अविवेकी जो होते हैं, नारद बनकर लड़ाना चाहते हैं। किन्तु ऐसी प्रवृत्ति समाज, गांव, देश की बरबादी का कारण है। आज घर में चार भाई मिलकर नहीं रह सकते, अविवेक का पसारा है। भाई! कर्म की आवक बन्द नहीं हुई तो कर्म का कीचड़ कैसे खाली होगा? अतः हर स्थिति में संयम की बात का खयाल रखना है। कितनी सुन्दर सीख दे रहा है यह भजन-

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना।।
यदि सत्य मधुर न बोल सको तो झूठ कभी भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो।।
बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना।।
यदि घर न किसी का बांध सको तो, झोपड़िया न जला देना।
यदि मरहम्मपट्टी कर न सको तो, खार नमक न लगा देना।।
यदि दीपक बनकर जल न सको तो, अंधकार भी मत करना।।
यदि फूल नहीं बन सकते हो तो, काँटे बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुःखाना ना।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना।।

भजन की कड़ियों का सार है- किसी का बुरा मत करो, किसी को बुरा मत

कहो, किसी का बुरा मत सोचो। यही सबसे बड़ा तप है। कई भाई कहते हैं- घर संसार में बैठे हैं, इसलिये बोलना पड़ता है। भाई! बोलना मना नहीं है, लेकिन जो भी बोलो-बोलने से पहले तोलो। सत्य बोलो, सत्य को भी मधुर शब्दों में कहो। सामने वाला आज नहीं तो कल अवश्य प्रभावित होगा। यदि कोई नादानी के कारण नासमझी के कारण बोल गया तो आप अनुभवी हैं, वृद्ध हैं, समझदार हैं, आपने गम खाना सीखा है। आप संतोष रखें, किसी को गलत साबित करने के लिये आवेश की आवश्यकता नहीं है। सामने वाले पर भूत सवार है तो उसको कहे गए प्रियवचन भी अप्रिय साबित होंगे। अतः गम खाना ठीक है, शान्त रहना श्रेयस्कर है। तप करने वाले हर भाई-बहिन से, कर्म काटने वाले हर श्रद्धावान से कह रहा हूँ- भाई! कर्म काटने के साथ नये कर्मों को बाँधने का मार्ग भी रोकना है। निर्जरा के साथ संवर की आराधना आवश्यक है। अतः कर्म आने का रास्ता जो पाप का है, उसे बन्द करना है। हिंसा, झूठ, द्वेष जितना घटा सको उतना घटाओ। कर्मों को हलका करने के रास्ते पर चलिये। इस रास्ते से चलोगे तो कीचड़ नहीं लगेगा।

मासखमण तप करने वाले संयमी गुस्सा करने पर चण्डकौशिक बन गये। बडेरों की बात कहूँ तो तीन बातों का ध्यान रखो- कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ। किन्तु जानते हुए भी इसका अनुसरण कितने भाई-बहिन कर रहे हैं?

क्रोध और अहंकार ही लड़ाई का कारण है, अतः समताभाव स्थानक में तो रखते ही हैं- घर व दुकान पर भी रखें। ग्वाला महावीर के कानों में कीलें ठोक रहा है, महावीर का चिन्तन चल रहा है- मेरे कर्म के कारण ही यह सब हो रहा है- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्।' आशा है आप भी इसी तरह अहंकार, क्रोध को तजकर मंदिर स्थानक में बैठकर, भजन-स्मरण, सामायिक-तप की आराधना कर, कषाय का शमन कर, धर्म की शोभा बढ़ाते हुए, जीवन को दीप्तिमान बनायेंगे।

'तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं' तपों में श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य बताया है। आज दो भाई सदार सहित आजीवन शीलव्रत के खंध लेकर षट्काय जीवों में पंचेन्द्रिय जीवों को यावज्जीवन अभयदान दे रहे हैं। संघ यद्यपि छोटा है, लेकिन शेषकाल विराजने का प्रसंग मिला। हर दिन अच्छी धर्मप्रभावना रही। हमारे जाने के बाद भी धर्माराधना का ऐसा स्वरूप गतिमान रहे, इन्हीं भावों के साथ.....

प्रवचन

भावे दीजो दान

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

दानादि क्रिया के समय किस प्रकार के भाव हैं, इसका फल-प्राप्ति पर पूरा प्रभाव पड़ता है। देते समय द्रव्य शुद्धि भी आवश्यक है एवं भावशुद्धि भी आवश्यक है। उपाध्यायप्रवर द्वारा २४ सितम्बर २००१ को धुले (महाराष्ट्र) में फरमाये गए इस प्रवचन का आशुलेखन सह सम्पादक श्री नौरतन मेहता ने किया है।-**सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप मुक्ति के मार्ग बताये गये हैं। दान, शील, तप और भावना को भी मुक्ति का मार्ग कहा है। कई पुण्यशाली जीव ऐसे हैं जो दान देकर संसार को परीत कर गये। कइयों ने शील धर्म का पालन कर संसार घटा दिया। कोई तपश्चर्या करके मुक्ति के मार्ग में अग्रसर हो गये तो कुछ भावना भाते-भाते तिर गये। दान, शील,तप और भावना (भाव) के क्रम में भावना चौथे स्थान पर है, परन्तु भावना सबके साथ जुड़ी होती है। दान के साथ भावना न हो तो वह दान 'दान' नहीं। शील के साथ भावना जुड़ी हुई नहीं, तो वह शील नहीं, तप के साथ भी भावना नहीं हो तो तप निरर्थक है। भावना में तो भाव रहा हुआ ही है।

कोई व्यक्ति दान दे और भावना त्याग की नहीं हो तो दान सुगति का कारण नहीं बन पाता है। आपने सुन रखा है नौका नदी पार कराने का काम करती है और वही नौका उलट जाय तो जीवन संहारक बन जाती है। जो नौका मुक्ति तक पहुँचाने वाली है, वही दुर्भावना के कारण संसार परिभ्रमण का निमित्त बन जाती है।

भावना का बड़ा महत्त्व है। जिस तरह शरीर में आत्मा का महत्त्व है उसी प्रकार धर्म में भावना का महत्त्व है। जब तक आत्मा है तब तक ही शरीर सुडौल है, रूपवान और कांतिवान है, लम्बा-चौड़ा है, किन्तु आत्मा नहीं तो शरीर की कोई कीमत नहीं। इसी प्रकार धर्म के साथ भावना है तो धर्म की कीमत है। भाव नहीं तो दान 'दान' नहीं, शील 'शील' नहीं, तप 'तप' नहीं। भावना के बिना फल की प्राप्ति

नहीं होती। इस सम्बन्ध में कल्याण मंदिर में एक श्लोक है, जिसका भाव है- "हे भगवन्! मैंने आपके उन अमृतमय वचनों का श्रवण किया। आपकी उपासना-आराधना की, समय-समय पर आपके दर्शन भी किए, किन्तु भक्तिपूर्वक उसे धारण नहीं किया। यही कारण है कि मैं संसार में दुःख का पात्र बना हुआ हूँ।

भावशून्य क्रिया कभी फलवती नहीं होती। क्रिया करते हुए भी उपासना करते हुए भी, दर्शन करते हुए भी भावों में शून्यता है तो उसका कोई फल नहीं। कहा भी है -

भाव बिना भक्ति करे, आशा राखे मोटी।
दया बिना देहरा जावे, घर सूं होवे खोटी।

कोई भक्ति करे और भाव नहीं, तो फिर उसे बड़ी आशा लेकर नहीं चलना चाहिये। मन में दया नहीं और देरासर नित्यप्रति जाये तो उससे क्या लाभ? गुजरात में मन्दिर को देरासर कहते हैं और मन्दिरमार्गी को देरावासी। गुजरात में कोई किसी को मंदिरमार्गी कह दे तो समझते हैं, यह वैष्णव है। गुजरात में स्थानकवासी और देरावासी शब्द प्रचलित हैं।

सुखविपाकसूत्र का प्रकरण चल रहा है। सुमुख गाथापति को मासखमण के तपस्वी महामुनि का संयोग मिल रहा है। वह तीन बार हर्षित होता है। दान देने के पहले, दान देते समय और दान देने के बाद भी। महामुनिराज को देखकर सुमुख गाथापति हर्षित होता है कि आज मुझे अपने हाथ से देने का सौभाग्य प्राप्त होगा। महामुनिराज मेरे घर पधारे हैं। सामान्य सन्त-सती भी घर पधारते हैं तो भी प्रमोद की भावना पैदा होती है। वे तो मासखमण का पारणा करने के निमित्त गोचरी-पानी हेतु पधारे थे, तो सुमुख गाथापति का हर्षित होना स्वाभाविक था। वह मुनिराज को देखकर हर्षित हुआ तो आहार देते समय भी उसके मन में उल्लास था, उत्कृष्ट भावना थी।

भावना का महत्त्व है। सुमुख गाथापति ने भी दान दिया और नागश्री ने भी, किन्तु दोनों के दान में अन्तर है। नागश्री ने जो दान दिया उसमें द्रव्य अशुद्ध था, उससे अधिक उसकी भावना अशुद्ध थी। हलाहल कड़वे तुम्बे का दान। मुनिराज के पधारते ही विचार करने लगी कि मुझे बाहर जाने की जरूरत नहीं, मेरे तो घर उखरड़ी आ गई है। धर्मरुचि अणगार जो मासखमण से पारणा करते थे, नाग श्री ने उनके मना

करने पर भी सारा कड़वा आहार बहरा दिया। मुनिराज ने देखा – पर्याप्त आहार आ गया है, मुझे अब दूसरे घरों में जाने की आवश्यकता नहीं। नागश्री द्वारा बहराया आहार लेकर धर्मरुचि अणगार गुरु महाराज के पास गए। कहा– गुरुदेव ! यह आहार मिला है। गुरु महाराज ने चखकर देखा – यह हलाहल विष है। इसका उपयोग करोगे तो अनायास मृत्यु हो सकती है। इसे निरवद्य स्थान पर परठ कर आओ।

धर्मरुचि अणगार परठने के लिए गये। निर्वद्य स्थान देखा और वहाँ एक बूँद डाली तो गंध से सैकड़ों चींटियाँ आ गईं। मुनिराज ने विचार किया, इसे जहाँ भी परठूँगा सैकड़ों प्राणियों का प्राणघात हो जायेगा। संत जमीन खोदकर परठ नहीं सकते। संत जमीन न खोदते हैं, न खुदवाते हैं न खोदने वाले को भला जानते हैं। विचार करने लगे – प्रासुक स्थान पर परठने का गुरु ने कहा तो मेरे पेट से अधिक प्रासुक स्थान और कहाँ हो सकता है? तपस्वी महामुनि ने कड़वे तूम्बे को उदरस्थ कर लिया। जहर ने अपना प्रभाव दिखाया, शरीर नीला हो गया और वेदना के साथ प्राण पखेरू उड़ गये।

मुनिराज देर तक नहीं लौटे, तब गुरु ने शिष्य को कहा– जाओ, तपस्वी धर्मरुचि अणगार अब तक क्यों नहीं आए हैं, पता करो। संत ने जाकर देखा, धर्मरुचि अणगार मृत पड़े थे। वापस आकर गुरु से सारी बात कही। गुरु महाराज ने उपयोग लगाकर जाना कि जहर बहराने वाली नाग श्री थी। गुरु के मुँह से सहसा नाम निकल गया। कभी–कभी साधक का मोहवश उपयोग नहीं रहता। नगर में नागश्री का नाम फैल गया।

नागश्री के दान से मुनि की असमय मृत्यु की बात पर ब्राह्मणों ने विचार किया और नागश्री को घर से बाहर निकाल दिया। नागश्री के शरीर में सोलह रोग उत्पन्न हुए और वह मरकर नरक में गई। तूम्बा कड़वा था, अखाद्य था। द्रव्य अशुद्ध और भावना भी अशुद्ध होने के कारण से कर्मों का इतना गाढ़ बँध हुआ कि उसे नरकगति में जाना पड़ा।

एक तरफ नागश्री का उदाहरण है तो दूसरी तरफ चंदनबाला का। चंदनबाला ने उड़द के बाकले बहराये। भावना शुद्ध थी, इसलिए उड़द के बाकले बहराने से शुभ कर्मो का संचय किया और दीक्षित होकर उसी भव में मोक्ष प्राप्त

किया। चंदनबाला की मुक्ति हुई तो नागश्री की दुर्गति। नरक का आयुष्य पूर्ण होने पर वह एक सेठ के घर सुकुमालिका के रूप में पैदा हुई। शादी हो गई। पति हाथ लगाता तो उसे एकदम करण्ट सा लगता।

सेठ ने कहा-"बेटी, तू तो ऐसा काम कर जिससे तेरे कर्म हल्के हो सकें। धन की मेरे पास कोई कमी नहीं है, इसलिए प्रतिदिन दान देने का लाभ प्राप्त कर।"

उस नगर में सुव्रता नाम की आर्या जी पधारीं। वह धर्म श्रवण के लिए तत्पर हो गई। जिनवाणी श्रवण करते-करते उसे वैराग्य हुआ और उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। दीक्षित होकर सती जी ने गुरुणी जी से आतापना लेने की आज्ञा माँगी। सतियों ने कहा- "बाहर जाकर आतापना लेना हमारे लिए निषिद्ध है, इस उपाश्रय की चारदीवारी में लेना चाहो तो ले सकती हो।" एक दिन वह साध्वी बगीचे में चली गई। वहाँ पर एक वेश्या के साथ पाँच पुरुषों को देखा। कोई पंखा झल रहा था, तो कोई झारी लेकर खड़ा था। वह विचार करने लगी, मेरी करणी का फल हो तो मुझे भी अगले भव में पाँच पति मिलें। मरण प्राप्त कर वह द्रौपदी के रूप में उत्पन्न हुई।

भावों की कितनी महती भूमिका है, आप समझ गए होंगे। सुमुख गाथापति शुभ भावना के कारण देते हुए हर्षित हो रहा है कि मुझे महामुनिराज को दान देने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। वह दान देने के पूर्व भावना भाता है, किसी मुनिराज के आने की प्रतीक्षा करता है। दान देने के पहले, दान देते हुए और दान देने के पश्चात् उसको प्रसन्नता होती है। हर्ष और उल्लास रहता है कि आज का दिन मेरे लिए धन्य है।

दान दस प्रकार के बताये गये हैं। उनमें दो दान मुख्य हैं। एक सुपात्र दान और दूसरा अभयदान। साधु-मुनिराजों को शुद्ध आहार-पानी देना सुपात्र दान है तो किसी मरते हुए जीव की रक्षा करना अभय दान। भावना की शुद्धि से दान फलदायी बनता है। उत्कृष्ट रसायन आने पर तीर्थंकर गोत्र बन्ध का कारण भी बन सकता है। इससे बढ़कर पुण्य प्रकृति नहीं।

सुमुख गाथापति ने दान देकर संसार सीमित कर लिया और उसका जीव निकट भविष्य में मुक्ति का अधिकारी होगा। आप शुद्ध दान का महत्त्व सुनकर ही न रहें, इसे जीवन में अपनायें तो आप भी अपना कल्याण कर सकेंगे।

★

प्रवचन

क्रोध का क्षण टालें जरा

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

बीजापुर में भगवान् महावीर के निर्वाण-दिवस के पूर्व ६ नवम्बर २००७ को महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

विनय से लेकर समाधि मरण तक का विवेचन करने वाले उत्तराध्ययन सूत्र के उनतीसवें अध्ययन में पृच्छा की गई- कोह-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

भगवन्! क्रोध-विजय से जीव को क्या प्राप्त होता है? प्रश्न का उत्तर दिया गया- कोह-विजएणं खंतिं जणयइ। कोहवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

क्रोध पर विजय पाने से जीव क्षमाभाव को प्राप्त करता है, वह क्रोध वेदनीय कर्म का बंध नहीं करता और पहले बंधे हुए कर्म की निर्जरा करता है।

क्रोध पर विजय से क्षमागुण प्रकट होता है, जिससे स्वयं को शांति मिलती है तथा दूसरों को शांति होती है। क्रोध-विजय से इहलोक-परलोक दोनों सुधरते हैं। क्रोध है तो अशांति है, क्रोध नहीं तो शांति ही शांति। आप बोलते हैं-भीतर शांति, बाहिर शांति, तुझमें शांति मुझमें शांति। स्वयं में शांति, सामने वाले में शांति। घर में शांति, राष्ट्र में शांति। क्रोध-विजय से दोनों को लाभ है।

क्रोध से खुद का जीवन बर्बाद होता है तथा दूसरे पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। आपने अनुभव किया होगा- दूध में चुल्लुभर जावण डाल दें तो वह जावण दूध को जमा देता है। कभी किसी को बुखार आ जाय तो उसे घासा दिया जाता है। पेट में घासा जाते ही बीमारी बाहर निकलनी शुरु होती है। क्रोध ऐसा अवगुण है जो पुण्य का अंत करता है। आँखें होते हुए भी मानव अंधा हो जाता है, कान होते हुए भी बहरा हो जाता है।

एक क्षण का क्रोध जीवन बर्बाद कर सकता है। क्रोध आने पर सबसे पहले व्यक्ति स्वयं अशान्त बनता है और फिर दूसरे को अशान्त बनाता है। अशान्त

चेहरे पर कभी-कभी आँखे लाल, होठों पर फड़फड़ाहट, भृकुटि तनी हुई दृष्टिगोचर होती है। क्रोध से जीवन भर पश्चात्ताप रहता है।

एक बार कहीं पढ़ने को मिला। एक गरीब महिला अपने आठ साल के बच्चे को फुटपाथ पर लेकर चल रही थी। बच्चा, बच्चा ही होता है। उसे कहीं खिलौने, कहीं गुब्बारे और कहीं खाने-पीने की चीजें दिखीं। बच्चा माँ से कहता है मुझे वह गुब्बारा चाहिये। माँ कहती है- बेटा! चणे खाने के लिए तो हमारे पास पैसे नहीं है, तुझे गुब्बारा याद आ रहा है। ये मनोरंजन के साधन तो पैसे वालों के हैं।

जिसका पेट नहीं भरता वह अक्सर फिजूल खर्ची भी नहीं करता। फिजूल खर्ची वहीं करता है जिसके पास जरूरत से ज्यादा पैसा हो। पैसे वाले ऐसे-ऐसे रिवाज बनाते हैं जिससे वे खुद तो डूबते ही हैं, दूसरों को भी डूबाते हैं।

माँ के पास पैसे नहीं थे, इसलिए बच्चे से बोली- चल, आगे चल। बालक ने हठ पकड़ ली "मुझे गुब्बारा लेना है।" वह अपनी हठ छोड़ने को तैयार नहीं। समझाने पर भी बालक नहीं माना। गुब्बारे की रट लगाये रहा। माँ को क्रोध आ गया। माँ ने क्रोध के वशीभूत बच्चे को धक्के से चांटा मारा। बच्चा सड़क पर गिर गया। इधर बच्चे का सड़क पर गिरना हुआ, उधर से तेज रफ्तार से गाड़ी आ रही थी। बच्चा दुर्घटना में कुचल गया। अब माँ की क्या हालत हुई होगी, इसका आप अनुमान कर सकते हैं। उसके पास पश्चात्ताप के सिवाय कुछ नहीं था।

क्रोध करना ठीक नहीं है। क्रोध आए तो क्षमाभाव धारण करें। कल एक उपाय बताया था- क्रोध आए तो मौन कर लें। क्रोध आने पर कहें हमारे यहाँ क्रोध के लिए जगह नहीं है। 'नो वेकेन्सी' का बोर्ड लगा दें। क्रोध आने पर 'प्रवेश-निषेध' का बोर्ड लग जाना चाहिये। जब भी क्रोध आए, आप रुक जायें। क्रोध अशुभ है जैसे दक्षिण में राहुकाल की बेला में जाना अशुभ माना जाता है ऐसे ही क्रोध आ रहा हो तो उसे अशुभ मानकर टालना चाहिये। क्रोध अशुभ है, हानिकारक है। क्रोध नरक-निगोद में ले जाने वाला है, इसलिए कहा जा रहा है क्रोध आए वहाँ विलम्ब करें और नमस्कार मंत्र गिनना शुरु कर दें।

जब भी क्रोध आए तो जल्दी मत करो, रुक जाओ। पाँच स्थान हैं जहाँ पर काल का विक्षेप करना चाहिए - १. क्रोध का आवेश आने पर २. नदी में बहाव बढ़ने पर ३. पाप प्रवृत्ति में ४. अजीर्ण होने पर ५. भय स्थान पर।

क्रोध आने पर शांति धारण कर लें। जप-तप सरल है, किन्तु क्रोध के आवेग को रोकना सरल नहीं कठिन है। जब भी क्रोध आए, रुक जाओ। जहाँ क्रोध आया उस स्थान का त्याग कर दो। इसी तरह नदी का पूर आ जाए तो जहाँ हैं वहाँ ठहर जाओ। नदी का बहाव कम हो जाने पर आगे बढ़ना चाहिये, पूर है तब तक नदी में नहीं उतरना चाहिये। तीसरा- पाप का काम करना हो तो रुक जायें। हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म-सेवन करने जा रहे हों तो रुक जाओ। पाप का जहाँ भी काम हो रुक जाने पर वह पाप छूट सकता है। चौथी बात है जब भी अजीर्ण हो, उपवास कर लो, भोजन करना रोक दो। पाँचवा बिन्दु कहा- जहाँ जाने से भय होता है वहाँ प्रवेश नहीं करना चाहिए।

क्रोध को जीतना हो तो क्षमाभाव से जीतें, मौन करें, स्थान का त्याग कर दें। आप क्रोध को त्याज्य समझें। क्रोध आ जाने पर क्षमाभाव धारण करें। भगवान् महावीर का निर्वाण दिवस आ रहा है आप इन तीन दिनों में गुस्सा नहीं करें। आपकी भावना हो तो क्रोध का सामूहिक त्याग करें। क्रोध-त्याग से शांति एवं समाधि प्राप्त हो सकेगी।

मानव की केंकड़ा वृत्ति

श्री त्रिलोकचन्द जैन

समुद्र के किनारे एक व्यक्ति केकड़ों को पकड़कर एक खुले बर्तन में डाल रहा था। एक राहगीर ने यह उपक्रम देखा और कहा-" इस बर्तन को खुला क्यों छोड़ रखा है? क्या समय के साथ में केंकड़े बाहर नहीं निकल जायेंगे ?" बर्तन के मालिक ने मुस्कुराते हुए कहा- "तुम्हारी यह चिंता उचित है। लेकिन तुम इनकी प्रकृति से परिचित नहीं हो। जब भी कोई केकड़ा इस बर्तन से बाहर निकलने की कोशिश करता है, अन्य केंकड़ा उसकी टांग पकड़कर अन्दर खींच लेता है। यह इन केंकड़ों की सहज वृत्ति है। इसलिए तुम निश्चिंत रहो। जब तक इस बर्तन में दो भी केंकड़े रहेंगे तब तक उन दोनों में से भी कोई केंकड़ा बाहर नहीं आ सकता है,क्योंकि वे एक-दूसरे की टांग खीचनें वाले होते हैं।"

वर्तमान में मानव समाज की भी लगभग ऐसी ही स्थिति है। अधिकांश सांसारिक मानव भोग-वासना में आकंठ डूबे हुए हैं, रचे पचे हुए हैं। इस स्थिति में कोई विरल पुरुष इस संसार के माया जाल से मुक्त होकर साधना करने की बात सोचता है तो लोगों को यह अच्छा नहीं लगता और वे केंकड़ा वृत्ति के समान उसकी टांग खींचते हैं। आखिर कब तक हम केंकड़ा वृत्ति से भारी कर्मा बनकर भटकते रहेंगे, यह विचारणीय प्रश्न है।

- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

शोधालेख

श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री

'समण' (श्रमण) शब्द में सम के तीन अभिप्राय हैं - श्रम, सम, शम। अपने व्यापक स्वरूप में इन समग्र-तात्पर्यों का अन्तर्भाव हमें श्रमण के अन्तरंग एवं बहिरंग व्यक्तित्व में प्राप्त होता है। जो मोक्ष की प्राप्ति के लिये श्रम करता है, पुरुषार्थ करता है - वह श्रमण है। 'सम' शब्द का अर्थ समता लिया जाता है। इस आधार पर श्रमण वह है जो शत्रु और मित्र को समान भाव से देखता है। श्रमण विराट्-विश्व की समस्त आत्माओं को अपनी आत्मा के समान समझता है और उन के साथ आत्मवत् व्यवहार करता है। इतना ही नहीं, वह लाभ एवं हानि में, जीवन एवं मरण में, निन्दा एवं स्तुति में, मान एवं अपमान में सर्वदा समभाव रखता है। वह अपने कषायों का शमन भी करता है इसलिए भी वह श्रमण है। वह भिक्षा देने वालों से भी और नहीं देने वालों से भी प्रमुदित रहता है। श्रमण सर्वजन हितैषी, आत्म-कल्याण में समग्र-रूपेण लीन, समभाव से सर्वथा सम्पन्न तथा उच्चतम मानवीय आदर्शों का साकार रूप होता है। उत्कृष्ट त्याग और कष्ट सहिष्णुता अपने चरम रूप में श्रमण-व्यक्तित्व में विद्यमान है और जन-जन को सन्मार्गी होने के लिये वह अपने समुत्कृष्ट आचरण का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता हुआ प्रेरित करता है।

कोई जन्मजात श्रमण नहीं हो सकता। यह तो मानव की अपनी साधना के विकास की स्थिति है, जो क्रमशः श्रमणत्व का रूप ग्रहण कर लेती है। श्रमण एक पद विशेष है, एक अवस्था विशेष है, जिसे व्यक्ति प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करता है। इस उपलब्धि के योग्य जो पात्रता है, उसको भी वह अपने आचरण और उद्यम से अर्जित करता है। ऐसा नहीं है कि यह पूर्व निर्धारित हो कि कोई स्वतः ही श्रमण हो जाएगा और कोई लाख प्रयत्नों पर भी इस विशिष्ट-गौरव को कभी प्राप्त नहीं कर सकेगा। वास्तविकता यह है कि श्रमण माता के गर्भ से नहीं, अपितु गुरु के सान्निध्य में, गुरु के आश्रय में होता है। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि योग्य पात्र श्रमणत्व से विभूषित होता है। श्रमण के रूप में साधक एक नवीन प्रकार का जीवन धारण करता है। आत्म-साधना को अपना कर श्रमण आत्मिक-विकास की दिशा में निरन्तर अग्रसर होता रहता है। वह स्व और पर दोनों के कल्याण में जिस निष्ठा के साथ

निरत रहता है, इससे उसकी हितैषिता और लोक-कल्याण की निर्मल भावना उजागर होती है। वह जन्म के साथ यह कल्याण कारिणी प्रवृत्ति लेकर नहीं आता है, उसकी प्राप्ति वह गुरु चरणों में करता है और उसका विकास भी करता रहता है।

स्वेच्छा से अर्थात् स्व रुचि से व्यक्ति श्रमणत्व धारण करता है। इसके पीछे किस प्रयोजन की सिद्धि का उत्साह रहता है? यह सत्य-तथ्य है कि प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे कोई लक्ष्य, उद्देश्य, प्रयोजन अवश्य ही रहता है। श्रमणत्व भी अकारण अथवा निष्प्रयोजन नहीं होता अपितु इसका संलक्ष्य तो मानव-जीवन का चरम एवं परम लक्ष्य होता है। यह लक्ष्य 'मोक्ष प्राप्ति' है। धर्म साधन-स्वरूप है तथा मोक्ष इसका साध्य है। मोक्ष-प्राप्ति-निमित्त श्रमणत्व को धारण किया जाता है। संसार अनन्त-असीम दुःख-सदृम है। सर्वत्र दुःख का साम्राज्य है। आत्मा को दुःखों से सर्वथा रूप से मुक्त कर अनन्त एवं यथार्थ सुख की प्राप्ति करना श्रमणत्व का ध्येय है। श्रमणत्व का उद्देश्य जागतिक न होकर आत्मिक होता है। आत्मा ही उसके लिये ध्यातव्य रह जाती है।

यह संसार दुःखों का एक अगाध-अपार महासागर है। इसमें जीवन एक नौका के समान है। जीवन रूपी नौका उस पार पहुँचना चाहती है, किन्तु इसमें आस्रव रूपी छिद्र हैं और उनमें से होकर कर्म रूपी जल नौका के भीतर प्रविष्ट हो रहा है। परिणामतः नौका के भव पार पहुँचने के स्थान पर जल-निमग्न हो जाने की ही अधिक आशंका है। ऐसी स्थिति में विवेकशील साधक संयम के लेप द्वारा छिद्रों को अवरुद्ध कर कर्मजल को नियन्त्रित कर लेता है। उसकी आत्मा उस पार अर्थात् मोक्ष प्राप्त कर लेती है। यही श्रमण का संलक्ष्य है। शरीर के साथ नौका का रूपक एक अन्य प्रकार से भी स्थिर किया जाता है - शरीर नौका है, आत्मा नाविक है, संसार एक महासरोवर है, जिसे महर्षिगण अपने श्रमणत्व की साधना से पार कर मुक्ति पा लेते हैं। श्रमणत्व का संलक्ष्य पवित्रतम और उच्चतम होता है। श्रमण दुःख मुक्त होने का अर्थात् मोक्षलाभ का उद्देश्य रखता है और इसी उद्देश्य से अपेक्षित साधना पथ का प्रशस्त-पथिक बना रहता है। श्रमणत्व उसे मानव-जीवन के इष्ट से युक्त कर देता है। मोक्ष ही तो जीवन, विशेषतः मानव-जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

श्रमणत्व के योग्य-निस्सन्देह सब कोई नहीं हो सकता है, उसके पास एक सुनिश्चित-आत्मिक-योग्यता का होना नितान्त अपेक्षित है। प्रत्येक मानव के

लिये श्रमणत्व की पात्रता स्वयं सिद्ध होती है। अन्य कोई बाह्य तत्त्व ऐसा नहीं है कि जिसका होना अथवा नहीं होना श्रमणत्व की पात्रता का निर्धारण करता है। न तो यह आवश्यक है कि वंश-परम्परा से वह जैन हो, न ही यह आवश्यक है कि वह उच्चवंशीय हो। श्रमण बनने के मार्ग में जाति-पांति का कोई व्यवधान नहीं है। कर्म से ही कोई ब्राह्मण होता है और कर्म से ही कोई क्षत्रिय होता है। वैश्य और शूद्र भी जन्म से नहीं, कर्म से होते है। ऊँची जाति में जन्म लेने मात्र से कोई उच्चता को प्राप्त नहीं कर सकता। उच्चता का आधार मानव के सद्गुणों को ही माना जाता है। किसी भी जाति या कुल का कोई व्यक्ति क्यों न हो, इस कारण उसके श्रमण-दीक्षा ग्रहण करने में कोई बाधा नहीं बनती है। हाँ, उसके लिये अनुकूल मानसिक स्तर तो नितान्त अपेक्षित रहता है। श्रमणत्व अभिलाषी के लिये यह अति आवश्यक है कि वह सम्यक् ज्ञान और सम्यग्दर्शन से सम्पन्न हो। जीव और अजीव के यथार्थ-स्वरूप का स्पष्टतः ज्ञान न रखने वाला संयम का अधिकारी नहीं माना जा सकता है। जीव-दया और अहिंसा का वही भली भाँति पालन कर सकता है, जो जीव और अजीव के सम्यक् स्वरूप को सूक्ष्मता के साथ हृदयंगम कर चुका हो। ज्ञानाभाव में संयम और विरक्ति संभव नहीं है। ये दोनों तत्त्व श्रमणत्व के मूलाधार हैं।

श्रमणत्व की आधारभूत योग्यता सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन है और उसकी चरम उपलब्धि सिद्धत्व है। स्पष्ट है कि जो जीव और अजीव का ज्ञाता है, वह जीवों की रक्षा एवं दया रूप संयम का ज्ञाता है। जो संयम को जानता है, वह जीवों की बहुविध दुर्गति और सद्गति को जानता है। जो जीवों की गति का ज्ञाता है, वह पुण्य व पाप के स्वरूप को जान पाता है। क्योंकि पाप से जीव की दुर्गति और पुण्य से सद्गति होती है। जो पुण्य और पाप के वास्तविक-स्वरूप को जान लेगा वह बन्ध और मोक्ष के यथार्थ स्वरूप को समझेगा। बन्ध-मोक्ष समझने पर देव-मनुष्य सम्बन्धी भोगों से निर्वेद अर्थात् अनासक्ति या वैराग्य भाव उत्पन्न होगा और जब विरक्त साधक बाहर भीतर के संयोगों से विरक्त होगा, तब मुण्डित होकर उत्कृष्ट संवर द्वारा आत्मरमण को स्पर्श करेगा। संवर होने पर वह अबोध एवं अज्ञानकृत कल्मष को दूर करता है।

जो अज्ञानकृत कर्मरज को दूर कर देता है, वह सम्पूर्ण ज्ञान-दर्शन का अधिकारी होता है। वह सम्पूर्ण लोक-अलोक को जानता है। वह राग-द्वेष का

विजेता वीतराग एवं जिन हो जाता है। वह केवली कहलाता है। जब जिन, केवली होता है, तब मन, वचन और काया के योगों का निरुन्धन करके शैलवत् स्थिरता प्राप्त कर शैलेशी अवस्था को प्राप्त करता है जब शैलेशी अवस्था पाता है, तब नीरज-निरंजन होकर सिद्धि को पाता है, लोक के अग्रभाग पर अर्थात् अत्युच्च स्थान पर स्थित होकर शाश्वत सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सिद्धत्व जिसका साध्य है, वह श्रमणत्व ज्ञान और दर्शन की सुदृढ़ भूमिका पर अवस्थित होता है। जिनोक्त सिद्धान्तों का ज्ञान और उसके प्रति विश्वास एवं अविचल श्रद्धा का होना श्रमणत्व के लिये अति आवश्यक है, अनिवार्य है। इसके अभाव में कोई श्रमण नहीं हो सकता, वह इसके लिये योग्य - पात्र नहीं समझा जा सकता है। लोक-अलोक, जीव-अजीव, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि विषयक मान्यताओं पर उसका असमाप्य एवं सुदृढ़-विश्वास होना चाहिये। इनका तलस्पर्शी-परिबोध तो आवश्यक होता ही है। इसके अतिरिक्त श्रमणत्व-अधिकारी के लिये निम्नोक्त-विशेषताएँ भी होनी चाहिये।

१. आर्य देश में उत्पन्न (विशेष योग्यता होने की स्थिति में अनार्य देशवासी एवं निम्न कुलोत्पन्न भी दीक्षा के पात्र माने जा सकते हैं।)
२. शुद्ध जाति - कुलान्वित
३. क्षीण प्राय अशुभकर्म
४. निर्मल धी (बुद्धि)
५. विज्ञात संसार
६. विरागशील
७. मन्दकषाय
८. अल्पहास्यादि, अकौतुहली।
९. कृतज्ञ
१०. विनयशील
११. राज सम्मत
१२. अद्रोही
१३. पंचेन्द्रिय पूर्ण हो, किसी प्रकार का अंग-भंग न हो।
१४. श्रद्धाशील
१५. स्थिर - स्वीकृत महाव्रत, नियम आदि का आजीवन निर्वाहकर्ता हो।
१६. समुपसम्पन्न - पूर्णेच्छा से अपना समूचा जीवन संयम में व्यतीत करना चाहता हो।

श्रमणत्व की प्राप्ति के लिये अपेक्षित योग्यताओं से यह अनुमान तो सहंज में हो ही जाता है कि किस कोटि के व्यक्तियों के योग्य यह पद है, साथ ही यह अनुमान भी होने लगता है कि श्रमणत्व की गरिमा वस्तुतः कितनी उच्चतम है। (क्रमशः)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के ९८वें जन्म-दिवस पर

गुरुवर के गुण अनन्त अपारा

श्री प्रसन्नचन्द बाफना

महासती रूपा के लाल, गजेन्द्र गुणवान
महिमा अपारी, गुरु हस्ती थे गुणधारी
जिन शासन जय-जयकारी ।।टेर।।

तेरी ही कृपा से नाथ, हमने धर्म पहिचाना
संसार दुःख का मूल, मोह अज्ञान को जाना
सामायिक-स्वाध्याय का मंत्र दिया सुखकारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।१।।

'सत्त्वेषु मैत्री' का पाठ जीवन में अपनाया
अपना-पराया भेद नहीं, विज्ञान सिखलाया
कथनी-करणी सम हो, पर निन्दा दुःखकारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।२।।

'गुणिषु प्रमोदं' उत्कृष्ट भाव मन भाया
गुणदर्शक नहीं गुण ग्राहक बन अपनाया
नहीं अहं, अच्छा सो मेरा, आदर्श भावना दिलधारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।३।।

विरद - विचार शरणागतों को संकट से है उबारा
'क्लिष्टेषु जीवेषु' धर्म का दिया सहारा
घायल नाग भयंकर, अभय बोध दिया उपकारी
जिनशासन जय-जयकारी।।४।।

'माध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ,' अभयभाव निज अन्तर
प्रतिकूल अवसर हो भले ही, बढ़ते रहो निरन्तर
निन्दा प्रशंसा चित्त नहीं धरना, स्वाध्याय रमण हितकारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।५।।

सदा ममात्मा विदधातु देव,' रहस्य आपने जाना
रग-रग में जिनशासन सेवा, निज को सेवक माना
अवसर हाथ तजो प्रमाद, निज घर आनन्द कारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।६।।

नगर पीपाड़ केवल कुल भानु, पुरिसवरगंधहत्थी कहलाया
लघुवय दीक्षा अजमेर शहर, शोभा पट्टधर पद दीपाया
दिवस त्रयोदश संथारा अद्भुत, महिमा निमाज में विस्तारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।७।।

ध्यान-मौन का गुण विशेष, शास्त्रज्ञान अति गहरा
अल्प आहार अल्प थी निद्रा, अप्रमाद योग सुनहरा
सिन्धु से मैंने बिन्दु पाया, 'प्रसन्न' को प्रसन्नता भारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।८।।

गुरुवर के गुण अनन्त अपारा, गावत पाए न पारी
जिनशासन जय-जयकारी ।।

-सदस्य, शासन सेवा समिति
१, नेहरू पार्क, जोधपुर

शास्त्र

- शास्त्र सर्वतोगामी चक्षु है।
- शास्त्र द्वितीय दिवाकर एवं तृतीय लोचन है।
- शास्त्र अज्ञानान्धकार को नष्ट करने वाला तेजस्वी तारा है।
- शास्त्र परभाव को परास्त करके स्वभाव में स्थिर करने वाला सद्गुरु है।
- शास्त्र सच्चा सखा, बन्धु, मित्र, स्नेही और वैद्य है।
- जो शास्त्रों का ज्ञाता एवं उपदेशक है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, व्यवहार में शास्त्र को अपना नेत्र बनाकर चलता है, ऐसा योगी परमपद प्राप्त करता है।
- शास्त्र अहंकार रूपी गज का अंकुश है।
- शास्त्र स्वच्छन्दता के ज्वर को उतारने वाली औषधि है।
- शास्त्र समस्त प्रयोजन सिद्ध करने वाला कल्पतरु है।

-प्रेषक : नवरतनमल डोसी, हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

एक बेटा या एक बेटी जिनशासन को समर्पित करें

श्री उदयमुनिजी म.सा.

आधुनिक युग में परिवार नियोजन का वातावरण है। एक बेटा, एक बेटी, कोई भी हो, मात्र दो पर्याप्त हैं। अब तो एक पर आ गए। विचारणीय यह है कि समाज सेवा एवं राष्ट्ररक्षा में, धर्म-रक्षा या जिनशासन की सेवा में कौन जाएगा ? वह एक तो मात्र माता-पिता की सेवा में ही रह गया। माता-पिता का लक्ष्य तो यही रहता है, फिर भले ही वह स्वच्छन्द भोग में बाधक माता-पिता की सेवा भले ही न करे।

आगमों में उल्लेख है कि इकलौते पुत्रों ने भी दीक्षा ली है। मृगापुत्र, भृगुपुत्र, जम्बूकुमार, जमालीपुत्र, थावच्चापुत्र आदि। बाद में भी ली, आज भी कोई-कोई लेते हैं। फिर भी यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जहाँ लाखों-करोड़ों की विपुल सम्पदा, व्यवसाय हो, भोगों के प्रचुर साधन हों, उन्मुक्त भोगों की ही पूरी शिक्षा हो, चार्वाकवाद-भोगवाद हावी हो वहाँ दीक्षा की बात बेमानी है। आज इकलौते पुत्र-पुत्री का न तो संयम लेने का भाव होता है और न ही माता-पिता आज्ञा देते हैं।

दस-बीस वर्षों में, एकाध सम्प्रदाय को छोड़ दें, संयमियों की संख्या घटती जा रही है। कुछ सम्प्रदाय, गच्छ या गुरु समस्याग्रस्त-तनावग्रस्त या दुःखी देखे जाते हैं कि शिष्य नहीं मिल रहे हैं। प्रकट 'रहस्य' है कि येन-केन प्रकारेण शिष्य मूंडे जा रहे हैं। कब वे असंयम में चले जाएँ पता ही नहीं लगता या संयमी वेष में 'असंयमी-चर्या' अपना लेते हैं, शासन की भारी हीलना भी होती है। आधुनिक संचार माध्यम ऐसे प्रकरणों को खूब उभारते-उछालते भी हैं। जैनियों के मस्तक झुक जाते हैं-शर्म से। कारण है- वैराग्य के आधार पर दीक्षाएँ नहीं होती हैं। 'शिष्य-सेवकों' की भर्ती होती है। अन्य-अन्य जातियों के भी आ रहे हैं। भगवान् महावीर के शासन में चारों वर्णों के संयमी बने। आज भी अन्य जातियों से आने वालों ने भी शासन को दिपाया है। परन्तु आज विचित्रता यह है कि दीक्षा समुचित शिक्षा-प्रशिक्षण-परीक्षण के बिना होती है। इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं।

जैन संगठनों को, संयमी समाज को भी इस हेतु कोई ठोस योजना बनानी चाहिए कि भगवान् महावीर के शासन में कैसे वृद्धि हो। इस हेतु एक सुझाव यहाँ प्रस्तुत हैं-

जैन अनुयायी-दम्पती समय की मांग से परिवार नियोजन भले ही अपनाएँ, एक बेटा, एक बेटी भगवान् महावीर के शासन हेतु दे दें। वह प्रथम-द्वितीय हो या तृतीय-चतुर्थ। जन्म लेते ही, शुचि निवारण के बाद, गुरु भगवन्त को झोली में बहरा दें। वह अब श्री संघ का हो गया या हो गई। जब तक माता द्वारा पालन करना आवश्यक समझा जाए, माता पाले। गर्भ काल से ही माता के विशिष्ट पोषण, स्वास्थ-रक्षा-उपचार-औषधि की व्यवस्था से लगाकर प्रसूति-व्यय, स्वस्थ-पोषण हेतु उपयुक्त आहार, औषधि-उपचार की संपूर्ण व्यवस्था श्री संघ करे।

ढाई वर्ष की वय में आज विद्यालय में प्रविष्ट करवाया जाता है। अतः इस कार्य-योजना हेतु बने छात्रावास में, विद्यालय में प्रविष्ट हो जाए। गुरुकुल परम्परा से उसके संपूर्ण आवास-शिक्षण की व्यवस्था वहाँ हो। समुचित व्यावहारिक शिक्षा के साथ हिन्दी, संस्कृत, उच्च विद्यालय में प्राकृत और जैन धर्म-दर्शन के मौलिक सिद्धान्तों का अध्ययन करवाया जाए। वहाँ रहते हुए उन्हें मुनि दर्शन, फिर सामायिक के साथ प्रवचन-श्रवण संयमी गुरुओं के सतत समागम में रखा जाए। वैराग्य परक बोध निरन्तर दिया जाए। सारी दैनिक चर्या उसकी धर्माचरणयुक्त होती जाए। मनोरंजन, खेलकूद, योगाभ्यास, प्राणायाम के अभ्यास उसकी शिक्षा के अंग हों।

नौ से पंद्रह वर्ष की अल्पआयु में, उसकी वैराग्य और योग्यता की परीक्षा करके गुरु भगवन्त भागवती दीक्षा दे सकते हैं। विशिष्ट योग्यता के लिए जैन धर्म की विशिष्ट परीक्षाएं, जैन दर्शन में स्तानक-स्नातकोत्तर शोधार्थी भी बनना चाहें तो सुविधाएं दी जाएं, फिर खरा वैराग्य दिखाई दे तब दीक्षा दी जाए। इनमें से जिनका भाव दीक्षा का न बने, उन्हें 'जैन पंडित' बनाकर समाज सेवा में जाने की छूट हो। संपूर्ण वातावरण ही वैसा रखते, भाव भरते भी, किसी को संसार-मार्ग अपनाना हो तो पुनः माता-पिता को सुपुर्द कर दिया जाए। कम से कम वह धर्ममय जीवन,व्रती तो बन ही जाएगा, कोई हानि नहीं हुई।

इतनी वृहत् योजना में धन और सेवार्थी कहां से आयेंगे ? अभी वृहत् माने ही क्यों ? कहाँ एकदम से ऐसी सैंकड़ों संतानें देने वाले मिल जायेंगे ? शनैः शनैः होगा। योजना सफल होगी क्या ? संशय पाला तो असफलता ही मिलेगी। शास्त्रों में चाहे एक उदाहरण मिलता है वज्रस्वामी का। वह पालने में झूलने की उम्र में श्री संघ को सुपुर्द हुआ और उद्भट आचार्य, अन्तिम दसपूर्वधारी, ज्योतिपुंज युग प्रधान आचार्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

साम्यवादी देशों ने ऐसी समस्त सन्तानों को राष्ट्र की धरोहर मानकर उनके पालन-पोषण-शिक्षण आदि की व्यवस्थाएं की। वे इसमें सफल हुए। कुछ समाजों ने भी ऐसा आह्वान किया है। शायद भारत को सेना में भर्ती हेतु ऐसा आह्वान करना पड़ जाए। समर्पित ब्रह्मचारी जीवनदायी योजनाएं भी भारत के एक संगठन में सफल हुई हैं।

धन कहाँ से आएगा ? जंगम तीर्थ बनाने में जैनियों के अरबों-खरबों रुपए आज भी लग रहे हैं। संयमियों की वैय्यावृत्त्य-संयम-साधनों के लिए करोड़ों के न्यास कार्यरत हैं। संयमियों की स्वास्थ्य रक्षा, चिकित्सा हेतु अभी-अभी करोड़ों का न्यास और पूरी कार्य योजना क्रियान्वित हो गई। साहित्य प्रकाशन में करोड़ों रुपए लग रहे हैं, तो जीते-जागते तीर्थ रक्षकों के लिए धन की कोई समस्या नहीं आ सकती। जैसे-जैसे ऐसे बच्चे दान में मिलते जायेंगे, उनके पालन-पोषण-धार्मिक संस्कार-शिक्षण और फिर संयमी बनाने हेतु दान देने वाले पंक्तिबद्ध खड़े मिलेंगे।

कोई एक सम्प्रदाय भी कमर कसकर आह्वान करे तो सफलता मिलने पर इसका प्रसार होता जाएगा। आज उत्कृष्ट संयमी साधकों की जो कमी होती जा रही है उस समस्या के निवारण में यह आह्वान कार्य करेगा। चिंतन हेतु एक विचार दिया है, विज्ञजन इस पर चिंतन करें।

जन्म-दिवस (माघकृष्णा चतुर्थी) पर

मानचन्द्र-गुण कीर्तनम्

(तर्जः श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन.....)

श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली

श्री मानचन्द्र मुनीन्द्र पूज्यम्,त्रिविध मेरे वन्दनम्।
सौम्य मुख है, सौख्यदाता, दरश जिनके शोधनम्।।

शुद्ध-वृत्त है, शान्त-आत्मन्, शील है आभूषणम्।
सुविद्-सुस्मित-श्रुति पथिक के, वचन है अति सुंदरम्।।

सत्यकामी, दृष्टिसम है, सरल है संवेदनम्।
सुविध-साधक, शूर-संयम, योग्य स्वस्तिवाचनम्।।

शुभ्र-श्रेयस शोभते हैं, वीर-जिनवर शासनम्।
श्लाघ्य गुरुवर संशरण हूँ, दूर हर संतापनम्।।

Study of The Jain Canon

Shri A.L.Sancheti

It is heartening to note that there is a noticeable increase in interest in things spiritual and religious all over in the East as well as West. It is evident in the bigger congregation in temples. churches, mosques and other centres of worship as also in meetings and gatherings, at lectures and other assemblages connected with thing religious. An obvious example is wide popularity of YOGA in America and Europe. It appears that belief in the adage that " Man cannot live by bread alone" is growing and people yearn for food for the soul. May be some of it may be ascribed to increase in population which results in overcrowding everywhere.

2- Like others, amongst the Jains also, specially among the younger generation, there is growing interest in religious inquiry leading to reading and writing on subjects pertaining to Jain thought. To a great extent this is due to the printing press which makes books and periodicals available with ease. Coupled with this is spread of education among the people generally and specially among the Jain laity who are considered better endowed economically as well as academically.

3- However, it has also been observed that much of the application to things religious is superficial and extrinsic. Thus, the aspirants are happy with worshipping with flowers or singing some hymns or mantras without knowing their meaning or significance. Same is true about all devotees including the Jain Laity and to some extent about the monks. There is hardly an attempt to delve deep to know the basic concepts of Jainism and its distinctive features. What is not appreciated is that all information is not knowledge and all knowledge is not wisdom.

4- The reason for this state of affairs is want of study of the jain Canon. By the Jain canon is meant the Jain Agam or the

Jain Sutra or Shastra, the fountain heads of Jain wisdom, the repositories of the thoughts- if not the words– of the Jain Prophets like Lord Mahaveer and Lord Parshva in their successor Acharyas. To some extent this state of affairs is due to the taboo on the study of the Jain canon(Shastra) which was operative till some time back, Fortunately no such ban now operates and one is free to apply to the Agama, which are also freely available along with translations– thanks to the printing press(as mentioned earlier).

5- Thanks also to the Printing press a plethora of religious material is flooding the market. There are numerous periodicals, magazines, books containing sermons of the monks, poems and songs of not very high order and quality. Production of these is a must for every Gachcha and Sampradaya of the Jain community and sometimes (at least) these tend to encourage disunity or discord. However, one damage these do cause is that they inhibit the study of the agama which requires patience and diligence.

6- The urgent need of the day, therefore is that the Jains- old and young monks and the laity- turn to the study of the Jain canon- the Agama Sahitya– the Jain Sutra/Shastra in their original form. There is a clear case for going back to the basics, of course with the assistance of the allied literature like Teeka, Churni, Vritti, Niryukti on the Sutra and translations for the reason that the language of the canon may be alien to many. But one most familiarize oneself with the original specially acquiring a good knowledge of the high points. In other words a true Jain must taste- if not drink-from the spring of the canonical knowledge. Then only one can acquire a glimpse of truth and the Jain wisdom with confidence getting rid of all misconceptions. After all this dimension of truth has survived all vicissitudes during the last many milleniums and we own it as a duty to acquaint ourselves with some facets of it.

7- The recourse to the original canon is a must because

the numerous commentaries and versions sometime tend to befuddle the reader involuntarily or deliberatly colour the interpretations depending on the inclination of the interpreter. This is specially true about the foreigners who have in their translations due to ignorance of the tradition and practice sometimes give meanings quite different from the original intent. This fact has given a wrong picture of Jainism to the West where it is considered self-centered, negative and impractical. It has also been enjoined(In Uttaradhyayana) "discover the truth through your own(soul) efforts." अप्पणा सच्चमेसेज्जा (उत्तरा. ६/२)

However help can be taken from the numerous translations, commentaries, but here also more than one should be consulted ofcourse studying the original at the same time.

8-Having given the justification and need for the study of original Canon/Agama or Shastra, the question arises how to go about it. The Shvetamber tradition says that the list of their Shastras varies between 32 accepted by the Sthanakwasi to 45 accepted by the Mandirmargi- though at one time the list extended up to 84, while the Digamber group denies them all, having their own literature/canon. Here it may be remarked that for the monks a knowledge of all the accepted Shastra is a must and it is matter of satisfaction that some monks not only know all the Sutra but even memorise them. At the same time some monks prefer going for degress like M.A. & Ph.D. ignoring the Agama! This tendency is not very healthy, to say the least.

9- The Jain Canon has been divided into four major groups called anuyoga as under, though the description is not very rigid:-

(i) Dharmkathanuyoga- Dealing with life stories of distinguished personages of Jain tradition.

(ii) Ganitanuyoga- Dealing with jain Astronomy.

(iii) Dravyanuyoga- Dealing with Jain Ontology.
(iv) Charnanuyoga- Dealing with rules of conduct.

10- On account of obvious limitations of time a layman may not be able to go through all the Agama, therefore, it is felt that such Sutras should be selected for study which can satisfy the fundamental need for knowledge of Jain religion. As already stated the contents of the Jain Sutra are overlapping. Let us take the Uttaradhyana Sutra. Its contents are so composite that it contains elements of all anuyoga including life stories, Jain conduct and Jain philosophy. It is felt that the study of one such Sutra will be quite useful and even sufficient to give basic knowledge for an aspirant for Knowledge. Here it may be remarked that while a thorough study of one such book will impart a fairly good knowledge of Jainism, a general knowledge of all sutra will be useful, by which is meant the books of all schools of thought including the Digambar School which have some really good literature to offer.

11- For a comprehensive study of any Sutra like Uttaradhyayan not only the original have to be approached but also the tika like the Sukhbodha and the translations in the Hindi & English. We are grateful to Gurudeva Gajendracharya for an exhaustive translation in Hindi both in prose and poetry. A fair knowledge ot this Sutra and if possible memorising the same will be a rewarding experience, it can be assured. Actually there are number of laymen and laywomen apart from the monks who memorise the Uttaradhyayan Sutra. In this connection one is reminded of the famous saying, नाणा अण्ठे, विद्या कण्ठे।

At the same time the guidance of a good teacher is essential for errect appreciation of the basic content of the Sutra for the Student. It has been rightly said that "Gurubina-nahin-gyan," Such a teacher may be a monk or a knowledgeable layman who should be given proper respect and if approached with all humility. Similarly the student

should have an open mind with right inclination or right faith(Samyag Darshan) in the truthful contents of the Sutra. which should be shown proper reverence. Indeed wrong attitude may result in false knowledge with disastorous results even leading to preversion and/or fanaticism.

12- The time and manner of study of the Sutra is also important. After all the Agam/Sutra are not taking to novels or short stories to be read hurriedly even in bed, These have to be studied with devotion and calm mind without disturbance. Generally the Laity observe a Samayik or two i.e.specific period of time is devoted to religious observance daily. It is felt that some time should be alloted for the study of Sutras (Swadhyaya) along with recitation or telling the beads of the rosary. It may be recalled that Gurudev Shri Gajendracharyaji always emphasized need for Samayik and Swadhyaya. Similarly it is common in Digamber temples to allot a room for study where a number of books are available and it is observed that people usually devote time for reading or listening to the Agama or both. Such practice can be usefully adopted in Jain temple and sthanakas where there are Gyan Bhandar or libraries generally.

13- Thy study of the Sutra should be an unending continuous process. After finishing with one e.g. Uttaradhyayan one can progress to Sutra like the Acharanga or Sutrakritang, dealing with philisophical subjects. Again a study of Bhagwati (Vyakhya Pragyapti) can be highly rewarding throwing light on a variety of subjects. Actually there are hardly any subject even temporal which are not illuminated in Jain Sutras. The Jain Canon contains besided ethics and philosophy, elements of history, culture,politics, economics and other subjects. These can be a source of immense interest as one advances in his study so much that the students may find other reading dull and boring.

-D 121, Shastri Nagar, Jodhpur

वैज्ञानिक लेख

वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से ऊर्जा का वैश्विक रूप

प्रो. प्रभात कुमार जैन

यह लेख षड्द्रव्यों की ऊर्जा, विशेषतः जीव एवं पुद्गल की ऊर्जा पर वैज्ञानिक दृष्टि से चिन्तन प्रस्तुत करता है। लेखक ने साधना हेतु जीव ऊर्जा के सदुपयोग पर बल दिया है। - सम्पादक

आचार्य नेमिचन्द्र ने त्रिलोकसार में इस अनन्त आकाश के दो भेद करते हुए व्याख्या की कि अनन्त आकाश के ठीक मध्य में जितने क्षेत्र में अन्य पाँच द्रव्य जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म व कालाणु समाहित हैं, वह लोकाकाश है तथा शेष सभी ओर अनन्त अलोकाकाश है अर्थात् जहाँ ६ द्रव्य हैं, वह लोकाकाश है तथा शेष अलोकाकाश। इस लोकाकाश या लोक में ही अर्थात् ३४३ घनराजू प्रमाण क्षेत्र में ही जीव व पुद्गल या इनका संसार है। इस लोक में धर्म, अधर्म एक-एक अर्थात् अखण्ड होते हुए ३४३ घनराजू प्रमाण क्षेत्र में हैं तथा गति या अगति के कारणभूत द्रव्यों अर्थात् जीव व पुद्गल के लिये उदासीन अर्थात् अप्रेरक रहते हुए गतिहेतुत्व तथा स्थितित्व के कारण हैं। कालाणु केवल एक ही प्रदेशी हैं, किन्तु इस सम्पूर्ण लोक के एक-एक प्रदेश में रत्नराशि की भाँति परस्पर स्पर्शमात्र करते हुए विद्यमान हैं तथा जीव, पुद्गल आदि के परिणमन में हेतु है। आकाश तो स्वयं को तथा शेष पाँच द्रव्यों को स्थान मात्र देता है। ये सभी पाँच द्रव्य अपनी मूल सत्ता में एक क्षेत्रावगाही रहते हुए भी, एक दूसरे के साथ किसी भी गुण अर्थात् स्वभाव में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करते।

अब यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर संसार क्या है? परिणमन, गति, अगति क्या हैं? वास्तव में 'समस्त संसार की इस इन्द्रजालिक क्रीडा के स्वामी हैं दो द्रव्य-जीव व पुद्गल। ये दोनों भी अपनी सर्वात्म शुद्ध अवस्था में ही केवल अपने स्वभाव में रहते हैं, किन्तु अनादिकाल से इनके मध्य चले आ रहे संयोग अथवा बन्ध के कारण यह सारा संसार चल रहा है। दोनों परस्पर मिलकर, निश्चयनय से

अपने स्वभाव में रहते हुए भी, व्यवहारनय से एक दूसरे की अवस्था-परिवर्तन में निमित्त बनते हैं। इन दोनों की मिश्रित अवस्था में न जाने कितने भेद हो सकते हैं, कल्पना करना कठिन है। स्यात् इसी कारण से संसारी जीव की अवस्थाएँ मूल भेद में ८४ लाख या १९७.५ लाख करोड होते हुए भी अनन्तानन्त हैं।

प्रत्येक द्रव्य अपनी अन्तर्निहित ऊर्जा (Intrinsic energy) से ही अपना कार्य करता है, किसी बाह्य कारण से नहीं। बाह्य कारण निमित्त हो सकता है, किन्तु केवल अपनी उपादान क्षमता या ऊर्जा से ही कार्य, परिणमन अथवा परिवर्तन होना सम्भव है। प्रत्येक द्रव्य अपनी इस अनन्त व स्थिर ऊर्जा से स्वयं परिवर्तन करता रहता है। स्वयं का तात्पर्य कर्त्ता से न होकर, स्वभाव से है जिसे विशेषतः 'षट्गुण भाग हानि वृद्धि' से समझा जा सकता है अर्थात् प्रत्येक द्रव्य स्वयं षट्गुण हानि वृद्धि करते हुए परिवर्तन वाला होता है किन्तु इस परिवर्तन से ही वह अपनी सत्ता बनाये रखता है। ऊर्जा में कोई ह्रास या वृद्धि नहीं होती, बल्कि एक अद्भुत स्थिति आती है कि परिवर्तन करते हुए भी वह स्थिर रहता है। आप कह सकते हैं जैसे समुद्री लहरें Sine curve की भाँति उठती व विलीन होती रहती हैं, लेकिन अपने में ही। गणितीय आधार पर इसका विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं। माना, किसी द्रव्य में गुण की संख्या १०२४ है तब गणना करते हैं कि किस प्रकार षट्गुण हानि वृद्धि होती है। पहले यह समझ लें कि यह हानि वृद्धि अनन्त, असंख्यात, संख्यात के आधार पर निम्न प्रकार से होती है तथा प्रक्रिया को समझने मात्र के लिए इन्हें क्रमशः ८, ४ व २ से व्यक्त कर रहे हैं।

अनन्त भाग वृद्धि = १०२४ + (१०२४ ÷ ८ = १२८) = ११५२

असंख्यात भाग वृद्धि = ११५२ + (१०२४ ÷ ४ = २५६) = १४०८

संख्यात भाग वृद्धि = १४०८ + (१०२४ ÷ २ = ५१२) = १९२०

संख्यात गुण वृद्धि = १९२० + (१०२४ x २ = २०४८) = ३९६८

असंख्यात गुण वृद्धि = ३९६८ + (१०२४ x ४ = ४०९६) = ८०६४

अनन्त गुण वृद्धि = ८०६४ + (१०२४ x ८ = ८१९२) = १६२५६

अनन्त भाग हानि = १६२५६ - (१०२४ ÷ ८ = १२८) = १६१२८

असंख्यात भाग हानि = १६१२८ - (१०२४ ÷ ४ = २५६) = १५८७२

संख्यात भाग हानि = १५८७२ - (१०२४ ÷ २ = ५१२) = १५३६०

संख्यात गुण हानि = १५३६० - (१०२४ x २ = २०४८) = १३३१२

असंख्यात गुण हानि = १३३१२ - (१०२४ x ४ = ४०९६) = ९२१६

अनन्त गुण हानि = ९२१६ - (१०२४ x ८ = ८१९२) = १०२४

इस प्रकार परिवर्तन एक क्रम से हुआ किन्तु गुण, अवस्था वैसी ही रही, इस प्रकार निरन्तर परिवर्तन होते हुए भी द्रव्य अपरिवर्तित रहता है अर्थात् अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता। यहाँ प्रश्न यह आता है कि इस निरन्तर चलने वाली षट्गुण हानि वृद्धि में या किसी भी प्रकार के परिणमन व गति के लिए क्या ऊर्जा की भी आवश्यकता होगी ? वास्तव में इस लेख का विषय केवल इस ऊर्जा का ही दर्शनसम्मत व विज्ञानसम्मत विवेचन करना है।

पदार्थ में ऊर्जा की व्याख्या करने से पहले भौतिक-ऊर्जा के स्रोत पुद्गल को समझ लेना आवश्यक है। छः द्रव्यों में पुद्गल एक मात्र रूपी द्रव्य है, जिसमें अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, मूर्तत्व व अचेतनत्व इन अष्ट सामान्य गुणों के अतिरिक्त स्पर्श, रस, गन्ध व वर्ण ये चार विशेष गुण भी हैं, सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तब ये ही पुद्गल के सम्पूर्ण गुण नहीं हैं। क्योंकि पुद्गल अणु (Independent, native state) व स्कन्ध (Dependent, combined state) इन दो अवस्थाओं में पाया जाता है। अणु वह सूक्ष्मतम अवस्था है जो अपनी संज्ञा के अनुरूप अविभाज्य तो है ही, किन्तु स्वतंत्र भी है। ये अनन्त हैं और सर्व लोकव्यापी तथा अदृश्य हैं, दो या अधिक अणु संयुक्त होकर स्कन्ध बनाते हैं तथा इस बन्धन के विकार के परिणामस्वरूप ही पुद्गल की इस स्कन्ध पर्याय में विशिष्ट स्पर्श, रस, गन्ध व वर्ण उत्पन्न हो जाते हैं। बस, यहीं से अर्थात् अणु एवं स्कन्ध से भौतिक ऊर्जा का सद्भाव प्रारम्भ होता है। सामान्यतः अणुओं से स्कन्ध बनने में अणुओं की स्वाभाविक अनन्त ऊर्जा का शोषण होता है तथा स्कन्ध से परमाणु पृथक् होने पर ऊर्जा का उत्सर्जन होता है। एक प्रकार के स्कन्ध से अन्य प्रकार के स्कन्ध रूप परिवर्तन होने में ऊर्जा का शोषण व उत्सर्जन दोनों हो सकते हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार, नाभिकीय प्रतिक्रियाओं में अपार ऊर्जा का उत्पन्न होना स्कन्ध का पर्याय परिणमन ही है। किसी भी नाभिकीय प्रतिक्रिया में किसी तत्त्व के परमाणु में उपस्थित मौलिक कण पृथक् होने पर छोटे-छोटे अंशों में टूटते हैं, ये अंश प्रोटोन, इलेक्ट्रोन, न्यूट्रॉन या हेड्रन या क्वार्क्स ही नहीं, वरन् और

भी छोटे कण हैं, जो अत्यधिक सूक्ष्म होने से ऊर्जा रूप में आ जाते हैं, जो पहले से ही उन कणों के द्वारा बंधकर तत्त्व के परमाणु में निहित थी तथा अब प्रकट हो गयी। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ये जैन दर्शन वर्णित अणु से बहुत बडे हैं। नाभिकीय क्रिया में इसी कारण कहा जाता है कि पदार्थ की कुछ मात्रा नष्ट होकर ऊर्जा में परिवर्तित हुई, वास्तव में ऊर्जा अर्थात् अत्यधिक सूक्ष्म कण, सूक्ष्म मात्रा के रूप में ही परिवर्तित थी, यदि $E=mc^2$ है तब, $m=E/C^2$ भी है। अतः E व m के परिवर्तन से ही ऊर्जा का उत्सर्जन या स्कन्ध का निर्माण होता है। गणितीय आधार पर, इस अपार ऊर्जा की गणना इस प्रकार की जाती है।

पदार्थ या तत्त्व या द्रव्य की मूल रूप से नष्ट या परिवर्तित मात्रा=lamu जहाँ, lamu(atomic mass unit) परमाण्वीय मात्रक इकाई, एक 12_c परमाणु के 1/12 वें भाग प्रमाण अर्थात् $1/6.023x10^{23}$ या $1.66x10^{-24}$ ग्राम है

अतः आइंस्टीन समीकरण $E=mc^2$ से-

E = उत्पन्न ऊर्जा

m = परिवर्तित या नष्ट मात्रा = $1.66x10^{-24}$ ग्राम

E = प्रकाश का वेग = $3x10^{10}$ सेमी/सेकिण्ड

तब (१) से

$E = 1.66x10^{-24}(3x10^{10})2$ अर्ग

$= 1.66x10^{-24}x9x10^{-20}$ अर्ग

$= 14.94x10^{-4}$ अर्ग ऊर्जा (२) यह नाभिकीय ऊर्जा अपार होने से Million electron volt (Mev) में प्रदर्शित की जाती है जहाँ =1Mev = $1.602x10^{-6}$ अर्ग तथा c के 1 परमाणु के 1/12 वें भाग अर्थात् कार्बन तत्त्व के $4.98x10^{-24}$ ग्राम के पूर्ण दहन (प्रज्वजन) से lev(इलेक्टॉन वोल्ट) ऊर्जा उत्पन्न होती है तथा 10^6 ev = 1 Mev.

अतः (२) से - $E=14.94x10^{-4}/1.602x10^6$ Mev.

=931Mev.(लगभग)

अतः lamu जितनी सूक्ष्म मात्रा के नष्ट होने अर्थात् अत्यधिक सूक्ष्म कणों में परिवर्तित होने पर अपार ऊर्जा उत्पन्न होती है। इस गणना करने का प्रयोजन यही है कि सूक्ष्म स्कन्ध रूप पुद्गल में अपार ऊर्जा निहित है।

किसी भी तत्त्व के परमाणु के निर्माण में प्रयुक्त इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन व न्यूट्रॉन के द्वारा अपार ऊर्जा प्रयुक्त होती है, जिसे बंधन ऊर्जा (Binding energy) कहा जाता है। किसी तत्त्व के नाभिक में उपस्थित सभी कण अर्थात् प्रोटॉन व न्यूट्रॉन, न्यूक्लिऑन (Nuecleon) कहलाते हैं तथा एक न्यूक्लिऑन के लिए इस बंधन ऊर्जा का मान, सभी तत्त्वों में लगभग एक समान अर्थात् 8 Mev है। जिन तत्त्वों में लिए यह 8 Mevया अधिक है, वे स्थायी, तथा जिनके लिये यह 8 Mevसे कम है, वे रेडियो एक्टिव या विघटित होते हैं।

यह ऊर्जा सभी तत्त्वों में रहते हुए, जब वे परस्पर संयोग करके अन्य यौगिक बनाते हैं, तब और बढ जाती है, जो रासायनिक ऊर्जा है। सामान्यतः ये तत्त्व या यौगिक जब कोई रासायनिक अभिक्रिया करते हैं तब वे ऊर्जा में भी परिवर्तन करके नये-नये यौगिक बनाते हैं, जिनमें ऊर्जा पहले से अधिक भी हो सकती है और कम भी। अधिक होने पर, ऊर्जा प्रकृति अर्थात् वातावरण या वायुमण्डल से शोषित की जाती है तथा कम होने पर शेष ऊर्जा उत्सर्जित कर दी जाती है, यह ऊर्जा प्रतिक्रिया ऊर्जा Energy of reaction होती है।

इन सभी ऊर्जाओं को पदार्थों की ऊर्जा कहते हैं जो लौकिक है, किन्तु साथ ही यह ऊर्जा अलौकिक या आध्यात्मिक भी है। यही ऊर्जा इस लोक में संसारी जीव व कार्मण वर्गणाओं में भी प्रयुक्त होती आ रही है। जीवद्रव्य एक अनन्त ऊर्जा सम्पन्न अखण्ड द्रव्य अवस्था है जो अपने भावों अर्थात् विभावों के द्वारा ऊर्जा का उपयोग होने पर कार्मण वर्गणाओं को कर्मों में परिवर्तित करता है तथा ये कर्म अपनी व जीवद्रव्य की ऊर्जा से बन्धन को प्राप्त हो जाते हैं। यही संसारी जीव अवस्था है।

संसारी जीव अपने पूर्व कर्मों के उदय से उत्पन्न ऊर्जा एवं उससे प्रभावित होकर अन्य नये विभावों, संस्कार से उत्पन्न ऊर्जा से नये द्रव्य कर्म बाँधता है, किन्तु इस बन्धन में वह जितनी ऊर्जा का उत्सर्जन करता है, उसी से कर्म वर्गणाओं में प्रकृति पड़ती है तथा प्रदेश आकर्षित होते हैं तथा कषायों की तीव्रता या मन्दता से, उन कर्मों को बंधन के समय हीन या अधिक ऊर्जा मिलती है। इसी कारण प्रत्येक कर्म बन्धन की भिन्न-भिन्न ऊर्जा से उन कर्मों की स्थिति व अनुभाग दृढ़, तीव्र या निर्बल व मंद होते हैं।

ये कर्म अपने अबाधा काल के समाप्त होते ही अपनी भिन्न स्थिति के

अनुरूप उदय में आते हैं, तब इनकी ऊर्जा से प्रभावित होकर ही सभी संसारी जीव भाव कर्म में डूब जाते हैं जो भविष्यत् के द्रव्यकर्म निर्धारण में सहायक होते हैं और यही द्रव्यकर्म-भावकर्म की रासायनिक क्रिया अनन्त काल से चली आ रही है ।

सभी साधारण संसारी जीव अर्थात् प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान सम्बन्धी जीव, इन द्रव्य कर्मो के उदय के प्रभाव से समस्त कार्य करते रहते हैं, उन बद्ध कर्मों की सविपाक निर्जरा होती रहती है। किन्तु अन्तर देखिये, एक साधक या बुधजन या सम्यक्त्वी जीव जो इस भव-भ्रमण के कारण को समझ और इन प्रतिक्रियाओं अर्थात् बन्धनों के कारणों को समझ निर्लिप्त होने लगता है तथा बन्ध-प्रक्रिया की गति को मन्द करता है अर्थात् अनन्त कर्मों से कुछ मुक्ति पा लेने से, कुछ सुख का अनुभव करने लगता है अर्थात् दुःख की कारणभूत सम्यक्त्वघाती ७ प्रकृतियों का सर्वथा अभाव कर डालता है अर्थात् अपनी ऊर्जा उत्पन्न करता है तथा उसके उपयोग या संघात से इन ७ प्रकृतियों की बन्धन ऊर्जा को क्षीण करके उनका अभाव कर डालता है। इस अवस्था में आने पर संयम, तप, नियम, उपवास, ध्यान आदि प्रक्रियाओं से निरन्तर अपनी ऊर्जा से यह जीवात्मा जो अब प्रथम गुणस्थान अर्थात् बहिरात्मा से पाँचवें, छठे, सातवें गुणस्थान या आगे अर्थात् अन्तरात्मा की ओर अग्रसर होता जाता है। ध्यान से प्रज्वलित अग्नि के संघात से कर्म-बन्धनों की ऊर्जा को कम करके ही-

१. समय से पहले कर्मो का उदय अर्थात् उदीरणा होती है।
२. कर्म प्रकृति का परिवर्तन अर्थात् स्वजाति रूप दुःख या असाता का सुख या साता रूप परिणमन अर्थात् संक्रमण किया जा सकता है।
३. कर्म बन्धन को स्थायी अवस्था से निर्बल बन्ध अवस्था में लाना अर्थात् स्थिति काण्डकघात व अनुभागकाण्ड घात होता है।
४. कर्म बन्धन की ऊर्जा को स्थायी रूप से क्षीण करना अर्थात् अविपाक निर्जरा करने लगता है। विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य तथ्य यह है कि इस तप, संयम आदि से उत्पन्न संघात के भी दो भेद हैं।

(अ) यदि ऊर्जा कर्म-बन्ध में प्रयुक्त ऊर्जा को क्षीण करने की क्षमता से कम है तब उस साधक जीव की 'उपशम श्रेणी' प्रारम्भ होती है अर्थात् कर्मों की निर्जरा नहीं होती, किन्तु उनका प्रभाव ऊर्जा के प्रभाव से कुछ समय के लिए कम हो जाता है,

जिसे 'उपशम' अवस्था कहते हैं।

(ब) यदि उत्पन्न ऊर्जा, उस बंधन ऊर्जा के बराबर या अधिक है तब वह उस कर्म-बन्धन की ऊर्जा को क्षीण करके, उस कर्म को उदासीन करके क्षय कर देता है, यही 'क्षपक' अवस्था है।

उपर्युक्त सभी कारणों में आवश्यक ऊर्जा का परिमाण कितना हो, इसकी व्याख्या इस प्रकार से की जाती है। सामान्य या रेडियो-एक्टिव तत्त्वों में जब उनका विखण्डन करना होता है अथवा उन्हें अस्थायी बनाना होता है, तब उन पर किसी कण की बौछार की जाती है, किन्तु उस कण जिसे प्रक्षेप्य (Projectile) संज्ञा दी जाती है, अर्थात् प्रक्षेप्य को दी गयी ऊर्जा, यदि उस तत्त्व की बन्धन ऊर्जा से कम है, तब वह उस तत्त्व में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता तथा प्रयुक्त की गयी ऊर्जा भी व्यर्थ हो जाती है। यदि उस प्रक्षेप्य की ऊर्जा, उस लक्ष्य अर्थात् तत्त्व की बन्धन ऊर्जा के समतुल्य या अधिक है, तब वह प्रक्षेप्य परिवर्तन या परिणमन या विखण्डन कर देता है। इसी तरह आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा व कर्मों पर घटित करें तब जब भी किसी भी प्राणी के द्वारा सदैव ऊर्जा तो उत्पन्न होती ही है, लेकिन उसका केन्द्रीकरण या सदुपयोग न होने से वह व्यर्थ चली जाती है क्योंकि कर्म बन्ध की ऊर्जा को कम करने, संक्रमण या क्षीण करने के बराबर नहीं है। किन्तु प्रायः साधना करने वाला अपने भावों को विभावों में परिवर्तित कर देता है जिससे ऊर्जा अन्य कार्यों, अभिप्रायों में बँटकर नष्ट हो जाती है तथा पुरुषार्थ व्यर्थ चला जाता है तथा उत्पन्न की गयी ऊर्जा भी अन्य बन्धनों का कारण बन जाती है। इसी कारण साधक से अपेक्षा की जाती है कि जब वह स्वयं साधना करता है तो मन भटके नहीं तथा ऊर्जा व्यर्थ न जाकर सदुपयोग में व्यय हो। तीसरे गुणस्थान अर्थात् सम्यक् मिथ्यात्व में यही तो होता है। सदुपयोग होने पर क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न होने पर साधक निरन्तर उन्नति करता है। उसका I-Q अब E-Q (Emotional Quotient) में परिवर्तित होकर Spiritual Q (S-Q) में प्रवेश करने लगता है या धीरे-धीरे भाव विशुद्धि करता हुआ, निर्ग्रंथ होकर क्षपक श्रेणी पर आता है तथा अन्त में ६३ कर्म प्रकृतियों का क्षय करके केवलज्ञान व अरिहंत अवस्था पा लेता है अर्थात् भव-भ्रमण से मुक्ति पा लेता है।

इन सभी गणनाओं (करण) व उनके विश्लेषण, मनन का तात्पर्य यही है

कि हम अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करें। सभी अपने हृदय या भाव परिवर्तन से स्वयं को शान्त, तनावरहित व सुखी रखें। संसार में रहते हुए, अपने कार्य करें, किन्तु हम अहिंसक, विचारवान्, शान्त, निर्लिप्त रहें, फिर कैसा तनाव, कैसी अव्यवस्था, कैसा वैमनस्य, राग,द्वेष, कैसी चोरी, झूठ, निन्दा, परिग्रह, हिंसा, व्यभिचार तथा अनैतिकता ? प्रत्येक अवस्था में सन्तोषी व सुखी। यही धर्म का मर्म या रहस्य है। अतः अपनी ऊर्जा को स्वयं में केन्द्रित करें और सुखी रहें। विशेष जिज्ञासु आचार्य श्री कनकनन्दी कृत १. विविध क्रम विकासवाद एवं परम विकासवाद २. ब्रह्माण्डीय जैविक-भौतिक एवं रसायन विज्ञान ३. अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से लेकर परमात्मा आदि पुस्तकों का अध्ययन करें।

(संघस्थ वै. धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी)

जिनवाणी के लेखकों हेतु शुभ सूचना

नववर्ष २००८ आप सबके लिए मंगलमय हो। जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा यह निश्चय किया गया है कि जनवरी २००८ से दिसम्बर २००८ के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को निम्न वर्गानुसार पुरस्कृत किया जाएगा-

१. आध्यात्मिक/नैतिकशिक्षा परक लेख	५१००/-
२. शोधालेख/वैज्ञानिक लेख	५१००/-
३. आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली से सम्बद्ध लेख	५१००/-
४. अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ रचना	५१००/-
५. युवा-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	५१००/-
६. नारी-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	५१००/-
७. बाल-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	५१००/-
८. श्रेष्ठ कविता	३१००/-
९. संवाद स्तम्भ में श्रेष्ठ समाधान	३१००/-
१०.श्रेष्ठ प्रेरक-प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार	२१००/-

उपर्युक्त पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

प्रश्न-मंच

अभय

श्री पी.एम. चोरडिया

प्रश्न १. अभय कहाँ है?

उत्तर जब अप्रमाद जागता है, तब भय समाप्त हो जाता है। अप्रमादी भय मुक्त होता है। जहाँ प्रमाद है वहाँ भय है। जहाँ अप्रमाद है, वहाँ अभय है।

प्रश्न २. अभय होने के लिये क्या चिन्तन करना चाहिये?

उत्तर अभय बनने के लिये सदा यह चिन्तन करना चाहिए कि मेरा किसी से वैर नहीं है। सभी प्राणियों से मेरी मित्रता है। मैं मेरे प्रति अपराध करने वाले को भी क्षमा करता हूँ। सभी प्राणी मुझे क्षमा करें।

प्रश्न ३. अभय कैसे आता है?

उत्तर अभय प्रज्ञा से आता है। जब प्रज्ञा जागती है तो व्यक्ति वर्तमान में जीना स्वीकार कर लेता है। जो प्राप्त है, उसे स्वीकार कर लेना, घटना को घटना के रूप में स्वीकार कर लेना ही जीवन की वास्तविकता है।

प्रश्न ४. अभय के लिये कौन बाधक है?

उत्तर हिंसा, असत्य और संग्रह। जब तक इनमें आसक्ति है तब तक मानव भयभीत रहता है। अभय को प्राप्त करने के लिए इनसे आसक्ति मिटनी आवश्यक है।

प्रश्न ५. मनुष्य जीवन में भय को सबसे बड़ा दोष एवं विकार क्यों कहा गया है?

उत्तर भय मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा दोष एवं विकार है। भय से आक्रान्त व्यक्ति निरन्तर घबराया रहता है। भविष्य के सम्बन्ध में निराशा का भाव उसके मन-मस्तिष्क में छाया रहता है। क्या

होगा? कैसे होगा? यही सबसे बड़ा रोग विकास में बाधक बनता है। अनेक प्रकार के जो गलत काम होते हैं, उनके मूल में कहीं न कहीं भय है।

प्रश्न ६. 'णमोत्थुणं' सूत्र में कौनसा शब्द अभय का सूचक है?

उत्तर अभयदयाणं

प्रश्न ७. क्या यथार्थ में भय होता है?

उत्तर यथार्थ में भय नहीं होता। भय मूर्च्छा में होता है। प्रेक्षा द्वारा हमारी मूर्च्छा का चक्र टूटता है, जिससे भय अपने आप समाप्त हो जाता है।

प्रश्न ८. सद्चरित्र और अभय एक-दूसरे के पूरक किस प्रकार हैं?

उत्तर चरित्र बल के बढ़ने के साथ-साथ हमारे जीवन में अभय का विकास होता जाता है। जब अभय का बल बढ़ता है तो अनेक मनोकामनाएँ हमारे जाने-अनजाने में पूरी हो जाती हैं।

प्रश्न ९. वीतराग भगवान् को कोई भय क्यों नहीं है?

उत्तर वीतराग भगवान् ने राग-द्वेष आदि सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करली है, इसलिये उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं है। स्वयं वे अभय हैं। जो स्वयं अभय होगा, उसकी शरण ही अभय देगी।

प्रश्न १०. 'जो ण कुणइ अवराहे, सो णिस्संको दु जणवए भमदि'

जो किसी प्रकार का अपराध नहीं करता, वह निर्भय होकर जनपद में भ्रमण कर सकता है। इसी प्रकार निरपराध निर्दोष आत्मा भी सर्वत्र निर्भय होकर विचरता है।

उपर्युक्त विचार किस ग्रन्थ से लिए गए हैं?

उत्तर समयसार (३०२)

प्रश्न ११. न भाइयव्वं भयस्स वा वाहिस्स वा।

रोगस्स वा, जराए वा मच्चुस्स वा।। -प्रश्नव्याकरण (२/२)

इन शब्दों का भावार्थ कीजिए।

उत्तर आकस्मिक भय से, व्याधि से, रोग से, बुढ़ापे से और मृत्यु से भी

किसी को कभी नहीं डरना चाहिए।

प्रश्न १२. भय से भक्ति सब करे, भय ते पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय।।
उपर्युक्त दोहे के रचयिता कौन हैं?

उत्तर कबीरदास जी।

प्रश्न १३. हर डर, गुरु डर, गांव डर, डर करणी में सार।
तुलसी डरै सो ऊबरे, गाफिल खावे मार।। -संत तुलसीदास
उपर्युक्त दोहे का भावार्थ कीजिये।

उत्तर हर-डर अर्थात् भगवान् से डरो, गुरु डर- गुरु से डरो, गांव डर- गांव से डरो, डर करणी में सार- अकरणीय को करने से डरो। जो इनसे डर जाता है वह अभय बन जाता है।

प्रश्न १४. हर्ष शोक की लाभ-हानि की,चिन्ताओं को मारो ठोकर।
व्रज चरण से बढ़ो, अभय हो,पहुँचे पर्व, पहुँचे मंजिल पर।।
उपर्युक्त पद्य के रचानाकार कौन हैं?

उत्तर 'उपाध्याय अमरमुनि जी'।

प्रश्न १५. अपने घर में ही किसे भय उत्पन्न होता है?

उत्तर जो प्रमाद करता है, सम्यक् पुरुषार्थ नहीं करता तथा सम्यक् रूप से परिवार का पोषण नहीं करता, उसको अपने घर से भी भय उत्पन्न होता है।

प्रश्न १६. अभय की मुद्रा का बाहरी लक्षण क्या है?

उत्तर प्रफुल्लता, चेहरे का खिलना, प्रसन्नचित्त होना, तनाव रहित होना, भीतर में शांति होना अभय की मुद्रा के बाहरी लक्षण हैं।

प्रश्न १७. कोई भी व्यक्ति अभय बने बिना आध्यात्मिक क्यों नहीं हो सकता?

उत्तर स्वयं डरना या दूसरों को डराना-दोनों भौतिकवादी प्रक्रियाएँ हैं। दोनों अध्यात्म के प्रतिकूल प्रक्रियाएँ हैं। कोई व्यक्ति अभय बने बिना आध्यात्मिक नहीं हो सकता। भय और भौतिकवाद दोनों

पर्यायवाची हैं। अभय और अध्यात्म दोनों पर्यायवाची हैं। जो व्यक्ति अभय है, डरता नहीं है, वह सही अर्थ में अध्यात्मवादी है।

प्रश्न १८. अभय बनने के लिए कौनसे कार्य सहायक हैं?

उत्तर १. प्राकृतिक नियमों को जानना। २. शरीर के नियमों को जानना। ३. मन के नियमों को जानना। ४. चेतना के नियमों को जानना।

प्रश्न १९. अभय का दान कौन दे सकता है?

उत्तर अभय का दान वही व्यक्ति दे सकता है जिसने स्वयं अभय प्राप्त किया है।

प्रश्न २०. अभय बनने के लिए शरीर का मोह क्यों छोड़ना आवश्यक है?

उत्तर मोह के कारण ही मनुष्य यथार्थ को नहीं समझ सकता। सच्चाई को न समझ सकने के कारण वह जाने-अनजाने भय की स्थिति में चला जाता है। उसे महसूस होता है कि यदि शरीर छूट गया तो सबकुछ छूट गया। उसका सारा ध्यान शरीर-दर्शन पर टिका रहता है। शरीर पर जब इतनी प्रगाढ़ आसक्ति होती है तब भय पैदा होना स्वाभाविक है।

प्रश्न २१. **'सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अपमत्तस्स नत्थि भयं'** इस पंक्ति का अर्थ बताइये।

उत्तर जो प्रमादी होता है उसको सब प्रकार का भय रहता है। जो अप्रमादी होता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

प्रश्न २२. 'जिसका पिता धैर्य है, माता क्षमा है, भार्या शान्ति है, सत्य जिसका मित्र है, दया जिसकी भगिनी है, मन का संयम जिसका भ्राता है, भूमि तल जिसकी शय्या है, दिशाएँ जिसका वस्त्र है और ज्ञान रूपी अमृत जिसका भोजन है, जिसके परिवार में ये सब हैं, उस योगी को किसका भय है अर्थात् वह सर्वथा अभय है।' उपर्युक्त विचार किसने प्रस्तुत किये?

उत्तर 'भर्तृहरि' ने।

प्रश्न २३. "किसी मनुष्य को मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है। उसे इस

बात से अवश्य डरना चाहिए कि कहीं वह अपनी सबसे बड़ी शक्ति को बिना जाने हुए न मर जाये।'' उपर्युक्त संदेश किस पाश्चात्य नोबल पुरस्कार विजेता ने दिया?

उत्तर 'एलबर्ट श्वाइट्जर ने'

प्रश्न २४. 'भवदाश्रितानां दृष्ट्वा भयं भवति नो'। इन शब्दों का अर्थ कीजिए।

उत्तर हे प्रभु! आपके चरण की शरण लेने वालों को कोई भय नहीं।

प्रश्न २५. भय से अभय बनने के लिए भक्तामर स्तोत्र में क्या-क्या उपाय बताए गए हैं?

उत्तर भक्तामर स्तोत्र के अन्तिम भाग में आचार्य मानतुंग ने भयमुक्त होने का यह उपाय बताया है कि यदि प्रभु के चरणों में प्रीति है, भक्ति है, श्रद्धा एवं आस्था है तो फिर भय कैसा? भगवान् अभय के देवता हैं। भगवान् स्वयं अभय हैं एवं अभय देने वाले हैं।

प्रश्न २६. अभय का प्रसन्नता से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर अभय और प्रसन्नता का आपस में जोड़ा है। प्रसन्नता हमारे चित्त की निर्मलता है। अभय एवं प्रसन्नता दोनों साथ-साथ रहते हैं। ऐसा नहीं होता कि अभय हो और प्रसन्नता न हो, या प्रसन्नता हो और अभय न हो। भय आते ही प्रसन्नता मिट जाती है।

-89, Audiappa Naicken Street, Chennai(T.N.)

स्वास्थ्य-चिन्तन

शरीर, मन और आत्मा के बारे में अधिकांश व्यक्तियों को प्रायः जानने, सोचने और समझने की जिज्ञासा ही नहीं होती। क्या गलत और क्या ठीक? क्या उचित और क्या अनुचित? क्या करणीय तथा क्या अकरणीय? क्या प्राथमिक अथवा अति आवश्यक और क्या साधारण अथवा क्या अनावश्यक? प्रकट होने वाले प्रत्येक रोग के लक्षण का कारण एवं मूल क्या? क्यों? कब? कितना? इन सबको जानने का प्रयास करें। समस्या अथवा रोग का पता लग जाएगा। शरीर क्या स्वीकार करता है और क्या नहीं, समझ में आ जाएगा।

-चंचलमल चोरडिया, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर

जिज्ञासा-समाधान

व्यवहार राशि एवं अव्यवहार राशि

(स्वाध्यायी सुश्राविका सौ. रसीलाबाई बरडिया - जलगाँव ने पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त भगवन्तों के सान्निध्य में बीजापुर में अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की, जिसके उत्तर का संकलन श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार ने किया है।-सम्पादक)

जिज्ञासा – गुरुदेव ! आगम में व्यवहार राशि, अव्यवहार राशि जैसे शब्द प्रयुक्त नहीं हुए, अपितु कई प्रमाणों से इसे नहीं मानना भी ध्वनित होता है, फिर गुणस्थान स्वरूप के थोकड़े में इस अव्यवहार-व्यवहार राशि की चर्चा क्यों की गई ?

समाधान – प्रश्न पर गहन-गंभीर मन्थन करने की आवश्यकता है। पन्नवणा सूत्र के १५वें 'इन्द्रिय पद' से स्पष्ट ध्वनित होता है कि पाँच अनुत्तर विमान के देवों को छोड़कर शेष नवग्रैवेयक तक प्रत्येक जीव अनन्त द्रव्य इन्द्रियाँ एवं भाव इन्द्रियाँ प्राप्त कर चुका है। भगवती सूत्र शतक १२ उद्देशक ७ में कहा- *"जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पिउत्ताए, भाइत्ताए, भगिणीत्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववण्ण- पुव्वे ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंत खुत्तो। सव्वजीवा वि णं भंते!"*

इसी प्रकार जीवाभिगम सूत्र की तीसरी परिपाटी के दूसरे नैरयिक उद्देशक के सूत्र - ९३ में भी कहा है- *"इमाणं रयणप्पभा पुढवी.....सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइत्ताए, नेरइयत्ताए, उववण्णपुव्वा? हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंत खुत्तो।"* इत्यादि अनेक आगम प्रमाण सिद्ध करते हैं कि समस्त जीव (५ अनुत्तर विमान को छोड़कर) जीव के ५५३ भेदों में अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं, तब अव्यवहार राशि कैसे हो सकती है।

अर्थापत्ति न्याय कहता है कि "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते।" अर्थात् देवदत हृष्ट-पुष्ट है और दिन में नहीं खाता। क्या अर्थ निकला ? पुष्टि भोजन के बिना हो नहीं सकती। दिन में खाता नहीं, तो स्पष्ट है कि रात्रि में खाता है। ठीक इसी प्रकार हम सबसे पहले एक सामान्य गणित से अव्यवहार-व्यवहार राशि को समझने का प्रयास करें। अव्यवहार राशि नहीं मानने पर निगोद की कायस्थिति अढ़ाई

पुद्गल परावर्तन में वहाँ के सारे जीव एक बार वहाँ से प्रत्येक में चले जायेंगे। वे जीव कितने हैं?

किसी भवन में कतिपय व्यक्ति रह सकते हैं। यदि प्रत्येक मिनिट में दस व्यक्ति बाहर आते हों और ६० मिनिट से अधिक कोई उस भवन में रह नहीं सकता हो तो १०x६०=६०० व्यक्ति कुल उस भवन में रह सकते हैं, ऐसा स्पष्ट आकलन सामने आता है। दस व्यक्तियों के बाहर जाने पर फिर भले ही दस व्यक्ति उसमें पुनः आ जावें, पर वे भी ६० मिनिट से अधिक नहीं रह सकते, तो निश्चित रूप से उस भवन में ६०० व्यक्ति ही रह सकेंगे। भले ही आना-जाना चलता रहे, पर किसी भी समय ६०० से अधिक व्यक्ति नहीं रहेंगे। इसी प्रकार जीवाभिगम सूत्र, पन्नवणा सूत्र पद १८ में निगोद की उत्कृष्ट कायस्थिति अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल की बतलायी है। अर्थात् अढ़ाई पुद्गल परावर्तन के पश्चात् वर्तमान में विद्यमान वहाँ के जीवों को साधारण शरीर को छोड़कर प्रत्येक में आना ही पड़ेगा। निगोद को छोड़कर बाकी सारे जीव (९८ बोल के बासठिये में ७१ वें बोल तक) असंख्यात ही हैं। निगोद के जीवों के सामने उनकी संख्या नहींवत् है। अब प्रत्येक समय में असंख्यात जीव निगोद से बाहर आ रहे हैं और अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल में निगोद में वर्तमान विद्यमान जीव साधारण को छोड़कर प्रत्येक शरीर में आ जायेंगे, फिर भले ही वे पुनः आवागमन करते रहें।

ऊपर वर्णित १०x६०=६०० के अनुरूप ही यहाँ असंख्यात (जीव) गुणित (x) अढ़ाई पुद्गल परावर्तन के समय, इतने ही जीव निगोद में अधिकतम रहेंगे। पन्नवणा सूत्र के छठे पद आदि में सिद्धों का उत्कृष्ट विरह ६ माह का बताया है। अर्थात् हर ६ माह में एक-एक जीव घटता चला जायेगा। निगोद के कुल जीवों की संख्या एक-एक करके छह-छह महीने में घटती रही तो भी असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल में तो सारे जीव मोक्ष में चले ही जायेंगे।

असंख्यात (जीव) x अढ़ाई पुद्गल परावर्तन के समय x ६ माह= असंख्यात पुद्गल परावर्तन ही होंगे। जबकि भगवती सूत्र शतक १२ उद्देशक ४, कर्मग्रन्थ, पंचसंग्रह, कम्मपयडी आदि ग्रन्थों में एक-एक जीव के अनन्त-अनन्त पुद्गल परावर्तन करने का स्पष्ट उल्लेख है। यदि अव्यवहार राशि नहीं मानी जावे तो यह लोक सारे भवी जीवों से कभी का खाली हो चुका होता। यहाँ केवल अभवी जीव ही शेष रहते। इस बात को भगवती शतक १२ उद्देशक २ में स्पष्ट रूप से देखा

जा सकता है–

जयन्ती श्राविका - हे भगवन्! क्या सारे भवसिद्धिक (भवी) जीव मोक्ष में जायेंगे ? सिद्ध होंगे ? हाँ जयन्ती! सिद्ध होंगे। हे भगवन् ! तब क्या यह लोक भवसिद्धिक जीवों से खाली हो जायेगा? भगवान् ने कहा– नहीं, जयन्ती यह अर्थ समर्थ नहीं है। अर्थात् ऐसा कभी नहीं हो सकता कि यह लोक भवी जीवों से रहित हो जाये।

कितना स्पष्ट है कि आज अढ़ाई पुद्गल परावर्तन की काल–गणना में जितने भी जीव विद्यमान हैं, वे सब व्यवहार राशि के ही हैं और उस व्यवहार राशि के सारे भवी जीव मोक्ष में चले जायेंगे। यह तो हुआ जयन्ती श्राविका के पहले प्रश्न का समाधान।

तब जिज्ञासा होना सहज था कि जब सारे भवी जीव मोक्ष में चले गये तो क्या लोक भवी जीवों से रहित हो जायेगा ? तब तुरन्त ही सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु ने समाधान दिया, ऐसा कभी संभव नहीं अर्थात् अव्यवहार राशि के भवी जीव कभी भी खाली नहीं हो सकते।

एक जीव के मोक्ष में जाते ही एक जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में प्रवेश पा लेता है, इसलिए व्यवहार राशि के भवी जीवों की संख्या भी घट नहीं सकती। इसी को सिद्धान्त पक्ष के समर्थ प्रवक्ता श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने विशेषणवती ग्रन्थ में इस प्रकार कहा है:–

सिज्झंति जत्तिया किर, इह संववहार जीव रासिओ।
एंति अणाइ वणस्सई, रासीओ तेत्तिया तम्मि ।। विशेषणवती, १५/६०

अर्थात् जितने जीव मोक्ष में जाते हैं, अनादि वनस्पति राशि (अव्यवहार राशि) से उतने ही जीव व्यवहार राशि में आते हैं। जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण का समय वीर नि० १०५५ से ११९५ तक का है तथा सैद्धान्तिक मान्यता के प्ररूपकों में उन्हें अग्रणी माना जाता है। उन्होंने व्यवहार–अव्यवहार राशि स्पष्ट रूप से बतायी है।

इसी को महापुरुष प्रश्नों के माध्यम से इस प्रकार बतलाया करते हैं –

चौभंगी–

१. जहाँ जीव बढ़ते ही बढ़ते हैं – **मोक्ष**
२. जहाँ जीव घटते ही घटते हैं – **अव्यवहार राशि**
३. जहाँ जीव घटते – बढ़ते हैं – **चार गति के जीव**

४. जहाँ न घटते हैं न बढ़ते हैं – **व्यवहार राशि के जीव**

(एक जीव के मोक्ष में जाते ही एक नया जीव आने से संख्या बराबर रहती है)

दूसरी चौभंगी –

१. जहाँ जीव जाते ही जाते हैं – **मोक्ष**

२. जहाँ से जीव आते ही आते हैं – **अव्यहार राशि**

३. जहाँ से जाते भी हैं, आते भी हैं – **व्यवहार राशि**

४. जहाँ जीव न जाते हैं, न आते हैं – **अलोक**

भगवती सूत्र शतक २८ (कर्म-समर्जन)भी इंगित करता है कि- सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिए होज्जा। अर्थात् सभी जीवों की मातृस्थान तिर्यञ्च योनि रही है। इसी प्रकार दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में भी 'तिरिक्खजोणिए' अर्थात् तिर्यञ्च को सभी जीवों की योनि कहा है। प्रकरण रत्न संग्रह (भावनगर वि. सं. १९९३) में कायस्थिति प्रकरण में कहा है –

अव्ववहारिय मज्झें, भमिऊण अणंत पुग्गल परट्टे।
कह वि ववहार रासिं, संपत्तो नाह। तत्थविय।।

अर्थात् हे नाथ ! अव्यवहार राशि में अनन्त पुद्गल परावर्तन तक भ्रमण करके, कैसे भी (सहनशीलता, अकाम निर्जरा से) व्यवहार राशि को प्राप्त किया। कहा भी है –

इक जीव मोक्ष पाया, व्यवहार में यह आया।
उपकृति है सिद्धों की, जीवन जो विकसाया।
पुद्गल के परावर्तन, गिनती भी जहाँ हारी.....

तब सहज ही जिज्ञासा उठती है कि पुरुषार्थवादी 'अप्पा-कत्ता-विकत्ता य' के सिद्धान्त वाला जैनदर्शन क्या बिल्ली के भाग्य वाला छींका टूटना मानता है? मोक्ष में जीव गया अपने पुरुषार्थ से और उसका परोक्ष लाभ मिले किसी दूसरे को। नहीं भाई, ऐसा नहीं है। निगोद से निकलने का निमित्त कारण व्यवहार राशि के एक स्थान की रिक्तता होना अर्थात् एक जीव का मोक्ष जाना भले ही हो, पर उपादान-पुरुषार्थ तो उसी जीव का है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में भी अधिगम को कारण बताया है तो क्या मात्र गुरु आदि बाह्य कारणों से सम्यग्दर्शन मिलता है ? फिर जीव का पुरुषार्थ क्या, देखें कुछ शास्त्र की गाथाएँ-

ज्ञाताधर्मकथांग अध्याय १२ में कहा-

मिच्छत्तमोहियमणा, पावपसत्ताविं पाणिणो विगुणा।
फरिहोदगं व गुणिणो, हवंति वर गुरु-पसाओ।।

अर्थात् - गन्दे नाले का पानी श्रेष्ठ (सुबुद्धिप्रधान) की कृपा से स्वच्छ बन गया, वैसे ही मिथ्यात्व से मोहित मन वाले, पापों में प्रसक्त विगुणी (दोषी) प्राणी भी श्रेष्ठ गुरु की कृपा से गुणी बन जाते हैं।

दशवैकालिक ९.१.१० में कहा है-

तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा।

अर्थात् निराबाध सुख की आकांक्षा वाला गुरुदेव की इच्छा के अनुकूल रमण करे, विचरे।

उत्तराध्ययन १/४६ में कहा है -

पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ।

अर्थात् प्रबुद्ध पूज्य पुरुष जिस पर प्रसन्न रहते हैं, उसे अर्थ-गंभीर या मोक्ष के प्रयोजनभूत विपुल श्रुतज्ञान का लाभ देते हैं। श्रीमद् राजचन्द्र जी ने आत्म-सिद्धि ग्रन्थ में लिखा है-

प्रत्यक्ष सद्गुरु सम नहीं, परोक्ष जिन उपकार।
एवो लक्ष्य थया बिना, ऊगे न आत्म-विचार।।

सन्नी जीव के लिए आत्मा के विचार में भी जिनेन्द्र का उपकार परोक्ष है। उसी प्रकार निगोद के जीव को भी निगोद की पर्याय से बाहर निकलने में मोक्ष जाने वाले का परोक्ष उपकार है। आलू, गाजर, मूला, लीलन-फूलन आदि में सहन की गई वेदना पुण्य-वर्धन का उपाय है। कायपुण्य के परिणामस्वरूप प्रत्येक नाम कर्म के उदय का प्रारम्भ यह उस जीव का स्वयं का ही पुरुषार्थ है। इसलिए अकृत आगम का भी कोई दोष नहीं आता।

कदाचित् कोई यह सोचे कि निगोद के जीव एक साथ अनन्त मरते हैं, सभी सहन करते हैं, तो फिर अनन्त में से एक ही जीव व्यवहार राशि में क्यों आता है?

कितना सरल है इसका समाधान। निगोद के जीवों की गति १७९ की बताई है। गर्भज मनुष्य के पर्याप्त में एक करोड़ पूर्व वर्ष की आयुष्य का बन्ध भी निगोद का जीव कर सकता है। भगवती शतक ८ उद्देशक ९ - प्रकृति की भद्रता, प्रकृति की विनीतता, दयाभाव और मद-मत्सर रहितता से मनुष्यायु का बन्ध बताता हैं।

तत्वार्थ सूत्र ६.१८ में भी कहा - अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं

च मानुषस्य। अर्थात्- अल्पारम्भ, अल्पपरिग्रह एवं स्वाभाविक मार्दव - आर्जव से मनुष्यायु का बन्ध होता है। सभी में समवेत रूप से जो कारण बतलाये हैं वे उस सूक्ष्म निगोद के जीव में कहाँ से आयेंगे ? अनन्त के साथ मरने वाला कोई जीव निश्चित रूप से शुभ अध्यवसाय रखता है, इसलिए भगवती सूत्र शतक - २४ में गमे के अधिकार में जघन्य स्थिति से काल करने वाले तिर्यञ्च में मनुष्य पर्याय को प्राप्त होने वाले की स्थिति में केवल शुभ अध्यवसाय ही बतलाये हैं। इसी पुरुषार्थ की बदौलत एक जीव के मोक्ष जाने से खाली हुए स्थान को वही भवी जीव भर सकेगा, जिसके स्वयं के अनन्त पुण्यवानी का उदय प्रारम्भ हो रहा हो, अनादि काल से चले आ रहे साधारण नाम कर्म का उदय रुक रहा हो और प्रत्येक नाम कर्म का उदय प्रारम्भ हो रहा हो।

तब फिर प्रारम्भ में उठाये गये पन्नवणा पद - १५, भगवती शतक १२ उद्देशक७, जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति में नरक के दूसरे उद्देशक आदि की बात को कैसे समझा जाय?

गीतार्थ, बहुश्रुत गुरु भगवन्त, अनुभवी श्रावक यही बताते हैं कि इनके साथ में कायस्थिति आदि स्थलों पर व्यवहार राशि के भवी जीवों की अपेक्षा कथन समझना चाहिये। उनमें भी इन्द्रिय पद आदि में तो व्यवहार राशि में प्रवेश पाने के बाद अनन्त काल तक ५५३ भेदों में परिभ्रमण करने वाले जीवो को ही सम्मिलित किया है। जैसे-अमरीका में जाने वाले को पहले वीजा लेना, अधिक समय तक रहने पर ग्रीन कार्ड और फिर नागरिकता मिलती है। किसी नगर में बसने मात्र से वह व्यक्ति वहाँ का नागरिक नहीं बन जाता। कुछ काल बाद ही वहाँ संघ-समाज का सदस्य बन पाता है।

भगवती शतक १२/७ जीवाभिगम ३/नरक/२ आदि में *'असइं अदुवा अणंत खुत्तो'* शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अनेक बार अथवा अनन्त बार। पहली बार आया जीव अभी गिनती में नहीं, अनेक बार वहाँ उत्पन्न होने पर अथवा इन्द्रिय पद में अनन्त बार वहाँ उत्पन्न होने पर जीव व्यवहार राशि में गिने जाते हैं। यह अर्थापत्ति न्याय से स्पष्ट है।

आगम प्रमाणों के आधार पर जो व्यवहार-अव्यवहार राशि नहीं मानने की बात कही - वह तो इसी प्रमाण से भी कट जाती है। उस राशि के नहीं होने पर वे सारे जीव अनन्त बार उत्पन्न हो चुके, फिर केवल 'अणंतखुत्तो' ही आता, 'असइं' शब्द

बढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं होती। अतः असइं (अनेक बार) शब्द स्पष्ट ध्वनित कर रहा है कि वे जीव उन - उन पर्यायों में अनन्त बार नहीं गये। अनन्त भव निगोद में करके व्यवहार राशि में आकर अनेक बार उन-उन पर्यायों में उत्पन्न हुए हैं।

९८ बोल के बासठिये में ५४,६०,७२,७३ में चार बोल शरीर आश्रित हैं, इन्हें छोड़कर ७५वें बोल तक के सारे जीव व्यवहार राशि के ही हैं। गीतार्थ गुरु भगवन्तों की धारणा है कि व्यवहार राशि ७५ वें बोल से अधिक एवं ७६वें बोल 'सिद्ध भगवान्' के अनन्तवें भाग प्रमाण होना ध्वनित होती है।

आवश्यक सूत्र की वृत्ति में मरुदेवी माता को निगोद से निकलकर प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति में आना तथा वहाँ से मरुदेवी माता के रूप में चरम शरीरी बनना बतलाया है। अर्थात् वहाँ पर भी अव्यवहार-व्यवहार राशि का कथन ध्वनित होता ही है।

प्राण के दस भेद आगम में नहीं हैं। जीवाभिगम सर्व प्रतिपत्ति और पन्नवणा १८वाँ पद कायस्थिति में साकार-अनाकर उपयोग की जघन्य-उत्कृष्ट दोनों ही कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त बतलायी है, जबकि व्याख्या-साहित्य के आधार पर सिद्धों में उपयोग एक-एक समय प्रमाण माना जा रहा है। अतः आगम के पाठों को अपेक्षा विशेष से ही समझना होता है। अर्थापत्ति न्याय से भी ऐसा ही ध्वनित होता है। इस विषय में दिगम्बर साहित्य के सन्दर्भ भी जान लें-

भव्य- *भव्य.... स च आसन्न भव्यः, दूरभव्यः अभव्यसम भव्यश्चेति त्रेधा।*

अर्थात् भव्य तीन प्रकार के हैं - आसन्न भव्य, दूर भव्य और अभव्य सम भव्य। -गोम्मटसार जीवकाण्ड-प्र./७०४/११४१/९

अभव्य सम भव्य का लक्षण - *अभव्वेसु अभव्वसमाणभव्वेसु च णिच्च निगोद भावमुवगएसु.....।*

अर्थात् जो अभव्य हैं या अभव्यों के समान नित्य निगोद को प्राप्त हुए हैं वे अभव्य सम भव्य हैं।

नित्य निगोद का लक्षण - *तत्थणिच्चणिगोदा णाम जे सव्वकालं णिगोदेसु चेव अच्छंति ते णिच्च णिगोदा णाम।* अर्थात् जो सदा निगोदों में रहते हैं, वे नित्य निगोद हैं। धवला-१४/५.६ जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष भाग - ३ पृष्ठ - ५०३।

इन सब प्रमाणों से व्यवहार तथा अव्यवहार राशि को मानना उचित प्रतीत होता है।

धारावाहिक (क्रमशः४४)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- ब्राह्मण बालक के साथ जम्बूकुमार की तुलना करते हुए सुवर्ण श्री ने कहा कि आप अपने अन्तःकरण के विवेक का उपयोग नहीं करते,अन्यथा हमारी वेदना की आग से आपका हृदय पिघल जाये। प्रत्युत्तर में जम्बूकुमार कुटुम्ब के मोह में फँसे कछुए का दृष्टान्त देते हैं और उसके माध्यम से अनादिकाल से मोह में पड़ी हुई इस आत्मा का वास्तविक स्वरूप सबके समक्ष रखते हैं। उसे सुनकर सुवर्णश्री उनके विचारों से सहमत हो जाती है। अब आगे....

इसके पश्चात् जम्बूकुमार की सातवीं स्त्री रूपश्री ने भी अपना बल आजमाने का विचार किया। वह अन्य स्त्रियों की भाँति अभिमान के साथ नहीं वरन् करुणा-भाव की साक्षात् मूर्ति बनकर आई और जम्बूकुमार के साथ आशा भरी दृष्टि से वार्तालाप करने लगी।

रूपश्री- प्राणवल्लभ ! हम अबला हैं, असमर्थ हैं। संसार में हमारा कोई स्थान नहीं है। यद्यपि श्रमण भगवान् महावीर ने स्त्रियों का स्थान ऊँचा उठाया है। चिरकाल से अपहरण किए हुए अधिकार उनकी कृपा से हमें मिल गए हैं, फिर भी आज दुनिया की दृष्टि में हमारा पद अत्यन्त हीन समझा जाता है। हमारी अपनी कोई महत्ता नहीं है, पति ही हमारा आधार है। पति के सहारे ही हमारा जीवन शान्ति के साथ व्यतीत हो सकता है, पति की प्रतिष्ठा में ही हमारी प्रतिष्ठा है। पति हमारी गति है, पति ही मति है। अतएव पति के बिना हमारा जीवन निरर्थक है, कंटकमय और तुच्छ है। आपने दया करके हमें स्वीकार किया है तो कुछ दिनों तक सुख से रहने दीजिए। कृपा कर हमारे सुख का अपहरण न कीजिए। थोड़े समय तक इतनी दया और कीजिए।

हममें न बुद्धि है, न तर्क करने की शक्ति है। हमें आप जो चाहें सो समझा सकते हैं। अतएव मैं तर्क करना नहीं चाहती, इसके अतिरिक्त हममें वह शक्ति भी नहीं है जिसके द्वारा हम बल-प्रयोग कर सकें। हमारे पास सिर्फ हृदय है। उससे अनुनय किया जा सकता है। दया के सागर ! आप के दिल में अपार दया है। समुद्र

सारे संसार को जल का दान करता है फिर भी वह कभी जल से शून्य नहीं होता। उसमें सदा ज्यों का त्यों जल भरा रहता है। आप भी दया के समुद्र हैं। यदि थोड़ी-सी दया की बूंद हमारे ऊपर भी छिटक दें तो आपकी दया में तनिक भी कमी न होगी।

भगवान् अरिष्टनेमि तीर्थंकर थे, उनका वैराग्य किसी भी सामान्य मुमुक्षु से न्यून नहीं था। वह भी विवाह नहीं करना चाहते थे फिर भी जब उनकी भाभी ने आग्रह किया तो उन्होंने उनकी बात टाली नहीं और विवाह करने की स्वीकृति दे दी थी। भगवान् नेमिनाथ भला भौजाई का आग्रह कैसे टालते? वह नीति-निपुण थे। वास्तव में जिस देश में और जिस घर में स्त्रियों को अर्धांगिनी समझा जाता है, उनकी प्रतिष्ठा की जाती है वही देश और वही गृह ऋद्धि-समृद्धि से सम्पन्न होता है। उसमें सब प्रकार से कुशल मंगल रहता है। कहा गया है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

जहाँ नारी की प्रतिष्ठा होती है वहाँ देवता अर्थात् दिव्य (लोकोत्तर) शक्ति के धारक पुरुष क्रीड़ा करते हैं। क्रीड़ा करने का तात्पर्य यह है कि वहाँ के पुरुष इतने अधिक शक्तिशाली होते हैं कि कठिन से कठिन कार्य करना भी उनके लिए क्रीड़ा के समान सरल होता है।

प्रियतम ! यही नहीं, चरम तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान स्वामी ने भी माता-पिता के आग्रह को शिरोधार्य किया था और जब तक उनके माता-पिता जीवित रहे तब तक भगवान् ने साधु-वेष धारण नहीं किया था। आप इन्हीं श्रमण भगवान् के प्रशस्त पथ पर अग्रसर होना चाहते हैं फिर भी उनके प्रतिकूल आचरण कर रहे हैं। यह कैसी विचित्र बात है ?हम लोगों के अतिरिक्त आपके माता-पिता भी आपसे इस समय दीक्षा न लेने का आग्रह कर रहे हैं। हमारे खातिर नहीं तो उनकी आज्ञा का पालन करने के ही खातिर फिलहाल आप अपना विचार कुछ दिनों के लिए स्थगित कीजिए।

जीवनाधार ! जैसे जल के बिना मछली तड़फती है, इसी प्रकार आपके वियोग की कल्पना मात्र से आपके स्नेह रूपी जल के अभाव में हम सब तड़फ रही हैं। क्या आप में इतनी उदारता नहीं है कि आप थोड़ा-सा स्नेह जल हमें प्रदान कर सकें ? यदि आपने ऐसा न किया तो आपकी हालत सिचानक जाति के पक्षी की तरह होगी, जिसका वृत्तान्त आप सुनिए-

किसी भयानक जंगल में एक सिंह रहता था। वह प्रतिदिन हिरण आदि पशुओं को मार कर अपना पेट भरता था। एक दिन उसने किसी मृग पर आक्रमण

किया और उसे मार कर तथा भक्षण करके अपनी गुफा में सो रहा था। उसके मुँह में कुछ माँस के कण लगे रह गए थे। ऐसी अवस्था में सिचानक जाति के एक पक्षी ने सिंह को देखकर उसके मर जाने का अनुमान कर लिया। वह माँस के उन कणों को खाने के लिए सिंह के पास आया। उसके साथी पक्षियों ने उसे बहुतेरा समझाया कि तू ऐसा संदेह मत कर कि सिंह के प्राण चले गए हैं, पर उसने किसी की न सुनी। वह आमिष-कणों में इतना लुब्ध हो गया था कि उसे हिताहित का विचार करना ही न सूझा। वह जल्दी-जल्दी बड़ी प्रसन्नता के साथ सिंह की ओर लपका और सिंह के फटे हुए मुँह में मजे से बैठ गया। मुँह में आमिष के जो कण लगे हुए थे उन्हें अपनी छोटी-सी चोंच से निकाल कर खाने लगा। सिचानक का चोंच मारना था कि सिंह उसी समय जाग उठा और उसने जबड़े बंद किए। चक्की के दो पाटों के बीच आया हुआ गेहूँ जैसे पिस जाता है उसी प्रकार दोनों जबड़ों के बीच पड़ कर सिचानक ने भी अपने प्राण गंवा दिए।

प्राणनाथ ! आप इस दृष्टान्त का मर्म समझ गए होंगे। आप संयम रूप सिंह के जबड़े में, स्वर्ग और मोक्ष के सुख रूपी आमिष के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए, जाना चाह रहे हैं। सिचानक के साथियों के समान आप हमारा कथन अनसुना कर रहे हैं, इसका फल सुखदायक न होगा। सिचानक की करतूत के फल का विचार आते ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। आप इस भीषण मार्ग में हठ करके प्रयाण न कीजिए। हम सब क्रीत दासी की भाँति आपकी सेवा में निरन्तर निमग्न रहेंगी। किसी भी वस्तु का अधिक खींचना श्रेयस्कर नहीं होता। जहां अधिक खिंचाव है वहाँ टूटने का भय रहता है।

विश्वास रखिए, प्राणाधार ! कुछ दिनों तक गृहस्थ-अवस्था में रहकर अधिक अनुभव प्राप्त करने से मोक्ष दूर नहीं भाग जाएगा। फिर हम सब आपका अनुगमन करेंगी। आपके अनुष्ठान में बाधक न बनकर साधक बनेंगी।

रूपश्री का यह कथन सुनकर भी जम्बूकुमार का मनमेरू रंच मात्र भी न डिगा। वह ज्यों का त्यों निश्चल बना रहा। उनकी रग-रग में वैराग्य का अमी-रस लबालब भर गया था। अतएव अब किसी दूसरे रस के प्रवेश की गुंजाइश ही नहीं रह गई थी। उनके मन से भोगानुराग एकदम निकल गया था। भोग उन्हें भुजंग के समान भयंकर प्रतीत होते थे। विषय को वह विष के समान समझ रहे थे। अतएव उन्होंने अपनी सातवीं पत्नी रूपश्री से कहा-

प्रिये ! खेद है कि तुम वस्तु के ठीक-ठीक और मूल स्वरूप को नहीं समझती हो और न समझने का प्रयत्न ही करती हो। मैं पहले कह चुका हूँ कि संसारवर्ती समस्त छोटे-मोटे जीवधारियों की आत्मा मूल में एक रूप है। न आत्मा पशु है, न पक्षी है, न मनुष्य है, न देव है, न नारकी है, न स्त्री है, न पुरुष है यह सब आत्मा के विकार हैं। यह विकार कर्म रूप बाह्य उपाधि से उत्पन्न होते हैं। जैसे सांप की केचुँली सांप से भिन्न है उसी प्रकार ये पशु, पक्षी आदि समस्त पर्यायें आत्मा से भिन्न हैं। अतएव तुम अपने को स्त्री-अबला आदि कहकर और समझ कर भारी भ्रम में पड़ रही हो। प्रत्येक आत्मा में वस्तुतः परमात्मा है। श्रमण भगवान् महावीर ने यह उपदेश दिया है कि आत्मा समस्त विकारों से मुक्त होने पर स्वयं परमात्मा पद को प्राप्त होती है।

किन्तु जब तक संसारी जीव को सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान नहीं होता तब तक वह आत्मा के असली स्वरूप को देख और जान नहीं पाता है। वह जीव और पुद्गल के मिले हुए आकार को ही देखता है और उसी को वास्तविक आत्म-स्वरूप समझ लेता है। यह सब कर्मोदय का प्रताप है। कर्मोदय से ही शरीर प्राप्त होता है और शरीर के संयोग से स्त्री-पुत्र आदि परिवार बन जाता है। कर्मोदय से जीव जिस शरीर में निवास करता है उसी रूप में अपने को मान लेता है। अतएव वह रात-दिन इन्द्रिय-सुखों में मग्न होकर उन्हीं के लिए प्रयत्नशील रहता है। सुख की ही प्राप्ति के लिए इष्ट पुत्र, कलत्र, मित्र और अनुकूल विषयों में राग करता है और प्रतिकूल पर द्वेष करता है। पर वस्तुतः यह सब आत्मा से जुड़े हैं। सभी चेतनावान् पदार्थ हमसे भिन्न हैं। सब अपने-अपने कर्म बाँधकर भिन्न-भिन्न गतियों से यहाँ आए हैं और इस जन्म में अपने-अपने भावों और कर्तव्यों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्म बाँधकर भिन्न-भिन्न गतियों में जायेंगे। इनमें से किसी को अपना मानना मानव का अज्ञान है। पति-पत्नी अथवा पिता-पुत्र आदि का जो सम्बन्ध है वह आत्मा के साथ नहीं किन्तु शरीर के साथ है। इन सबका संयोग सदा रहने वाला नहीं है। यह शरीर, जो जन्म से लेकर मरणपर्यन्त साथ रहता है, जिसको तरह-तरह के स्वादिष्ट और सुरभित भोजन-पान खिला-पिला कर पुष्ट करते हैं, जिसके लिए प्राणों को खतरे में डाल कर भी अर्थोपार्जन करते हैं, वह भी अन्त में हमें छोड़ जाता है। जब शरीर ही हमें छोड़ देता है तब शरीर के साथी पिता-पुत्र, कलत्र आदि कैसे साथ दे सकते हैं ? वास्तव में साथ देने वाला एक मात्र धर्म है। धर्म से ही समस्त प्रयोजन सधते हैं।

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

साधनों के ढेर में ढूँढ रहे हैं 'अपनापन'

श्री पदमचन्द गाँधी(थांवला वाले)

आज रिश्तों की बुनियाद कपूर की तरह बिखर रही है। अन्य रिश्ते तो क्या खून के रिश्तों में भी दरारें इतनी गहरी हो गयी हैं जिन्हें भरना नामुमकिन लग रहा है। इनका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है आज के युवावर्ग पर। आज के युवक एवं युवतियों को अपने निजी कार्यों, केरियर ओरियन्टेड वर्क, अपने स्वयं के स्टेटस सिम्बल तथा आज के अत्याधुनिक उपकरणों के उपयोग के कारण इतनी व्यस्तता है कि फुर्सत के पल निकालना कठिन हो गया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आकर्षक 'वेतन' ने कार्य क्षमता तो बढ़ाई है, लेकिन कार्य शैली है 'टारगेट ओरियेन्टेड', जिसके अन्तर्गत कार्य को निर्धारित अवधि में ही पूर्ण करना पड़ता है। ऐसा क्रम प्रतिदिन चलता है। इसके साथ-साथ आर्थिक ऊँचाइयों को छूने की लालसा ने पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों को गौण कर दिया है। परिजन भी आर्थिक प्रगति एवं घर में बढ़ते साधनों और सुखसुविधायुक्त सामग्रियों की चमक के कारण कुछ चिन्तन नहीं कर पाते हैं।

युवक अपनापन ढूँढ रहे हैं मोबाइल पर, कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट पर, कभी फोन पर, कभी वाहनों पर कभी रेस्टोरेन्टों में तो कभी फाइव स्टार होटलों में। ये सब उन्माद उत्पन्न करते हैं जिससे सुख का आभास होता है, वह भी थोड़ी सी अवधि के लिए। व्यस्तता के कारण युवाओं को जब फुर्सत मिलती है तो इतनी थकान हो जाती है कि बस फिर शय्या ही दिखाई पड़ती है। ऐसे में उन्हें कहाँ रिश्ते याद आयेंगे। वे स्वयं के रिश्ते या पति-पत्नी एवं स्वयं की औलाद के रिश्ते भी अच्छी तरह नहीं निभा पाते। अपनी स्वयं की समस्याओं का निदान भी वे आसानी से नहीं कर पाते हैं। यदि दोनों (पति-पत्नी) जॉब कर रहे हैं तो घर भी मात्र "रेन बसेरा" बन जाता है, जिसमें मात्र रात्रि-विश्राम एवं सवेरे काम पर जाना होता है।

ऐसे युवावर्ग से बुजुर्ग एवं परिवार के अन्य परिजन भी जुड़े होते हैं जो पारम्परिक विचारधारा के होते हैं तो दो पीढियों में वैचारिक मतभेद की खाई बढ़ती जाती है, जिससे अपनेपन के स्थान पर कटुता बढ़ती नजर आती है। युवावर्ग भौतिक

उन्नति के कारण अपने बुजुर्गों को नजर अन्दाज करते हैं। वे भौतिक संसाधनों की उपलब्धियों को ही सबकुछ समझने की भूल करते हैं तथा इन संसाधनों में 'अपनापन' ढूँढते हैं। वे जो सुख इनमें ढूंढ रहे हैं वह उन्हें नहीं मिल पा रहा है।

हमारे बुजुर्ग साधनों के अभाव में भी जीवन का निर्वाह, मधुर सम्बन्धों एवं संवेदनशील रिश्तों के साथ आसानी से कर लेते थे। उनकी प्रतिष्ठा की महक सम्पूर्ण 'चोकले' में फैलती थी। उन्हें 'खानदान' एवं 'घरानों' के नाम से जानते थे। नये सम्बन्ध भी मात्र खानदान के नाम से ही तय हो जाते थे। हमारे पूर्वज एक छोटे से मकान में भी १५-२० व्यक्तियों के संयुक्त परिवार का बड़ी आसानी से पालन-पोषण कर लेते थे। 'अभावों' में भी वे शान्ति, धैर्य एवं प्रेम के साथ जीवन जीने का आनन्द लेते थे, क्योंकि उनके पास आन्तरिक सम्पदा प्रचुर मात्रा में थी। अनेक परेशानियों के बीच भी सहयोग सहकार की भावना से जीवन-यापन में प्रेम का रस होता था। 'चौपाल' में बैठकर अपने दुःखों का निवारण करते हुए सुख का अनुभव कर लेते थे तथा अनेक समस्याओं का निपटारा एवं निराकरण चौपालरूपी ''ग्रुप काउन्सलिंग'' में कर लेते थे। उनकी अभावों की जिन्दगी भी बड़ी सुकून दायक होती थी, क्योंकि वे सभी भावनात्मक रिश्तों की डोर में बन्धे हुए रहते थे। जिनकी मर्यादाएँ निश्चित थी वे उन मर्यादाओं का उल्लघंन नहीं करते थे। रिश्तों की गुणवत्ता, स्थिति एवं आयु की सीमा के अनुसार वे रिश्तों में दूरियां भी बनाये रखते थे। ये दूरियां ही उनकी नियंत्रण रेखाएँ होती थीं जिनके भय से एवं उत्पन्न कठिनाइयों से वे सदैव सचेत रहते थे।

आज हम अत्याधुनिक युग में जी रहे हैं। आज हमारे पास अत्याधुनिक संसाधन, अकूत धन सम्पदा, भोजन-सामग्री, चमचमाती गाड़ियां, फाइव स्टार होटल जैसे बंगले होते हुए भी साधनों के ढेर में हम अनजान अजनबी बनकर न जाने क्या तलाश रहे हैं ? यदि 'अपनापन' ढूँढ रहे हैं तो वह इनमें कभी भी नहीं मिल सकता।

आज संसार एक भूमण्डलीय गाँव (ग्लोबल विलेज) जैसा बन गया है दूरियाँ कम हो गयी हैं, संचार क्रान्ति ने तो समस्त दूरियां ही मिटा दी है। दुनिया मुट्ठी के अन्तर्गत समा गयी है। आज सुदूर देश एवं विदेशी महानगरों का कोई कोना हमारी पहुँच से परे नहीं है। भौगोलिक दूरियां जितनी कम हुई हैं, उतनी ही दूरियां एक ही कोख से जन्म लेने वाले दो भाइयों में बढ़ती जा रही है। पड़ौसी तो एकदम

अनजान अजनबी बन गये हैं। साधनों के अम्बार में एवं सुविधाओं की विपुलता की होड़ में संवेदनशीलता के तारों से बुने इन्सानी रिश्तों एवं भावनाओं का 'अपनापन' खो गया है।

आज युवावर्ग का कार्यक्षेत्र व्यापक हुआ है, उनकी कार्यक्षमता भी बढ़ी है, लेकिन परिस्थितियों ने एवं साधनों की प्राप्ति की लालसा ने उन्हें ''बायोमशीन'' बना दिया है। युवा यंत्रवत् जीवन जी रहा है। उसके पास भावनात्मक सुकून देने वाले मार्मिक क्षण कहाँ हैं ? इनकी बुद्धि एवं कार्य क्षमता के अनुसार बोली लग जाती है। अधिक से अधिक धनोपार्जन के लिए मनुष्य एक मशीन बनकर रह गया है। अतुल सम्पदा का स्वामी होने के बाद भी अपने ही जिगर के टुकड़ों के पास कुछ पल व्यतीत करने का वक्त नहीं है। ऐसा लगता है उनके अन्दर की संवेदनशील भावनाएँ सूख गयी हैं।

आज आत्मीयता या अपनापन खो गया है, रिश्तों को भूल गये हैं, जो रिश्ते बचे हैं उनका भी 'ब्लेक मेल' हो रहा है। साधनों की इस एंकागी विकास की दौड़ में हताशा, निराशा, भावनात्मक एवं मानसिक विकार, तनाव, कुण्ठा प्रबलतापूर्वक फैल रही है। इन भौतिक उपलब्धियों ने युवावर्ग को बाह्य विकास की बुलन्दियों पर तो पहुँचाया है, लेकिन आन्तरिक विकास के अभाव में ये अधूरी, अपंग एवं काँटों के समान चुभनेवाली सिद्ध हो रही हैं। एक मुट्ठीभर 'अपनापन' पाने के लिए ये लालायित रहते हैं,आन्तरिक घुटन के शिकार हो रहे हैं, लेकिन इस पीड़ा को सुनने वाला नहीं है। 'अपनापन' ढूँढने का प्रयास रिश्तों में नहीं साधनों में किया जा रहा है। दूसरी ओर रिश्तों में भेद करते हुए उन्हें गौण किया जा रहा है, क्योंकि यहाँ पर भी व्यक्ति भावना के स्थान पर बुद्धि का उपयोग करता है, जो मात्र अपने पराये का भेद करती है, अलगाव करती है, जो 'अहं' को पनाह देती है।

यदि अपनेपन को ढूँढना ही है तो रिश्तों की बुनियाद को समझना होगा, रिश्तों को मजबूती देने के लिए त्याग करना पड़ेगा। इनकी जड़ों का सहकार, आत्मविश्वास एवं प्रेमजल से सिंचन करना होगा। आपसी विश्वास की मंजिल का निर्माण करना होगा, तभी जाकर 'कंगूरे' के रूप में अपनेपन की झलक नजर आयेगी। यदि संसाधनों के अम्बार में ढूँढने का प्रयत्न करते रहेंगे तो मात्र निराशा ही हाथ लगेगी।

'आशीष बंगलो' हरे कृष्णा सोसायटी के सामने,
गोर्धनवाडी टेकरा, मणीनगर, अहमदाबाद

उपन्यास (३)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- मित्रों के बहुत समझाने पर यज्ञदत्त ने विमला नामक सुशील कन्या से दूसरा विवाह कर लिया। उसके आने से घर की रौनक पुनः लौट आयी। धीरे-धीरे विमला ने चतुराई से यज्ञदत्त को अपने वश में कर लिया। अब आगे.....

विमला अपनी चतुराई में सफल हो गई। यज्ञदत्त जब कमला को ही भूल गया तो उसके बच्चे निर्मला और सोमदत्त भी उसके दिल से दूर होते चले गये। अब उसे उनके सुख-दुःख की चिन्ता बहुत कम रह गई थी; चिन्ता थी तो विमला के सुख की। विमला जो कहती यज्ञदत्त उसे पूरा करता, वह जो कहती, अक्षरशः उसे आँख मूँदकर स्वीकार कर लेता।

यह लोकोक्ति चरितार्थ हो रही थी कि दूसरी माता आनें से पहले ही पिता दूसरा हो जाता है। यज्ञदत्त भी अब निर्मला और सोमदत्त से दूर होता जा रहा था, उसका मानसिक रूझान दिन-ब-दिन बदलता जा रहा था, वह दूसरा पिता बनता जा रहा था।

चतुर विमला यह सब अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से देख रही थी। उसने प्रारम्भ से ही सोच लिया था - सर्वप्रथम पति के मन से पूर्व पत्नी का प्यार, उसकी याद समाप्त कर देना, और उसे अच्छी प्रकार अपने प्रेम के जाल में फँसा लेना। जब उसने समझ लिया कि पिता का प्यार अब बच्चों पर नहीं रह गया है तो उसने भी उन बच्चों के प्रति कठोर व्यवहार करना शुरू कर दिया।

लेकिन यह कठोरता और वाणी का कड़वापन पति की अनुपस्थिति में ही प्रयुक्त होता, पति के सामने तो बच्चों से ऐसी मीठी भाषा में बात करती जैसे उसका मातृत्व उमड़ रहा हो।

बच्चों के प्रति विमला के दो रूप थे-एक पति की उपस्थिति में अत्यन्त प्यार और वात्सल्य भरा तथा दूसरा पति की अनुपस्थिति में अत्यन्त कठोर, जिसमें

हृदय की कड़वाहट घुली होती थी।

वह शरीर-सुखिया तो थी ही। घर का सारा काम निर्मला से ही कराती और स्वयं पलंग पर लेटी रानी की तरह हुक्म चलाती रहती। सोमू का तो सारा काम निर्मला पर था ही।

बेचारी निर्मला बच्ची ही तो थी। काम के बोझ से थककर चूर हो जाती। कभी उसके हाथों से नुकसान भी हो जाता तो मुँह के साथ विमला के हाथ भी चलने लगते। मुँह से गाली देती, डाँटती, फटकारती और हाथों से बुरी तरह पीटती।

बेचारी बिन माँ की बच्ची सब कुछ चुपचाप सह लेती।

जब कभी यज्ञदत्त पुरोहिताई के लिए किसी दूसरे गाँव चला जाता तब तो विमला की मनमानी हो जाती और बेचारी निर्मला की शामत ही आ जाती। खाना भी भरपेट नहीं देती और काम का बोझ भी अधिक लाद देती।

इतनी चतुर थी विमला कि पति के आने पर उसका हँसकर स्वागत करती और निर्मला तथा सोमदत्त की शिकायत इस ढंग से करती कि यज्ञदत्त को वह शिकायत, शिकायत ही न लगती; अपितु यही लगता जैसे सारा दोष निर्मला और सोमू का ही हो; विमला तो बहुत ही सीधी, भोली और वात्सल्यमयी नारी हो।

कभी निर्मला पिता से शिकायत भी करती कि 'आज मुझे माँ ने मारा है' तो यज्ञदत्त उसी को डाँटता और कहता कि "तुम्ही नुकसान करती हो, काम बिगाड़ती हो, सारी गलती तुम्हारी ही है। तुम्हारी माँ तो बहुत ही सीधी और सरल है, सगी माँ से भी ज्यादा तुम्हें प्यार करती है।"

निर्मला पिता की डाँट खाकर चुप रह जाती।

इसी तरह तीन वर्ष और गुजर गये।

अब निर्मला १५ वर्ष की थी और सोमू ८ वर्ष का हो गया था।

विमला ने दो बच्चों को जन्म दिया-एक पुत्र और दूसरी पुत्री।

बच्चों का जन्म क्या हुआ; विमला के तेवर ही बदल गये। अपने बच्चों से उसे अत्यधिक प्यार था। निर्मला और सोमू तो पहले ही खारे थे अब तो वे आँख की किरकिरी बन गये। वह उन्हें देखना भी नहीं चाहती थी, वह यही चाहती थी कि ये दोनों कहीं चले जायें या मर जाएँ।

निर्मला और सोमू को तंग करने-परेशान करने का उसे अब तो और भी

बड़ा बहाना मिल गया। घर का सारा काम तो निर्मला और सोमू मिलकर करते ही थे, अब विमला के बच्चों का काम और बढ़ गया। वह अपने बच्चे निर्मला को सौंपकर उन्हें रमाने (खिलाने) को कहती और जब बच्चे चुप नहीं होते तो डाँटती-

''इतनी बड़ी हो गई। सोलहवाँ चल रहा है। बच्चे को भी चुप नहीं करा सकती। कल को ब्याह हो जायेगा। ससुराल जायेगी तो लोग मुझे ही बदनाम करेंगे कि सौतेली माँ ने कुछ भी नहीं सिखाया। मेरी बदनामी करायेगी।''

ऐसी बातें वह पति के सामने भी कह देती तो यज्ञदत्त भी उसके स्वर में स्वर मिलाकर निर्मला को ही डाँटता-

''ठीक ही तो कह रही है तेरी माँ ! तूने कुछ भी नहीं सीखा। ससुराल में जाकर मेरी बदनामी ही करायेगी तू।''

स्पष्ट ही घर में दो गुट बन गये थे। एक गुट था- यज्ञदत्त, विमला और उसके दोनों बच्चों का और दूसरा गुट था निर्मला तथा सोमू का। दोनों भाई-बहनों में अटूट प्रेम था।

यद्यपि सोमू को अपनी बहन पर होते अत्याचारों को देखकर बहुत गुस्सा आता, कभी-कभी विमला को खरी-खरी सुना भी देता; पर बदले में उसे ही पिटना पड़ता; क्योंकि विमला का पक्ष प्रबल था अतः सोमू कुछ कर ही नहीं सकता था।

यदि माँ शिकायत कर देती तो पिता भी मारता। बहन बचाने आती तो उसके भी दो-चार लात-घूँसे पड़ जाते। बाप के सामने ही अनाथ की तरह दोनों भाई-बहन पिटते।

एक दिन तो हद ही हो गई। हुआ यह कि विमला का पुत्र सुबह से ही रोता रहा और निर्मला उसे तरह-तरह से बहलाकर चुप कराती रही। लेकिन उसका रोना बन्द ही नहीं हुआ, रोता ही रहा। सुबह से दोपहर हो गई। निर्मला घर का काम भी न कर सकी, भोजन भी न बना सकी। विमला कोई काम तो करती ही नहीं थी। जब उसे आज खाने को कुछ भी न मिला तो उसने मन की भड़ास निकाली-

''आज सुबह-सुबह ही कम्बख्त निर्मला का मुँह देख लिया तो सुबह से भूखी बैठी हूँ। अन्न का दाना भी मुँह में नहीं गया।''

सोमू सुबह से देख रहा था कि उसकी बहन निर्मला बच्चे को चुप कराने के लिए परेशान है। वह कभी गोदी मे लिये घुमाती है तो कभी झूले झूलाती है, कभी

घोड़ा बनकर बच्चों को खिलाती है यो दिन भर वह उसे बहलाने में लगी रही। जब बच्चों को ख़िलाने से ही फुर्सत न मिली तो भोजन कैसे बनता। भूखा तो वह भी था। उससे न रहा गया तो उसने कह दिया-

"माँ ! कम्बख्त मेरी बहन नहीं, तुम हो और तुम्हारा यह लाड़ला पुत्र भी कम्बख्त है। तुम सुबह से पलंग तोड़ रही हो और लाड़ला चुप होता नहीं। भोजन बने तो कैसे ?"

विमला झल्ला पड़ी-

"क्या कहा ? मैं और मुन्ना कम्बख्त हैं। इधर तो आ, मैं तेरी खबर लेती हूँ।"

"नहीं आता तुम्हारे पास, क्या कर लोगी ?" सोमू ने दूर खड़े-खड़े ही मुँह मटकाकर कहा।

"आने दे, तेरे पिताजी को, उनसे शिकायत करूँगी।"

"कर देना शिकायत। सच बात तो कहनी ही पड़ेगी। तुम और मुन्ना दोनों ही कम्बख्त हो।" सोमू और जोर से बोला।

सोमू के अन्तिम शब्द, घर में प्रवेश करते हुए यज्ञदत्त ने सुन लिये। उसके गुस्से का पारा एक-दम चढ़ गया। वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था कि उसकी प्रिय पत्नी और उसके मुन्ने को कोई कम्बख्त कहे। एकदम क्रोध से गरजा-

"सोमू ! तेरी जबान बहुत चल गई है। आज मैं तुझे इतना मारूँगा कि बिल्कुल सीधा हो जायेगा।" और उसके हाथ में एक लकड़ी आ गई। उस लकड़ी से बेचारे सोमू को मारने लगा। निर्मला बचाने आई तो उसकी पीठ पर भी लकड़ी पड़ गई। बहन ने भाई को अपने अंक में छिपा लिया और पिता की मार खाती रही।

(क्रमशः)

SURPRISES ABOUT MANKIND

- They lose their health to make money and then lose their money to restore their health.
- By thinking anxiously about the future they forget the present. Thus, they live neither for the present nor for the future.
- They live as if they will never die and they die as if they had never lived.

-Ketan Surana, Surana Ki Badi Pole, Nagaur (Raj.)

नारी-स्तम्भ

प्रेम से कीजिये अपने बालकों का लालन-पालन

डॉ. भीकमचन्द प्रजापति

बालक शिक्षित, योग्य, विनम्र, सेवाभावी एवं अच्छे बनें; उनका व्यक्तित्व सभी सद्गुणों से भर जाए, उनका सर्वांगीण विकास हो, सभी माता-पिता के मन में यह भावना रहती है। माता-पिता इसके लिये अथक प्रयास भी करते हैं।

कैसे बनेंगे बालक अच्छे : बालकों का विकास काफी सीमा तक निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है-

१. गर्भकाल में आपका चिंतन
२. अबोध अवस्था में आपके भाव
३. प्रारम्भिक शिक्षा काल में आपका व्यवहार
४. बड़ी अवस्था में आपका कर्त्तव्य

इन बिन्दुओं का विशद विवेचन क्रमवार नीचे किया जा रहा है-

१. गर्भावस्था में आपका चिंतन : जब बालक अपनी माँ के गर्भ में रहता है तब उस पर विशेष रूप से माँ और सामान्य रूप से पिता के चिंतन व क्रिया-कलापों का प्रभाव पड़ता है। इसलिये उस समय माता-पिता को अच्छा साहित्य पढ़ना चाहिये, अच्छे वातावरण में रहना चाहिये, अच्छे दृश्य देखने चाहिये, अपने परिवार में प्रेम से रहना चाहिये, शांति एवम् प्रसन्नतापूर्वक सबकी सेवा करनी चाहिये। इससे उनका चिंतन अच्छा बना रहेगा। मन में बार-बार सोचना चाहिये कि हमारा बालक अत्यन्त सुन्दर, सुडोल, स्वस्थ, बुद्धिमान, यशस्वी, बहादुर, शांत व भक्त होगा।

२. अबोध अवस्था में आपके भाव : जन्म से लेकर लगभग तीन वर्ष की अवस्था तक बालक की अबोध अवस्था मानी जाती है। अबोध अवस्था में बालक पर दो बातों का प्रभाव पड़ता है - आपकी भावना का एवं स्तन-पान का।

आपकी भावना : अबोध अवस्था तक बालक के हृदय पर केवल माता-पिता की भावनाओं का विशेष प्रभाव पड़ता है, बाह्य वातावरण का प्रभाव नहीं के बराबर रहता है। माता-पिता के मन में निरन्तर यह सजीव भाव रहना चाहिये कि यह

बालक प्रभु का साक्षात् स्वरूप है। यदि आप यह भावना रखने में कठिनाई महसूस करें तो आपके हृदय में यह भाव रहना चाहिये कि यह बालक प्रभु का मेहमान है। प्रभु ने हमें अपने मेहमान की सेवा करने का सुअवसर दिया है – इस दृष्टि से हम सौभाग्यशाली हैं और हम पर प्रभु की असीम कृपा है। हम प्राप्त सामर्थ्य, योग्यता व सामग्री से इस मेहमान का लालन-पालन करेंगे। इस चिंतन से आपके बालक के कोमल हृदय पर सेवा और प्रेम के अमिट संस्कार अंकित हो जायेंगे और आप द्वारा की जाने वाली बालक की बाह्य सेवा – स्तनपान, सफाई आदि प्रभु की साक्षात् सेवा बन जायेगी।

सावधान ! आप बालक के मालिक बनकर, उसको 'मेरा' मानकर इस आशा से उसका लालन-पालन करेंगे कि यह बालक बड़ा होकर हमारी सेवा करेगा तो आप बालक की 'ममता' में फंस जायेंगे। याद रखें, बालक को 'मेरा' मानना 'ममता' नहीं हैं उसे 'मेरा' मानकर उससे सुख की आशा रखना 'ममता' है। आप उसे 'मेरा' मानें, उसकी सब प्रकार से भरपूर सेवा करें – इससे कोई हानि नहीं है। यदि आप बालक में 'ममता' रखेंगे तो आपके हृदय में उसके वियोग का भय पैदा हो जायेगा और वियोग हो जाने पर आपको भयंकर दुःख होगा। अच्छा है – आप उसे प्रभु का मेहमान मानें और उसी भावना से उसका लालन-पालन करें।

एक महान संत की वाणी पर ध्यान दीजिये – ममता की गोद में पले हुए बच्चे स्वार्थी व बेईमान होंगे, सेवक की गोद में पले हुए बच्चे सेवाभावी होंगे और प्रेमी की गोद में पले हुए बच्चे सर्वगुणसम्पन्न और परमात्मा के परम भक्त होंगे।

अपने सुख-स्वार्थ की भावना से बालक का लालन-पालन करना 'ममता' की गोद है। बालक से किसी भी प्रकार की आशा न रखकर विशुद्ध कर्त्तव्य की भावना से उसका लालन-पालन करना 'सेवक की गोद' है। बालक को प्रभु का मेहमान मानकर उसका लालन-पालन करना 'प्रेमी की गोद' है।

आपकी भावना से ही आप प्रेमी, सेवक व मोही (ममता रखने वाला) बन जाते हैं। अतः अपनी भावना को पवित्र बनाये रखें।

स्तनपान अत्यावश्यक : अबोध अवस्था में माँ का दूध ही बालक का एक मात्र भोजन होता है। दूध की व्यवस्था प्रकृति स्वयं करती है। माँ के स्तनों में दूध तभी आता है जब बालक का जन्म होता है। जो माताएँ प्रकृति की इस अनुपम व्यवस्था

का अनादर करके, अपनी शारीरिक सुन्दरता को बनाये रखने के लिये, बालक को स्तनपान नहीं करवाती हैं और अपने बालक को पशुओं या पाउडर का दूध पिलाती हैं, वे अपने अबोध बालक के साथ घोर अन्याय करती हैं। ऐसा करने से बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास में प्रबल बाधाएँ पैदा हो जाती हैं और बालक के कोमल हृदय व निर्मल मन पर स्वार्थ के संस्कार अंकित हो जाते हैं एवं माँ के शरीर में स्तन कैंसर तथा अनेक प्रकार के शारीरिक रोग उत्पन्न होने की संभावना बन जाती है। ऐसे बालक बड़े होकर स्वार्थी बन जाते हैं और वृद्धावस्था में माता-पिता का अनादर करते हैं। इस दृष्टि से स्तनपान करवाना अत्यावश्यक है। (क्रमशः)

पाठक अभिमत

जिनवाणी के दिसम्बर २००७ के अंक में संवाद स्तम्भ के अन्तर्गत आप द्वारा दिया गया समाधान अभी तक चार बार पढ़ चुका हूँ तथा और पढ़ने की चाह बनी हुई है। सुन्दर एवं सटीक समाधान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद एवं हार्दिक साधुवाद। 'जिनवाणी' उत्कर्ष पर है। आपकी श्रम-साधना सफल हो रही है। आपके सम्पादकीय, गुरु भगवन्तों के प्रवचन एवं विद्वानों के लेख हृदय को झकझोर देते हैं। अच्छी वैचारिक खुराक प्राप्त होती है। बार-बार पढ़ने पर भी नवीनता लगती है। 'जिनवाणी' के स्वाध्याय से धर्मसाधना का सम्बल मिलता है। मन में दृढ़ता आती है।

-दिलीप नागौरी, बम्बोरा

'जिनवाणी' का अक्टूबर ०७ अंक पढ़ा। आपने अपने संपादकीय में 'गांधीजी की अहिंसा' बाबत बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। आज हम गांधी व उनके कार्यों, मूल्यों, विचारों अहिंसा को भूलते जा रहे हैं, उनके नाम की रोटियाँ पकाई जा रही हैं, गाँधी के नाम की दुहाई देने वाले, उनके पदचिह्नों पर चलने की बात करने वाले उनके पद चिह्नों को हटाकर अपने पद चिह्न जमाने में लगे हुए हैं, जनता को ऐसे लोगों से सचेत होकर उनका पर्दाफास करना होगा। प्रो. सागरमल जैन का लेख पठनीय व ज्ञानवर्द्धक है उन्होंने गुणस्थान सिद्धान्त के ऐतिहासिक विकास क्रम को सिलसिलेवार लिखा है। पत्रिका विविधताएँ लिए हुई है।

-राजेन्द्र पटोरिया, सदर नागपुर

बाल-स्तम्भ

अनाथ कौन

प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० फरवरी २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

मगध राज्य की राजधानी राजगृही की शोभा में मण्डी कुक्षि उद्यान चार चाँद लगा रहा था। जन-जन को आह्लादित कर रहा था। ऊँचे-ऊँचे विशाल पेड़, हर ऋतु में खिलने वाले पुष्प एवं फल इस उद्यान में थे। तालाब में अनेक कमल खिले थे। समतल मार्ग चमक रहे थे। देश-देशान्तर से आनेवाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। यह उद्यान थके हुए पथिकों के श्रम हरण करता था। रोगियों को आरोग्य देने वाला एवं चिन्ताग्रस्त व्यक्तियों की चिन्ता दूर करने वाला तथा उन्हें प्रफुल्लित करने वाला था। उनमें आनन्द और आह्लाद का संचार करने वाला था। यह प्रदूषण को दूर कर शुद्ध सुगंधित हवा बिखेरने वाला था।

मगध सम्राट् राजा श्रेणिक अपने अंगरक्षक एवं पदाधिकारियों के साथ प्रातःकाल घोड़ों के रथ पर आरूढ होकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेने के लिए उद्यान की ओर चल पड़ा। जगह-जगह पानी की झीलें थीं। उसमें कमल ऐसे खिल रहे थे मानो उदयमान सूर्य का वे सत्कार कर रहे हो। गुलाब, चम्पक, मालती आदि पुष्प आगन्तुकों का अभिनन्दन कर रहे थे। आम्र मंजरी को खाकर कोयल कुहू कुहू करती अपने मधुर गान से श्रोताओं को आकर्षित कर रही थी। जगह-जगह अशोक, पलाश, निम्ब आदि वृक्षों में किसलय आ रहे थे एवं सघन छाया से प्रीति

उत्पन्न कर रहे थे। जगह जगह मृग शावक क्रीडा करते हुए नजर आ रहे थे। घोड़ों की टापों को सुनकर मयूर कलरव कर रहे थे। रंग बिरंगे पक्षी पंखों को फैलाकर नीलगगन में आगे बढ रहे थे। ऐसे मनमोहक प्राकृतिक दृश्य से प्रसन्न राजा श्रेणिक सौंदर्य को निहारते हुए आगे बढ रहे थे। सहसा निकुंज के पास उनके चरण थम गए।

शान्त, दान्त, सौम्य, गंभीर, ध्यान-मग्न एक संत पर उनकी दृष्टि टिकी। उनके रूप-लावण्य एवं उनका सौम्य, शान्त मुखमंडल देखकर राजा बरबस उस ओर आकर्षित हुआ। उनके आभामण्डल से निकलने वाली ऊर्जा राजा के अन्तःकरण को शान्ति-मैत्री, स्नेह-सरलता, सहजता का आभास दे रही थी। शालीनता चेहरे पर झलक रही थी। अब तक राजा का ध्यान उद्यान की सुषमा और प्रकृति के सौंदर्य पर टिका हुआ था। वह अब मुनि के सौंदर्य का पान करने लगा। उनके मन में बलात् प्रश्न उठने लगा, "आश्चर्य है कि ऐसी जवानी में इतना सुन्दर रूप होते हुए यह मुनि कैसे बने? इन्होंने संन्यास क्यों लिया ? इन्हें किस बात का अभाव था ? यह किस परिवार के हैं ? यह उम्र तो भोगविलास की है, और यह संन्यासी बने हैं। क्या इन्हें किसी ने ठगा है ? या आपत्ति में फँसकर संन्यास लिया हैं? गजब है इनकी एकाग्रता ! कितनी निर्भीकता है इनमें, कितना कठोर है इनका तप ! इस युवावस्था में संयम मार्ग पर चलना मानो खांडे की धार पर चलना है, दाँतों से लोहे के चने चबाना है। ब्रह्मचर्य का पालन करना तो महादुष्कर कार्य है।" राजा मन ही मन संकल्प-विकल्प में उलझ गया था। वह मुनि से समाधान पाने के लिए आतुर था। कब इनका ध्यान पूरा हो, कब मैं अपनी जिज्ञासा इनके सामने रखूँ और कब समाधान प्राप्त करूँ। प्रतीक्षा की सीमा समाप्त हुई। साधक मुनि का ध्यान पूर्ण हुआ। उनकी आँखे खुली, मानो गुलाब का फूल विकसित हुआ। महामुनि के नयनों ने राजा के भावों को पढ़ा। राजा महामनस्वी के दर्शन कर स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करने लगा। "आज आपके दर्शन कर मेरा जीवन धन्यधन्य हो गया" राजा के मुँह से यह शब्द सहज निकल पड़े। जिज्ञासु मुखमुद्रा देखकर मुनि बोल उठे, "क्या जानना चाहते हो ?" श्रेणिक ने कहा-"भगवन्। मेरे मन में रहरहकर यही जिज्ञासा उठ रही है कि आपने अभी-अभी यौवन की दहलीज पर कदम धरे हैं, और अभी यह संयम का कठोर मार्ग अंगीकार कर लिया। इस भोग के समय योग को ग्रहण करना कहाँ तक ठीक है ? यह तो खाने-पीने एवं ऐशो-आराम करने के दिन हैं और

आप त्याग मार्ग पर चल पड़े हैं। आपके चेहरे का तेज और वाणी का ओज आपकी सम्पन्नता एवं कुलीनता का दिग्दर्शन कराता है। फिर इस उम्र में आपने संन्यास क्यों लिया ? मैं जानना चाहता हूँ।''

''हे भद्र ! मैं अनाथ था। यह सब कुछ होने पर भी मेरा कोई रक्षक नहीं था। मैंने बहुत खोजा, किन्तु मेरा कोई नाथ नहीं बन सका। इसलिए विवश होकर मुझे संन्यास लेना पड़ा।'' राजा चौंककर बोल पड़ा, ''यदि ऐसी बात है तो मैं आपका नाथ होता हूँ, छोड़ो इस साधु वेश को और चलो मेरे साथ ! मैं रक्षक नाथ बनता हूँ। आपको थोड़ा भी अभाव महसूस नही होने दूँगा। आपके सम्मपूर्ण दायित्व को वहन करूँगा। आप सुन्दर महल में रहो, अनेक दासदासियाँ आपकी सेवा में नियुक्त कर दूँगा। जीवनभर की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी लेता हूँ।

महामुनि मुस्कुराए और बोले, ''जो स्वयं अनाथ हो, वह कैसे दूसरों का नाथ बन सकता है ? यह कैसी विडम्बना है, कि आप स्वयं अरक्षित हो और दूसरों के रक्षक बनने जा रहे हो। स्वयं अशरण भी कभी किसी की शरण हो सकता है ?''

मुनिजी के इस रहस्यमय कथन को महाराज समझ नहीं सके। वे उलझ गए तथा सोचने लगे कि लगता है मुनिजी मेरे वैभव से , बल और ऐश्वर्य से अनभिज्ञ हैं, अतः इस तरह बोल रहे हैं। मैं इन्हें अपने बल से, वैभव से परिचित करा देता हूँ।'' यह सोचकर राजा बोला, ''महात्माजी ! मैं मगध का सम्राट् हूँ। मेरा एक छत्र राज्य है, मेरे पास अनेक आधुनिक अस्त्र-शस्त्र हैं, लाखों सैनिक हैं, मेरे इशारे पर लाखों लोग चलते हैं। चतुरंगी सेना, हजारों हाथी घोड़े रथ मेरे पास हैं। मेरे बाहुबल पर यह सभी जनता सुरक्षित है। इन सभी का मैं नाथ हूँ। फिर मुझे आपने अनाथ कैसे कहा। मैं अनाथ नहीं, सबका नाथ हूँ।''

''राजन्! मैं आपको भलीभाँति जानता हूँ। आप सब कुछ होते हुए भी अनाथ हो। आप ही क्या सारा संसार ही अनाथ है, भले ही वह त्रिखण्ड का अधिपति ही क्यों न हो, चक्रवर्ती क्यों न हो। कौन किसका रक्षक या पालक बन सकता है ? व्यक्ति अपने सन्तोष के लिए मान लेता है कि मैं सब कुछ हूँ। यह उसका दम्भ है, अहंकार है। यदि इस सत्य को जानना है, तो लो सुनो ! मेरे जीवन के वृत्त को।

मैं कोशाम्बी नगरी के एक सम्पन्न घर में जन्मा हूँ। मेरे माता-पिता बहुत

धनाढ्य थे। एक दिन अकस्मात् मेरी आँखों में दर्द प्रारम्भ हुआ। असह्य वेदना बढ़ती गई, जैसे कोई शत्रु शस्त्र से प्रहार कर रहा हो। शल्यक्रिया में निपुण बड़े-बड़े वैद्य आए। मंत्रवादी-तंत्रवादी सभी आए, किन्तु कोई उस वेदना को कम नहीं कर सका। पिता ने तिजोरी के द्वार खोल दिए। मेरे बड़े भाई छोटे भाई, बड़ी-छोटी सभी बहनें नजदीक बैठ कर सेवा में जुट गई। मेरे पर अनुरक्त मेरी पत्नी हर क्षण सेवा में लगी रही, वह भी मुझे दुःख से मुक्त नहीं कर सकी। यह सब मेरी अनाथता थी। मैं इतना हताश निराश हुआ, सोचा धन-दौलत कोई दुःख से मुक्ति नहीं दे सकता। एक रात मैं यही चिन्तन करने लगा कि, इस विपुल वेदना से मुझे मुक्ति मिल गई तो कल प्रातःकाल में शान्त-दान्त आरम्भ-परिग्रह से मुक्त होकर अणगार बनूँगा। उसी शुभ चिन्तन के कारण मुझे नींद आ गई और मेरी वेदना का शमन हुआ। दूसरे दिन सभी से आज्ञा लेकर मैं दीक्षित हो गया। अपना और दूसरे जीवों का त्रस स्थावरों का अभयदाता बना।

हे राजन्! अपनी आत्मा ही वैतरणी नदी है, और आत्मा ही शाल्मलि वृक्ष के समान है, और आत्मा ही कामधेनु है और आत्मा ही नन्दनवन है। सुख-दुःख का कर्ता धर्ता और भोक्ता आत्मा ही है। अब आप समझ गये होंगे नाथ कौन और अनाथ कौन ? इन बातों को सुनकर राजा स्वयं अपने आपको अनाथ समझने लगा। मुनि के चरणों में नतमस्तक होकर अपनी भूल के लिए क्षमा माँगने लगा।

प्रश्न

१. युवावस्था में मुनि के संन्यास लेने पर राजा को आश्चर्य क्यों हुआ?

२. इस कहानी के संदर्भ में अनाथ को परिभाषित कीजिये।

३. निम्न मुहावरों के वाक्य प्रयोग कीजिये-

- खांडे की धार पर चलना।
- लोहे के चने चबाना

४. निम्न शब्दों के अर्थ लिखिये-

कृतकृत्य, दहलीज, सम्राट्, शल्यक्रिया, त्रस-स्थावर, भोक्ता।

५. सम्बन्ध बताइये। (कथानुसार)

जन-जन अभिनन्दन

पेड़	आरोग्य
पुष्प	उद्यान
पर्यटक	देश-देशान्तर
पथिक	खिलना
रोगी	ऊँचे-ऊँचे
आगन्तुक	आह्लाद
मयूर	शान्त
संत	कलरव

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-२००७] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-२००७ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बच्चू की दिवाली' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ३१ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	नेहा जैन-जोधपुर	१९.५०
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	दर्शना जैन-जोधपुर	१९.२५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	चन्द्रेश मेहता-जोधपुर	१९
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	१८.५०
	सेजल भंसाली-जलगाँव	१८
	आयुष कोटड़िया-जोधपुर	१८
	पारुल खिंवसरा-जोधपुर	१८
	कमलेश कुमार जैन-पादरू	१८

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र प्रारम्भ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण शाला, जोधपुर का नाम परिवर्तित कर "अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र" कर दिया गया है। भविष्य में पत्र व्यवहार परिवर्तित नाम से करें। इस संस्था का उद्देश्य छात्रों में नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कार निर्मित करना है। इस संस्था में ३ वर्ष से १० वर्ष तक के छात्र तथा १२ वर्ष तक की छात्राएँ भाग ले सकेंगी।

-सुभाष हुण्डीवाल, सचिव- श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-२६२२६२३

संवाद (९)

दिसम्बर २००७ की जिनवाणी में पूछे गए निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर प्राप्त हुए हैं, जो यहाँ प्रकाशित हैं-

७.प्रश्न-'अगर कोई अपनी गलती की माफी ही न माँगे और न ही उसके मन में कोई पश्चात्ताप हो तो उसे माफ करना चाहिये या नहीं?

-मीनाक्षी जैन, नागौर

डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद- १. उसे भी माफ करना चाहिए, क्योंकि माफ करने से अपने अन्दर ही सरलता आती है। सामने वाले की क्या मनः स्थिति है इसे हमें देखने की आवश्यकता नहीं। हमें माफी मांग ही लेनी चाहिए, क्योंकि हम माफी मांगने के सुफल से परिचित हैं। २. सामने वाला माफ करे या न करे, भले ही उसका आक्रोश कम न हुआ हो, किन्तु उसको क्षमा करने से अपने भाव परिणाम तो अच्छे बनेंगे ही। वैसे प्रत्येक व्यक्ति को शयन से पूर्व दिनभर में कदाचित कहासुनी या वाद-विवाद हो गया हो उससे क्षमायाचना कर ही लेनी चाहिए। ३. हमको अपने आपको देखना है, हमें क्षमा प्रदान कर अपनी आत्मा का हित करना है।

श्री नौरतन मेहता, जोधपुर- गलती, भूल या त्रुटि किसी से भी हो सकती है। भूल को भूल मानना और पुनः वैसी भूल न करना मानव की श्रेष्ठता का द्योतक है। छद्मस्थ अवस्था में गलती किसी से भी हो सकती है। गलती करने वाले को यह महसूस हो जाय कि मैंने गलती की है तो उसे मन-ही-मन पछतावा रहता है, भले ही वह माफी माँगे या न माँगे। माफी माँगना श्रेष्ठ है, गलती को गलती मानने पर मन-ही-मन पछतावा होना भी अच्छा है। क्योंकि पश्चात्ताप की अग्नि में भूल भस्मीभूत हो सकती है बशर्ते वह पुनः वैसी भूल की पुनरावृत्ति न करे।

संस्कारवान व्यक्ति अपने व्यवहार को इतना शालीन बनाए रखता है, जिससे गलती होने की संभावना नहींवत् रहती है। पूरा ध्यान रखने पर भी भूल होने की स्थिति में वह परिमार्जन हेतु क्षमायाचना करने का लक्ष्य रखता है। कभी गलती का खयाल ही न हो तो वह माफी नहीं माँगते हुए भी पुनःपुनः

गलती नहीं करता। गलती का ध्यान आने पर वह माफी भी माँगता है, पश्चात्ताप भी जताता है। पर, जो शालीन प्रकृति वाले नहीं हैं वे गलती करके भी गलती नहीं मानते। गलती है इसका पता लग जाने पर भी प्रायश्चित्त नहीं करते, क्षमायाचना नहीं करते। कुछ हैं जो गलती करके मन-ही-मन पछतावा करते हैं, ऐसे व्यक्ति यदि माफी न भी माँगे तो भी सामने वाले को माफ कर देना चाहिये। माफी देने वाला बड़ा होता है।

श्री प्रकाश सालेचा, जोधपुर- व्यक्ति अपनी गलती स्वीकार नहीं करे तथा अपनी गलती की माफी भी नहीं माँगे फिर भी हमें उसे माफ कर देना चाहिये। उस परिस्थिति में सामने वाला क्या करता है यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, हम क्या कर रहे हैं, यह सोचने का विषय है। कभी कषाय एवं अहंभाव के कारण वह किसी के सामने झुकना पसन्द नहीं करता है। परन्तु उसके पीछे हम हमारे मन में कलुषित भाव न आने दें, हमें तो क्षमाभावना के साथ अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिये। सामने वाले को माफ करने पर उसका गुस्सा शान्त होने पर वह जरूर अपनी माफी पर विचार करेगा और यह भी सम्भव है कि वह भी आपसे माफी माँग ले। उसका हृदय पवित्र करने के लिये हमें हमारी भावना को पवित्र रखने के साथ उसके प्रति उदारता बरतनी चाहिए। कहा भी गया है पापी से नहीं पाप से घृणा करो। चण्डकौशिक के दंश मारने पर भी प्रभु महावीर का करुणा-रस उस पर बरसता रहा।

नोट- इस प्रश्न के उत्तर अभी तक प्राप्त हो रहे हैं तथा कुछ विशेषज्ञ, चिन्तकों एवं सन्तों से भी अनुरोध है कि वे इस प्रश्न पर अपने समीचीन उत्तर शीघ्र प्रेषित करें ।

नया प्रश्न

८. प्रश्न-"हमारा बच्चा इतना ढीठ हो गया है कि वह अपने मन की ही करता है एवं हमारा कहना नहीं मानता है। हम क्या करें?"

-करूणा (काल्पनिक नाम)

इस प्रश्न के उत्तर हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि आगामी अंक में उत्तर सम्मिलित किए जा सकें।

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

) ***मोक्षमार्ग-प्रवचन (भाग १ से ७)***- *श्री उदय मुनि जी म.सा., प्रकाशक/प्राप्ति स्थान*-(१) *जैन बन्धु, एफ १४/१७, मॉडल टाउन द्वितीय, दिल्ली-११०००९ फोन-०११-२७४६०००५/२७४५०००४, (२) भारत जारोली, जारोली भवन, नीमच (म.प्र.) मूल्य उल्लेख नहीं*

स्थानकवासी शीतलगच्छ शिरोमणि श्री उदयमुनि जी म.सा. के प्रवचनों का प्रकाशन 'मोक्षमार्ग-प्रवचन' के १ से ७ भागों में हुआ है। श्वे. स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के पूर्व वरिष्ठ स्वाध्यायी, कानूनविद् एवं गोभक्त श्री उदयलाल जी जारोली कुछ वर्षों से उदयमुनि जी के रूप में जिनशासन सेवा कर रहे हैं। सन् २००६ के दिल्ली चातुर्मास के प्रवचनों का अल्पावधि में सात भागों में प्रकाशन चौंकाने वाला है। अध्यात्म एवं साधना के रसिक श्री उदयमुनि जी की प्रवचन-कृतियों के प्रथम भाग में सम्यग्ज्ञान से सम्बद्ध विषयों पर तथा द्वितीय भाग में सम्यग्दर्शन से सम्बद्ध विषयों पर प्रवचन संकलित हैं। तृतीय भाग में पर्युषण प्रवचन, चतुर्थ भाग में पुण्य-पाप पर प्रवचन, पंचम भाग में आस्रव-संवर तत्त्व पर, षष्ठ भाग में सम्यक्त्व की रुचियों एवं सम्यक् तप पर प्रवचन संकलित हैं। सप्तम भाग में निर्जरा, मोक्ष तथा धर्मध्यान-शुक्लध्यान का विवेचन है। प्रवचनों में निश्चय नय की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है।

ध्यान से स्वबोध-*रणजीत सिंह कूमट प्रकाशक- प्राकृत भारती अकादमी, १३ ए, गुरु नानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७, दूरभाष ०१४१-२५२४८२७, पृष्ठ-२४-१२४, मूल्य-९० रुपये, सन् २००७*

भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त श्री रणजीत सिंह जी कूमट ध्यानसाधक एवं स्वाध्यायी होने के साथ लेखक भी हैं। 'ध्यान से स्वबोध' पुस्तक में उन्होंने जैन, बौद्ध एवं योगदर्शन के ध्यान की चर्चा करने के साथ कुछ आधुनिक चिन्तकों के ध्यान-विषयक विचारों से भी अवगत कराया है। ध्यान एकाग्रता के

साथ स्वबोध एवं आत्मविशुद्धि का साधन है। लेखक ने स्वयं के बोध एवं समाधि हेतु ध्यान की महत्ता प्रतिपादित की है। आचारांग सूत्र में ध्यान, बौद्ध धर्म में ध्यान एवं विपश्यना, पातंजल योगदर्शन में ध्यान एवं समाधि आदि लेख महत्त्वपूर्ण हैं। जैन, बौद्ध एवं योगदर्शन में ध्यान का तुलनात्मक साम्य भी प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक चिन्तकों में जे. कृष्णमूर्ति निसर्गदत्त महाराज, इकहार्ट टाल, ओशो के ध्यान विषयक विचार दिए गए हैं। लेखक का मन्तव्य है कि वर्तमान में अवस्थित होना तथा वर्तमान को महत्त्व देना ध्यान की अवस्थिति है और यही समाधि की परिणति है।

Self Awareness Through Meditation :- *Ranjit Singh Kumat,* ***Publisher-*** *(1) Prakrit Bharati Academy, 13-A main malviya nagar, Jaipur-302017, Ph. 0141-2524827, 2520230, (2) Kampani Charitable Trust, 507, Tulsiani chambers, Nariman Point, Mumbai-400021, (3) Shankar Foundation, Malad Co-operative Housing Society ltd. shop no. 5, Building no. 7, Poddar Park, Poddar Road, Malad (East), Mumbai-400097*

This Book is basically a translation of Hindi Book "ध्यान से स्वबोध". But 'How to meditate – Practical Tips' is a new article which is not available in Hindi Book. It is a useful book for English readers. The book bears the forward by Dr. L.M. Singhvi.

Resetting of Disturbed Leg, Spine & Naval:- *Dr. Chanchal Mal Chordia,* ***Publisher-*** *Kalyanmal Chanchalmal Chordia Trust, Chordia Bhawan, out side jalori gate, Gole Bulding Road, Jodhpur-342003, Ph. 0291-2621454(R.) 9414134606(M.)* ***Pages-****40,* ***Price-****21/-*

It is a comprehensive and practical book for knowledge of resetting the disturbed Leg, Spine and Naval. A reader may learn the procedure to reset the Leg, Spine and Naval.

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१६)

(युवाश्रेणि के लिए अलग से १३ पुरस्कार)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (१५) का आयोजन 'जिनवाणी' के अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर २००७ के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल ५० प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, १९२ बी, मीटर गेज रेलवे कॉलोनी, बजरिया-३२२००१, सवाईमाधोपुर, फोनं. ९४६०४४१३५१** के पते पर १५ फरवरी २००७तक मिल जाने चाहिए। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः १००१ रुपये, ५०१ रुपये एवं २५१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। १०० रुपये के १० प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जायेंगे। अब ये सभी पुरस्कार १५ से ४५ वर्ष के युवा श्रेणि के उत्तरदाताओं को अलग से दिए जायेंगे। इस प्रकार पुरस्कारों की संख्या २६ हो गई है। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी अवश्य उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेज कर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

-सम्पादक

(क)मुझे पहचानो-

०१. मैं जब से धर्म पर प्रभुता करने लगी, संसार संघर्ष का क्षेत्र बन गया।

०२. मेरे अभाव में शास्त्र शस्त्र बन जाता है।

०३. मेरे कारण जीव ने अनन्त बार नरक और निगोद का सामना किया।

०४. मेरा अनुभव वास्तविक सत्य है।

०५. मुझे नहीं जाना तो कुछ नहीं जाना।

०६. मेरे बाहर और भीतर की पवित्रता के कारण ही मेरा सम्मान होता है।

०७. सूर्य किधर उगता है, किधर अस्त होता है, मुझे पता नहीं।

०८. न चल हूँ, न अचल हूँ, मैं तो बिल्कुल निश्चल हूँ।

०९. पक्खी, चौमासी, संवत्सरी, संथारे आदि के प्रसंग में विशेष रूप से मेरा वाचन होता है।

१०. ज्ञाताधर्मकथा में मुझे पावावाणियगा कहा है।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

११. खेत-घास जलाने को भी उपलक्षण से किस कर्मादान में गिन लेते हैं।

१२. आगमवाणी में खट्टी दाल के लिए प्रयुक्त शब्द बताइये।

१३. जो आकाश पाताल एक कर दे, उसका नाम क्या?

१४. संकट के संकेत किस रंग के?

१५. संसार में परिभ्रमण कराने का मूल कारण?

१६. वृद्धावस्था में विश्रांति हेतु वृद्धाश्रम बनाने वाले संयमी किस उत्तम धर्म का उल्लंघन कर रहे हैं?

१७. विप्रदेव सदा कौनसा व्रत करते रहते थे?

१८. अतीत को वर्तमान से जोड़ने की कड़ी?

१९. किसकी तार्किक सिद्धि होती है?

२०. जन्म-जरा-मरण की सरहद के पार क्या?

(ग) रिक्त स्थान भरिए-

२१. आपदा का सामना करने के लिए हिम्मत रखना मनुष्य की..... है।

२२. भटकाव में.....बड़ा कारण है।

२३. जैन दृष्टि में.....एक महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली विचारधारा है।

२४. परमाणुओं की सीधी गति.....गति कहलाती है।

२५. स्वयं का दमन ही.....दुरुह है।

२६. यह.....दुःखों की बाड़ी, उलझ उलझ मरि जाना है।

२७. जानबूझकर तोड़े गये व्रत नियमों से.....अपराध का दोष आता है।

२८. पैसा लगे न टक्का.....धर्म पक्का।

२९. ससीम लोक के चारों ओर.....अलोकाकाश है।

३०. दुराचारियों के दमन में असमर्थ राजा.....के समान होता है।

(ङ) अंकों में उत्तर दीजिए

३१. जैन साधु के वस्त्रों की मर्यादा कितने हाथों की है?

३२. आत्म-साधना करने वाला साधक कितने कारणों से वस्त्र धारण करता है?

३३. ऊपर की कितने अंगुल भूमि प्रायः अचित्त होती है?

३४. मुनि श्री वेणिचन्द्र जी ने कितने वर्ष की आयु से मात्र छाछ का सेवन किया?

३५. विश्वव्यापी आतंकवाद के निष्पत्तिस्वरूप जीवन कितनी विषमताओं से त्रस्त है?

३६. एक हल में कितने निवर्तन होते हैं?

३७. पाप प्रकृति बंध के कितने कारण हैं?

३८. कितने द्रव्य/द्रव्यों के प्रदेश परमाणु बन सकते हैं?

३९. विज्ञान की कितनी शाखाओं में प्रयोगों का माध्यम पुद्गल है?

४०. ऐसे कितने द्रव्य हैं जिनमें मात्र स्वभाव पर्याय ही पाई जाती है?

(ङ) हाँ/ना में उत्तर दीजिये।

४१. आत्मा न गुणस्थान है, न मार्गणा स्थान।

४२. सर्वभाव नियत हैं, ऐसा मंतव्य मिथ्यात्व है।

४३. परमाणु पुद्गल की अशुभ अवस्था है।

४४. धापे को धपाने वालों की कमी है, जबकि भूखों को धपाने वालों की जरूरत है।

४५. अमी अनुमान एवं आगम प्रमाण द्वारा धारणा बनाई जाती है।

४६. पुद्गलों का विस्रसा परिणमन सर्वाधिक होता है।

४७. छठे गुणस्थान के सभी योगी अनारंभी होते हैं।

४८. राग द्वेष मोह शब्द चारित्रमोहनीय के द्योतक होते हैं।

४९. समझदार आदमी भोजन में जूठा नहीं छोड़ते हैं।

५०. पाप नहीं छोड़ते हुए भी सम्यक्त्व में आयु बांधने वाला आराधक ही है।

त्रैमासिक प्रतियोगिता (१५) का शेष परिणाम

४७ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- सौ. विमलाबाई कांकरिया-जलगांव, हंसराज मोहनोत-जयपुर, शांतिलाल महात्मा-चितौडगढ़, सरोज नाहर-दिल्ली, पुष्पा हस्तीमल गोलेच्छा-ब्यावर, कु. भावना जैन-धुले, उज्जवल छाजेड़-मुकुटी, सौ. सुनीता छाजेड़-मुकुटी, सौ. योगिता खीवसरा-मुकुटी, तिलोक जैन-आचीणा, सौ. शशीकला लुणावत-नासिक, प्रमिला बोहरा-जैतारण, मोहित चौधरी-अजमेर, दर्शना जैन-जोधपुर, श्रीमती उषा चौधरी-अजमेर, सौ. राज मेहता-जबलपुर, ऋषभ जैन-बजरिया, सुनीत जैन-अलीगढ़, मोनिका जैन-सवाईमाधोपुर, शिल्पा बोहरा-रतकुड़िया, सुजाता सुमीत कर्नावट-भवानी नगर, सौ. सुनीता कोठाडिया-शहादा, कैलाश छाजेड़-जोरपुरा, सुमेर वेद-धनारीकला, मनीष जैन-बैराथलकला, देवराज-आचीणा, सौ. दर्शिका कंवर लाल जी टाटिया-जलगांव, नवरत्न ओस्तवाल-गोटन, अनिलकुमार भंडावत-उदयपुर, मधु नन्दावत-उदयपुर, मोनिका ओसवाल-उदयपुर, सुनील कुमार मल्लारा-उदयपुर, अनिल जैन-कोटा, सुरेश कुमार जैन-जोधपुर, गरिमा जैन-कोटा, कु. पूजा जी बरडिया-धुलिया, निशा लुंकड-कोटा, उषा जैन-कोटा, जम्बूकुमार जैन-जयपुर।

त्रैमासिक प्रतियोगता क्रमांक ९ से १३ के पुरस्कार प्रदाता महानुभाव

श्री बी. बुद्धमल जी बोहरा-चेन्नई (९), श्री दुलीचन्द जी कवाड़-चेन्नई (१०), श्री बस्तीमल जी श्रेणिक जी चोरडिया-चेन्नई (११), श्री कनकमल जी चोरडिया-चेन्नई (१२), श्रीमती कमला देवी दुलीचन्द जी बाघमार-चेन्नई (१३-१६)

'नन्दी सूत्र' खुली किताब परीक्षा परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित 'नन्दी सूत्र खुली किताब परीक्षा' का परिणाम घोषित कर दिया गया है। पुरस्कार प्राप्त प्रतियोगियों के नाम एवं उत्तरतालिका यहाँ दी जा रही है-

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर आगम जागृति सम्मान- २१०००/-

श्रीमती सरिता जी भण्डारी, जोधपुर

सुपर टॉप टेन आगम मेधावी सम्मान- १५००/- प्रत्येक

१. श्रीमती प्रमिला जी बम्ब-जयपुर, २. श्रीमती मंजू जी डागा-जयपुर, ३. डॉ. तारा जी डागा-जयपुर, ४. श्री राजकुमार जी बांठिया-पाली, ५. कु. अस्मिता डाकलिया-जोधपुर, ६. श्रीमती शोभा जी कोटड़िया-धमतरी, ७. श्रीमती कुसुम जी फोफलिया-जयपुर, ८. श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत-जयपुर, ९. श्री हर्षद्कुमार जी लुंकड़-शेगाव (महा.), १०. कु. मंगला जी जैन-मून्दी (म.प्र.)

प्रोत्साहन सम्मान आगम चेतना सम्मान- ५००/- प्रत्येक

१. श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर, २. श्रीमती ललिता जी मुथा-कोप्पल, ३. कु. डिम्पल जी जैन-हुबली, ४. श्रीमती मीना जी चण्डालिया-वणी, ५. कु. ज्योति जी बोथरा-रालेगांव, ६. श्री उत्सवरा जी जैन-हुबली, ७. श्री दिनेश जी मुणोत-भोपालगढ़, ८. श्री किशोर जी गोलेछा-मुम्बई, ९. श्रीमती पूनम जी जैन-फरीदकोट, १०. श्रीमती वी. किरणबाई जी बाघमार-हैदराबाद, ११. श्रीमती शशी जी भण्डारी-पीपाड़ सिटी, १२.श्रीमती प्रभा जी कांकरिया-मेड़ता सिटी, १३. श्रीमती चन्द्रकान्ता जी लुणावत-शिमोगा, १४. श्रीमती आशा रानी जी जैन-भटिण्डा, १५. श्रीमती स्नेहलता जी तातेड़-बैतुल, १६. श्रीमती पुष्पा जी बोथरा-बैंगलोर, १७. श्रीमती उषा जी सुराणा-जयपुर, १८. कु. नम्रता जी कांकरिया-जोधपुर, १९. श्री राजेन्द्रकुमार जी बागरेचा-कानपुर, २०. श्रीमती सरोज जी रूणवाल-धुलिया।

उत्तरमाला

प्रथमाक्षरी प्रश्नावली-१

१. अतीर्थंकर सिद्ध २. अभाषा ३. अनुत्तर औपपातिक ४. अभिषेक ५. अनक्षरश्रुत ६. अवधिज्ञान ७. अन्तर्द्वीपज ८. अगुरुलघु ९.अभयकुमार १०. अप्रमत्तसंयत को

११. अप्रमत्तसंयत १२. असंज्ञी/असन्नी १२. अपोह/अपोए १३. अन्तगत १४.अन्तर्मुहूर्त्त में १५. अकर्मभूमि १६. अरिहन्त प्रभु १७.अमूढदृष्टि १८. अज्ञानवादी १९.अज्ञायिक/ अजाणिया परिषद्/अजानकार परिषद् २०. अवग्रह

द्वितीयाक्षरी प्रश्नावली – २

१.साधारणा २.धारणा ३.रस परित्याग ४.समुद्देशन ५.मनःपर्यवज्ञान ६.निरावरण ७.रामायण ८.मूल प्रथमानुयोग ९. लोहित्याचार्य १०.हुंकार ११.कायोत्सर्ग १२.यशोभद्र १३.शैल/शेलघन १४.लक्षण १५.क्षायोपशमिक

संक्षिप्त उत्तर प्रश्नावली – ३

१. जघन्य अवधिज्ञानी २. अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष/नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष ३.श्रुतज्ञान ४. काल ५. आपत्तियों का ६. श्रवणता ७. असंज्ञी/असन्नी ८.गमिक/सभी नय दृष्टियों का कथन ९. श्रुतस्कंध १०.तेवीस ११. केतुभूत १२. व्यंजन १३. ७से१२ १४.ज्ञायिका/जानकार १५.अहीर–अहीरन

आद्य अक्षर प्रश्नावली – ४

१. कर्ज २.कलाचार्य ३.कंदरा ४. कलह ५. कठोर ६. कब ७. कपड़े ८. कम्पिलपुर ९. कल्याण १०. करना ११. कषाय १२. कल्पवृक्षों १३. कष्ट १४.कपटी १५. कन्या १६. कल्पना १७. कस्तूरी १८. कथन १९. करण सत्तरी २०. करके/करने

मध्याक्षरी प्रश्नावली – ५

१. गमिक २. महाविदेह ३. विमर्श ४. महानिशीथ ५. निशीथ ६. शासनकाल ७. नमिराजर्षि ८. रजोहरण ९. हितार्थ १०. तहत्ति ११. हुँकार १२. केवलज्ञान १३. लक्षण १४. क्षायिक १५. यवन १६. वाचना १७. चरण १८. रानियों १९. नाक का मैल/नगर की नालियाँ २०. कालिक सूत्र

अन्तिम शब्द प्रश्नावली – ६

१.अनुगमन २. ज्ञान ३. अहीरन ४. नन्दनवन ५. धन/बहुमान ६. वन ७. आगमन ८. प्रयोजन ९. मलिन १०. शासन

अर्थ बताइये प्रश्नावली – ७

१.अक्षरश्रुत २.नोइन्द्रिय ईहा/अनिन्द्रिय ईहा ३.अंगूठी/क्षुल्लक ४.नैषेधिकी ५.उपधारण ६.ऋजुसूत्र ७.पृष्टापृष्ट ८.अवन्ध्य ९.गमिक १०.शाश्वत ११.शौच के पात्र पतद्ग्रह(प्रतिग्रह) १२.स्थित किया/कंठस्थ किया १३.बढ़ई १४.ग्रन्थि १५.जीव वृद्धि पद

परस्पर सम्बन्ध पत्रावली – ८

१.साढू-साढू २.मौसा-भानजा ३.पुत्री-माता ४.पति-पत्नी ५.पुत्र-माँ ६.भाई-भाई ७.पिता-पुत्र ८.पति-पत्नी ९.माता-बेटा १०.गुरु-शिष्य ११.नाना-दोहिता १२.मित्र-मित्र १३.पुत्र-माता १४.पति-पत्नी १५.भाई-भाई १६. मित्र-मित्र १७.राजा-मन्त्री १८.भाई-बहिन १९.पिता-पुत्री २०.बहिन-बहिन

नोट : उपर्युक्त प्रश्नावली के प्रथम शब्द से ही परस्पर संबंध लिखना था।

ज्ञान गुलदस्ता प्रश्नावली – ९

१.अंगप्रविष्ट/अंगसूत्र २.महाविदेह क्षेत्र में ३.सुना हुआ/छद्मस्थों का ४.आगम/वीतराग वाणी/प्रणीत वाणी ५.दो ६. नौ ७.अवाय ८.प्रतिष्ठा ९.ईहा १०.ज्ञान ११.संज्ञाक्षर १२.अनक्षर श्रुत १३.अव्यक्त १४.त्रैराशिक १५.प्रतीति १६.आवश्यक सूत्र १७.आवश्यक सूत्र १८.दुःख विपाक १९.श्रुत ज्ञान २०.बुद्धि

मुझे पहचानो प्रश्नावली – १०

१.तुम्ब २.सुधर्मा स्वामी ३.भद्रबाहु ४.आर्य श्याम ५.मगशैलिया/मुद्गशैल ६.हंस ७.मेढा ८.श्री कृष्ण ९.गोशीर्ष चन्दन से बनी भेरी १०.ज्ञायिका परिषद्/जाणिया परिषद् ११.मनःपर्यवज्ञान १२.केवलज्ञान १३.प्रतिपाति अवधिज्ञान १४.मति,श्रुत, अवधि और मनःपर्यवज्ञान १५.आनुगामिक अवधिज्ञान १६.पार्श्वतःअन्तगत अवधिज्ञान १७ समूर्च्छिम मनुष्य १८.अकर्मभूमि/अन्तर्द्वीपज १९.मिश्र दृष्टि जीव २०.वैनयिकी बुद्धि

शब्द भेद प्रश्नावली – ११

१.राजा श्रेणिक के पुत्र का नाम २.नपुसंक(लिंग/शरीर) रहते हुए जो सिद्ध हुए ३.आनन्द, हर्ष और प्रमोद को नन्दी कहते हैं ४.स्वामी के साथ चलने वाला ज्ञान आनुगामिक अवधि ज्ञान है ५.वैनेयिकी बुद्धि को स्पष्ट करने वाले पन्द्रह दृष्टान्तों में से एक ६.अश्रुत मिश्रित मतिज्ञान को प्रज्ञा कहते हैं/बुद्धि का पर्यायवाची शब्द अथवा विशिष्ट क्षयोपशम जन्य यथार्थ पर्यालोचना ७.गोशालक मत के ग्रन्थ ८.सकल नय से तत्वों का व्यवस्थापन करना(स्थापना) ९.आत्मा को विशुद्ध करने वाला प्रायश्चित्त १०.ज्ञानी आदि के प्रति भक्ति-भाव का होना।/आचार के भेद में से एक भेद ११. प्रत्येक पदार्थ को एकान्त नित्य मानना १२. अंगूठे से ही प्रश्न के शुभाशुभ फल का सुनाई देना १३.विप्रजहन श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह भेदों में से एक भेद १४. पूर्वगत के चौदह भेदों में से एक भेद का नाम/सुकृत अथवा दृष्कृत कर्मों का नियम से शुभ अथवा अशुभ फल प्रदान होने का वर्णन १५.तीन शुभ लेश्याओं से रंगे हुए चित्त को १६. ४८ मिनिट के १,६७,७७,२१६ वे भांग को आवलिका कहते हैं। एक आवलिका असंख्यात

समय की होती है १७.पूर्ण ज्ञान न होते हुए भी अपने आपको पंडित मानने वाली परिषद १८. जलौका के समान समाधि उपजाने वाले श्रोता पात्र को ज्ञान दिया जाएं अथवा विकृत रस चूसने वाला एक जलचर जंतु १९. वर्तमान में बंधने वाले कर्म को रज कहते हैं। २०.दर्शनाचार के आठ भेदों में से एक/परदर्शन की आकांक्षा नहीं करना।

नोट : उपर्युक्त प्रश्नावली के उत्तर भावों/अर्थों को समझकर भी मान्य किये गये हैं।

कथन प्रश्नावली–१२

१.अभयकुमार ने अपने पिता श्रेणिक से २.युवकों से राजा ने कहा ३.महावीर प्रभु ने चण्डकौशिक से कहा ४. ब्रह्मदत्त कुमार ने घबराकर वरधनु से पूछा ५. किसान ने चोर से पूछा ६.पुण्यहीन व्यक्ति ने राजा से कहा ७.अविनीत शिष्य ने गुरु से कहा ८.रोहक ने विनय पूर्वक राजा को उत्तर दिया ९.राजा ने गाँव वाले लोगों से कहा १०.रोहक ने नगरी के राजा को टोकते हुए कहा ११. व्यापारी ने श्रेणिक से पूछा १२.बौद्ध भिक्षु ने जैन मुनि से कहा १३.सरल स्वभावी दूसरे मित्र ने कपटी मित्र को सान्त्वना देते हुए कहा १४.राजकुमारों ने आचार्य से कहा १५.जुआरी ने भिक्षु से कहा १६. राजा ने गाँव के लोगों को आज्ञा देते हुए कहा १७.व्यापारी की पत्नी ने व्यापारी से कहा १८.किसान ने चोर से कहा १९. गुरु ने (घृणित) असहनीय कृत्य पर कुपित होकर शिष्य से कहा २०.व्यक्ति ने स्वयं विचार किया

नोटः उपर्युक्त प्रश्नावली के उत्तर भावों/अर्थों को समझकर भी मान्य किये गये हैं।

निर्णय प्रश्नावली – १३

1.(x) 2.(✓) 3. (✓) 4. (x) 5. (✓) 6. (✓) 7. (x) 8. (✓) 9. (✓) 10.(x) 11. (x) 12. (x) 13. (✓) 14. (x) 15. (✓) 16. (x) 17. (✓) 18. (✓) 19. (✓) 20. (x)

संख्या प्रश्नावली–१४

(१)२४ (२)८००० (३)४ (४) ४५,००,००० (५) १५ (६) ८४,००० (७)८ (८)१३ (९) ३३ (१०)३,५०,००,००० (११) ७२,००० (१२) १८,००० (१३) १२ (१४) ३३६ (१५) २१ (१६) ५ (१७) ७ (१८) २,००,०००,०००,०००,००० (१९) ५६ (२०) १४,०००

विशेष आकर्षण प्रश्नावली – १५

१.जातिस्मरण ज्ञान २. नौ योजन ३. अन्तरकाल/विरहकाल ४.क्षेत्र ५.अनवस्थित अवधिज्ञान ६. ज्ञान ७.दर्शन ८. प्रमाद ९.मिश्रदृष्टि १०.केवलज्ञान ११. क्रियावादी १२. अंगबाह्य १३.विपुलमतिज्ञान १४. केवलदर्शन १५.अर्थावग्रह

संकेत प्रश्नावली – १६

१. कम्बल २.मण्डप ३. दर्पण ४. गज ५. रस्सी ६. स्नान ७. मोती ८. पत्थर ९. कौआ १०. काल

जोडी मिलाइये प्रश्नावली – १७

१. अः २.अं ३.औ ४.ओ ५.अ ६. आ ७ इ ८ ई ९.उ १०.ऊ ११. ए १२.ऐ १३. ज १४.ङ १५.च १६.छ १७. क १८. ख १९. ग २०. घ

पारिभाषिक शब्द प्रश्नावली – १८

१. व्यंजनाक्षर २. संज्ञाक्षर ३. वासना ४. बुद्धि ५. मिथ्यात्व ६. संज्ञी/सन्नी ७.स्पर्शेन्द्रिय लब्ध्यक्षर ८. अवाय ९. घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष १०. प्राज्ञातं ११. अपर्याप्त १२. प्रतिपातिक अवधिज्ञान १३. एकेन्द्रिय जीव १४. निर्वृत्ति १५. पर्यालोचन १६. शुश्रूषा, सुस्सूसइ १७. गोचर १८. वृत्ति परिसंख्यान १९. निर्युक्ति २०. अगमिक

अंक प्रश्नावली – १९

(१) ७ (२) १६ (३) १७ (४) २० (५) ४ (६)८ (७) ९ (८) १९ (९) ११ (१०) १५ (११)१ (१२)२ (१३)१० (१४)१८ (१५)१३ (१६) ६ (१७) ५ (१८)३ (१९)१२ (२०)१४

'शब्द जाल' प्रश्नावली – २०

१. मूल प्रथमानुयोग २. निरयावलिका ३. नाक साफ करना ४. सुणेइ ५. कर्म प्रवाद ६. सामायिक ७. प्रभावना ८. गमिक ९. अवग्रह १०. शेलघन

गुरु फरमान प्रश्नावली – २१

१. गुण प्रत्ययिक २. रूपी ३. अपोह ४. सुहस्ती ५. गणिका ६. हीयमान ७. गृहस्थलिंगसिद्ध ८. संयतासंयत ९.महाविदेह १०.मशक ११. सादिक/साइयं १२.मार्गणता १३.भव प्रत्ययिक १४. एक सिद्धा १५. स्वाध्याय १६. ध्यान विभक्ति १७. अवाय १८. विमर्श १९. शेलघन २०. विषय

गुरु आह्वान प्रश्नावली – २२

१. गुण २. लोक गुरु ३. अल्पग्राही ४. चौरासी हजार ५. त्रिलोकातिशायी ६. अभयकुमार ७. संग्रहनय ८. असंज्ञी ९. बलदेव/मरुदेवी १०. शकटार/शकढ़ाल ११. अव्यय १२. सत्यप्रवाद १३. विनय १४. अमुत्तेसुमुत्तसण्णा १५. अव्यक्त १६. जो ज्ञान का विषय हो १७. सातावादी १८. नमिराज ऋषि १९. देव वाचक २०. क्षयोपशमिक

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

१ जनवरी २००८ की स्थिति

१. परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ५	सतारा विराजमान हैं, पूना की ओर विहार संभावित
२. परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४	पीपाड़ शहर विराजमान हैं, जोधपुर की ओर विहार संभावित।
३. सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा ३	जयसिंहपुर विराजमान हैं, पूना की ओर विहार संभावित।
४. साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा १०	शास्त्रीनगर, जोधपुर विराजित हैं, शहर क्षेत्र की ओर विहार संभावित
५. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४	चांचियावास विराजित हैं, किशनगढ़ के आसपास के क्षेत्रों में विहार संभव।
६. तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६	सकारण पीपाड़ विराजित हैं।
७. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७	राजनांद गांव से २५ कि.मी. दूर टुमरी बोर्ड विराजित हैं, नागपुर की ओर विहार संभावित।
८. विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७	टुमकुर विराजित हैं, टिपटुर की ओर विहार संभावित।
९. विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४	स्वरूप नगर, कानपुर विराजित हैं, आगरा की ओर विहार संभावित।
१०. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर म.सा. आदि ठाणा ११	मानसरोवर, जयपुर विराजित हैं, अजमेर की ओर विहार संभावित

११.व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ६	नवलगुंद विराजित हैं, बागलकोट की ओर विहार संभावित
१२.व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३	पालनपुर विराजित हैं, अहमदाबाद की ओर विहार संभावित
१३.व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३	अरसीकेरे विराजित हैं, बैंगलोर की ओर विहार संभावित।
१४.सेवाभावी श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४	जयसिंहपुर विराजित हैं, इचलकरंजी की ओर विहार संभावित।

आचार्यप्रवर का कर्नाटक से महाराष्ट्र प्रदेश में पदार्पण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ बीजापुर से कर्नाटक के सीमान्त क्षेत्र के ग्राम-नगरों में ज्ञानगंगा प्रवाहित करते हुए १ दिसम्बर को कणभडी एवं मुचण्डी की कर्नाटक सीमा पार कर महाराष्ट्र के सांगली जिले में पधारे। वहाँ से मध्यवर्ती ग्राम-नगरों को पावन करते हुए ११ दिसम्बर को आपका ताल्लुका मुख्यालय तासगांव पदार्पण हुआ। बीजापुर से तासगांव तक विहार-सेवा में बीजापुर संघाध्यक्ष श्री नन्दलाल जी रूणवाल, उपाध्यक्ष श्री दीपचन्द जी रूणवाल, युवारत्न श्री नरेश जी रूणवाल, श्री नरेन्द्र जी रूणवाल आदि सेवाभावी श्रावकों की अनुकरणीय सेवाएं रही। विहार-सेवा में माधवनगर के श्री प्रवीण जी रूणवाल, श्री दीपक जी रूणवाल, श्री पीयूष जी मेहता आदि युवकों की भी सराहनीय सेवाएं रही। तासगांव के श्री चम्पालाल जी मोहनलाल जी कोटेचा ने विहार-सेवा के साथ स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा का अपूर्व लाभ लिया, वहीं कोटेचा परिवार के नौ दम्पतियों ने शीलव्रत का खंद कर अनुपम आदर्श उपस्थित किया। तासगांव की बहिनें जो घर पर सामायिक करती हैं, उन्होंने धर्मस्थान में आकर सामायिक करने का आचार्यप्रवर से नियम अंगीकार किया।

आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सत्संग-सेवा की भावना से सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु भी पहुँचते हैं। अलीगढ़ के सरपंच एवं रत्नसंघ के

श्रावकरत्न श्री गोपाल जी वैद्य, कोटा के श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, कुशतला के श्री सुरेश जी, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला आदि महानुभावों ने विहार-सेवा का लाभ तो लिया ही, विहार में दो दिन की दयाव्रत साधना का आदर्श भी उपस्थित किया। वीर पिता श्री अमरचंद जी लोढ़ा ने दस दिन विहार सेवा का लाभ लिया।

आचार्यप्रवर १६ दिसम्बर को तासगाँव से विहार कर लांडगोल, भारतीय विद्यापीठ प्रशाला, पलूस, कुंडल, ताकारी, भवानीनगर, शेरे शेणोली, बडगांव हवेली होते हुए २० दिसम्बर को कराड़ पधारे। तासगाँव से कराड़ तक की विहार सेवा का तासगाँव वासियों ने पूरा लाभ लिया। संयोग से १९ दिसम्बर को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री श्री आर. आर. पाटिल सड़क मार्ग से गुजरते हुए आचार्यप्रवर के साथ विहार में साथ रहे तथा दर्शनलाभ एवं मांगलिक श्रवण से अपने को कृतार्थ अनुभव किया। यहाँ ३ दिन विराजे। श्रद्धाभिभूत श्राविका बहिन दीना श्री पृथ्वीराज जी बीसा सहित समस्त गुजराती भाई-बहिनों ने पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि का लाभ लिया। उन्होंने अन्तर्मन की भावना से उम्ब्रज तक आतिथ्य सत्कार का भी लाभ लिया। २३ दिसम्बर को कोयना, डेयरी होते हुए २५ दिसम्बर को काशिल पधारे। यहाँ से २८ दिसम्बर को सतारा पदार्पण हुआ तथा नववर्ष पर यहाँ विराजकर पूना की ओर चरण बढ़ाएँ हैं।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण भी समय-समय पर दर्शन-वन्दन की भावना से सेवा में पहुँचे और विहार सेवा सहित व्रत-नियम अंगीकार करने का लक्ष्य रखा। विहार सेवा का दृश्य अनुपम रहता है। विहार सेवा में साथ चलने वाले श्रावक मुँह पर मुँहपत्ति बांधे पाद-विहार करते हैं, जिससे आचार्यप्रवर का विहार जंगल में मंगल कहावत चरितार्थ करता है। गाँव-गाँव और नगर-नगर में शासन की अपूर्व प्रभावना हो रही है। जैन-जैनेतर समुदाय सत्संग-सेवा और संत-समागम के सुयोग का उपयोग कर रहा है। मुम्बई के शीर्ष पदाधिकारी एवं युवारत्न बन्धु विहार सेवा का क्रम से नियमित लाभ ले रहे हैं।

आचार्यप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है, विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है। चातुर्मास के पश्चात् लगभग २५० कि.मी. का विहार हो चुका है।

सम्पर्क सूत्र– श्री पारसचन्द जी हीरावत, अध्यक्ष- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, १३०१, पंचरत्न बिल्डिंग, ओपेरा हाउस, मुम्बई-४००००४, फोन-०२२-२३६३०३२०, २३६३०९७०(ऑ.), २३६९६६२२६, २३६३७३२०(घर), ०९८२१०१३५३०, फैक्स-०२२.२३६३१९८२, ईमेल–dpe1990@hotmail.com

एक वर्ष में १०० से अधिक शीलव्रत के खंद

आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपनी आयु जितने शीलव्रती बनाने का संकल्प कर रखा है। वि.सं. २०६४ में बीजापुर चातुर्मास सहित वर्ष भर में जिन दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया, उनके नाम इस प्रकार हैं-

१.श्री नेमीचंद जी चोरडिया–जलगाँव, २.श्री विजयराज जी धारीवाल–कोलार, ३.श्री सोहनलाल जी सुराणा–विजयपुर ४.श्री गजराज जी बोहरा–दोड्डबालापुर, ५.श्री तेजराज जी मकाणा–दोड्डबालापुर, ६.श्री शान्तिलाल जी झाड़ मुथा–अरसीकेरे, ७.श्री नेमीचंद जी नाहर–जयपुर, ८.श्री घीसूलाल जी बोरा–बाणावर, ९.श्री घेवरचन्दजी बोहरा–बाणावर, १०.श्री नंदलाल जी बाघमार–बैंगलोर, ११.श्री शांतिलाल जी मेहता–शिवमोग्गा, १२.श्री शांतिलाल जी चौपड़ा–कोप्पल, १३.श्री चन्द्रकांत जी सुराणा मंत्री–कोप्पल, १४.श्री धर्मीचंद जी तालेड़ा–कोप्पल, १५.श्रीलालचंद जी मुथा–कोप्पल, १६.श्री फूलचंद जी मुथा–कोप्पल, १७.श्री यशवन्तराज जी मुथा–कोप्पल,१८. श्री शांतिलाल जी सुराणा–कोप्पल, १९.श्री ऋषभकुमार जी मुथा–कोप्पल, २०.श्री भंवरलाल जी सुराणा–कोप्पल, २१.श्री अशोककुमारजी तालेड़ा–कोप्पल, २२.श्री महावीरचंद जी जॉगडा–कोप्पल, २३.श्री अमृतलाल जी चौपड़ा–कोप्पल, २४. श्री चंपालाल जी श्रीश्रीमाल–होसपेट, २५.श्री मोहनलाल जी विनायकिया–होसपेट, २६.श्री छगनलाल जी पाड़लेचा–कमलापुर, २७. श्री हीरालाल जी चौपड़ा–गंगावती, २८.श्री धनराज जी हुण्डिया–गंगावती, २९.श्री तखतराज जी चौपड़ा–गंगावती, ३०.श्री धर्मीचन्द जी बम्ब–गंगावती, ३१.श्री धर्मीचन्द जी बोथरा–मुम्बई, ३२.श्री चंदनमल जी बाघमार–गदग, ३३.श्री जबरचंद जी बम्ब–सिंघनूर, ३४.श्री गणेशमल जी रूणवाल–मानवि, ३५.श्री बलवंतराज जी मुथा–रायचूर, ३६.श्री अशोक कुमार जी दस्तरी–रायचूर, ३७.श्री मदनलाल जी चतुर–रायचूर, ३८.श्री मोहनलाल जी भण्डारी–रायचूर, ३९.श्री राजेन्द्र जी लोढा–महामंदिर,जोधपुर, ४०.श्री तेजराज जी संचेती–रायचूर, ४१.श्री चंपालाल जी चतुर–रायचूर, ४२.श्री धर्मीचन्द जी चतुर–रायचूर, ४३.श्री सौभागमल जी भंडारी–रायचूर, ४४.श्री विजयराज जी भंडारी–रायचूर, ४५.श्री शांतिलाल जी बोहरा–रायचूर, ४६.श्री पारसमल जी सुखाणी–रायचूर, ४७.श्री भीखमचंद जी भंडारी–रायचूर, ४८. श्री इन्दरचंद जी सुराणा–शोरापुर, ४९.श्री धर्मीचंद जी बाघमार–शोरापुर, ५०.श्री गोपीलाल जी जोशी–शोरापुर, ५१.श्री सत्यनारायण जी बोरा–शोरापुर,

५२.श्री शांतिलालजी सिंघवी- शोरापुर, ५३. श्री भीखमचंद जी सुराणा-शोरापुर, ५४.श्री रतनलाल जी पोरवाल-शोरापुर, ५५. श्री मांगीलाल जी टवाणी-शोरापुर, ५६.श्री परसरामजी टवाणी-शोरापुर, ५७.श्री विजयराज जी छाजेड़-शोरापुर, ५८.श्री संपतराज जी सोलंकी-यादगिरी, ५९. श्री शांतिलाल जी धोका-यादगिरी, ६०. श्री रतनलाल जी धोका-यादगिरी, ६१.श्री हुकमीचंद जी सोलंकी-यादगिरी, ६२. श्री रमेशचंद जी आंचलिया-शोरापुर, ६३.श्री जवरीलाल जी मकाणा-शोरापुर, ६४.श्री शांतिलाल जी आंचलिया-शोरापुर, ६५.श्री घौडीराम जी रूणवाल-बीजापुर, ६६.श्री प्रवीणकुमार जी रूणवाल-बीजापुर, ६७.श्री सुखलाल जी रूणवाल-बीजापुर, ६८.श्री सोहनलाल जी रूणवाल-बीजापुर, ६९.श्री मुरली वासुदेव कुलकर्णी-बीजापुर, ७०.श्री आनन्द भीमराव कुलकर्णी-बीजापुर, ७१.श्री टीकमचंद जी रूणवाल-बीजापुर, ७२.श्री सुभाषचंद जी रूणवाल-बीजापुर, ७३.श्री किशनचन्द जी कातरेला-बीजापुर, ७४.श्री पारसमल जी बोथरा-वल्लारी, ७५.श्री विजयकान्त जी रूणवाल-बीजापुर, ७६.श्री धनराज जी रूणवाल-बीजापुर, ७७. श्री दगडूलाल जी रूणवाल-बीजापुर, ७८.श्री भीखमचंद जी बाघमार-गजेन्द्रगढ, ७९.श्री पदमचंद जी मेहता-इचलकरंजी, ८०.श्री सागरमल जी छाजेड-अड्यार, चेन्नई, ८१.श्री अशोक जी बाघमार-गजेन्द्रगढ, ८२.श्री हुक्मीचंद जी रूणवाल-बीजापुर, ८३.डॉ. उदयराज जी रूणवाल-हुबली, ८४.श्री महेन्द्रकुमार जी बाघमार-बैंगलोर, ८५.श्री धनराज जी बाघमार-गजेन्द्रगढ, ८६.श्री सोहनराज जी चोपड़ा-जोधपुर, ८७. श्री गजराज जी नाहर-चैन्नई, ८८.श्री बाबुलाल जी जैन लहसोड़ा वाले-सवाईमाधोपुर, ८९.श्री सागरमल जी बाफणा-राजाजीनगर बैंगलोर, ९०.श्री मोहनलाल जी चोरडिया-इन्दौर, ९१.श्री पारसकुमार जी जैन-आलनपुरवाले नवसारी, ९२.श्री श्यामसुन्दर जी भूतडा(माहेश्वरी)-बीजापुर, ९३.श्री देवप्पा धंदरप्पा-बीजापुर, ९४.श्री जीतमल सा जैन-बंगारपेट, ९५.श्री माणकचंद जी सा सांड-जलगांव, ९६.श्री कांतिलाल जी-मालेगांव, ९७.श्री बलवंतलाल जी-औरगांबाद, ९८.श्री अशोककुमार जी सुराणा-बांगलकोट,९९. श्री कांतिलाल जी बोहरा-बलगानूर, १००. श्री रमणिकलाल जी रूणवाल-बीजापुर, १०१.श्री सुगनचन्द जी बोथरा-किलपॉक-चैन्नई, १०२. झुण्डप्पा सातवरिप्पा अड़की-बीजापुर

उपाध्यायप्रवर का पीपाड़ पदार्पण

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ भोपालगढ़ से हीरादेसर, बिरामी, बिराई आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए २ दिसम्बर को बावड़ी पधारे।

उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य में बावड़ीवासियों ने जिनवाणी का पान तो किया ही, सत्संग सेवा का सुअवसर पाकर धर्मध्यान में भी अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। दिनांक १२ दिसम्बर को बावड़ी से विहार हुआ। सेवकी, बुचेटी, बुड़किया, अरटिया, कूडी, भुनाणा आदि ग्राम-नगरों को स्पर्श करते उपाध्यायप्रवर का २२ दिसम्बर को पीपाड़ मंगल प्रवेश जय-जयकारों के साथ हुआ।

उपाध्यायप्रवर के पीपाड़ पदार्पण से वयोवृद्धा तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. की भावना भी सफल हुई। यहाँ आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा २५ से ३१ दिसम्बर २००७ तक प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें स्थानीय ७५ एवं बाहर के १७५ शिविरार्थियों ने भाग लिया। ३० दिसम्बर को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित हुई।

नव वर्ष के शुभारंभ पर समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्रद्धालुओं ने उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण कर नूतन वर्षाभिनन्दन का आनन्द प्राप्त किया। पाली, सिवाना, सवाईमाधोपुर, जयपुर श्री संघ ने उपाध्यायप्रवर के श्री चरणों में आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनति रखी, वहीं जोधपुर श्री संघ ने पौष शुक्ला चतुर्दशी की भावपूर्ण विनति रखी। भावी-पालासनी के श्रावकों ने क्षेत्र फरसने की विनति रखी। उपाध्यायप्रवर ने जोधपुर की ओर विहार का संकेत फरमाया है। उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

सम्पर्क सूत्र- श्री नवरतन डागा, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६४१४४५

शिक्षण बोर्ड एवं स्वाध्याय संघ का प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम सम्पन्न

पंजाब एवं अन्य क्षेत्र- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू क्षेत्र में दिनांक १३.१२.०७ से २०.१२.०७ तक अष्टदिवसीय प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा, रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन, क्षेत्रीय संयोजक श्री किरण जी जैन-होशियारपुर, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री

कमलेश जी मेहता ने महनीय सेवाएँ दीं। प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम मुकेरिया, गढ़दीवाला, होशियारपुर, बंगा, नवांशहर, बलाचौर, रोपड़, नालागढ़, इन्द्र कॉलोनी लुधियाना, अहमदगढ़, रायकोट, बरनाला, मानसा, भटिण्डा, फ़रीदकोट, जगरावा, फगवाड़ा, नादौन तथा जम्मूशहर इस प्रकार कुल १९ स्थानों पर आयोजित किया गया। इन सभी स्थानों पर सामायिक स्वाध्याय करने, नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक शिक्षण शाला प्रारम्म करने, अवकाश के दिनों में शिविर लगाकर परीक्षा की तैयारी करने, २५ बोल की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा की गई। मौसम की प्रतिकूलता होते हुए भी अधिकांश क्षेत्रों में भाई-बहिनों में विशेष धार्मिक उत्साह देखा गया। *-राजेश कर्णावट, सचिव*

मेवाड़ क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक २१ से २५ दिसम्बर २००८ तक मारवाड़ एवं मेवाड़ के ब्यावर, निमाज, बापूनगर भीलवाड़ा, सहाड़ा, पहुंना, आरणी, सुरपुर, कपासन, भादसोड़ा, मावली, नवाणिया, डूंगला, बोहेड़ा, प्रतापगढ़, मन्दसौर, नीमच, महागढ़, कंजार्डा, मोरवन, सिंगोली, बेगूँ, पारसोली, पोटला, खाकला, जुणदा, जीरण, मनासा आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया, उदयपुर शाखा के परामर्शदाता श्री फूलचन्द जी मेहता, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा, उदयपुर शाखा संयोजक श्री कन्हैयालाल जी जैन एवं प्रचारक श्री रामपाल जी गोयल की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। श्री मानसिंह जी खारीवाल-सहाड़ा, श्री अशोक जी नलवाया-मन्दसौर की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्राप्त हुई। सभी स्थानों पर सामायिक स्वाध्याय करने, नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक शिक्षण शाला प्रारम्भ करने, २५ बोल की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा की गई। २१ नये स्वाध्यायी बनाए गए, खाकला में बोर्ड का केन्द्र स्थापित किया गया। प्रचार कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सम्प्रदाय के संत-सतियों के दर्शनों का लाभ भी प्राप्त हुआ। गुलाबपुरा स्वाध्याय संघ, शीतल स्वाध्याय संघ के प्रमुख पदाधिकारियों से भी सम्पर्क किया गया। *-मोहनकौर जैन, सचिव*

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत एक धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर २७.१२.०७ से ३१.१२.०७ तक पीपाड़ शहर में आयोजित हुआ। इस शिविर में सवाईमाधोपुर, कुण्डेरा, कुस्तला, चोरू, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, समीधी, गंगापुर, हिण्डौन, खेरली, भरतपुर, कोटा, जोधपुर, जयपुर, केकड़ी, बालोतरा, पीपाड़, रतकुड़ियां आदि स्थानों से लगभग १७५ शिविरार्थियों ने भाग लिया। योग्यता के आधार पर चार कक्षाओं में वर्गीकरण कर शिविरार्थियों को अध्यापन करवाया गया। प्रशिक्षक के रूप में श्री नेमीचन्द जी कर्णावट-भोपालगढ़, श्री दिनेश जी भंसाली-बैंगलोर, श्रीमती सीमा जी भंसाली-बैंगलोर, श्रीमती सुशीला जी जैन-जयपुर, श्री जितेश जी जैन-जयपुर, श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़, श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर एवं सुश्री सीमा जी लुंकड़-जोधपुर की पूर्ण सेवाएं एवं श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंजमण्डी, श्री गौतम जी जैन-बजरिया, श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर, श्री अशोक जी जैन-जयपुर की अंशकालीन सेवाएं प्राप्त हुई। इस शिविर में स्थानीय पीपाड़ के ७५ शिविरार्थियों ने भाग लिया उनकी अलग से अध्यापन व्यवस्था की गई।

परमपूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., सेवाभावी श्री यशवंत मुनि जी म.सा., सेवाभावी श्री लोकचन्द्र मुनि जी म.सा. का विशेष मार्गदर्शन एवं उद्‌बोधन सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। छात्रवृत्ति प्राप्त सभी शिविरार्थियों ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से त्याग-प्रत्याख्यान के साथ गुरु आम्नाय स्वीकार की। शिविर में संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा का भी विशेष मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। युवक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़, अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला, कार्याध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, श्री प्रमोद जी हीरावत ने शिविर अवधि में प्रत्येक शिविरार्थी का साक्षात्कार लिया तथा व्यक्तिगत विचार-विमर्श के समय आवश्यक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविरार्थियों को शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा एवं कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा द्वारा 'जीवन जीने की कला' विषय पर विशेष व्याख्यान दिया गया। हुबली संस्कार शिविर की भाँति ही इस शिविर में भी शिविरार्थियों ने तीन समय के बर्तन लकड़ी के बुरादे से साफ किए एवं अपूकाय जीवों की हिंसा से बचे। इस तरह स्वावलम्बन एवं जीव-

रक्षण का अनूठा उदाहरण इस शिविर में उपस्थित हुआ।

स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने सभी कार्यक्रमों में उत्साह से अतिथि सेवा का लाभ लिया एवं सभी शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

युवक परिषद् द्वारा पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पर राष्ट्रीय स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में चारित्र चूड़ामणि, इतिहास मार्तण्ड परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वाँ जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनांक २१ जनवरी २००८ को 'सामायिक-दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। इस दिवस पर निर्धारित कार्यक्रम के अलावा शाखाओं में राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय 'निर्ग्रन्थ परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र-आचार्य हस्ती' रखा गया है। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के बालक, बालिका, श्रावक एवं श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं। निबन्ध मौलिक एवं तथ्यात्मक हो जो ५०० शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए। निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि २९ फरवरी २००८ रखी गई है। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार १०००/- द्वितीय ५००/- तथा तृतीय २५१/- दिए जायेंगे। निबन्ध भेजने का पता-*श्री राकेश जैन, कार्यक्रम प्रभारी-सामायिक स्वाध्याय, शुभम क्लॉथ, पो. सुमेरगंजमण्डी, जिला- बून्दी (राज.), मो. ९४१३८६०१९८*

'पच्चीस बोल' प्रतियोगिता की तिथि ३० मार्च तक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 'पच्चीस बोल वर्ष' मनाने के उपलक्ष्य में पच्चीस बोल प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा किया जा रहा है। प्रश्न पुस्तिका का मूल्य २५/- एवं डाक द्वारा मंगवाने पर ३५/- है। उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि ३० मार्च २००८ (आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म दिवस) रखी गई है। प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर १५०००/-, सुपर टॉप टेन- १०००/- प्रत्येक एवं ४० प्रोत्साहन सम्मान २५०/- प्रत्येक प्रदान किये जायेंगे। प्रश्नपुस्तिका मंगवाने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क करें- (१) अ.भा. श्री जैन

रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-०२९१-२६३६७६३ (२) श्रीमती सुनीता मेहता-संयोजिका, ४६७ ए, ७वीं ए रोड, सरदारपुरा, जोधपुर, फोन-२६४०७५७, ९८२८१४१७५७। प्रश्नपुस्तिका में आवश्यक संशोधन हेतु द्रष्टव्य जिनवाणी दिसम्बर २००७, पृष्ठ ३८।

निःशुल्क प्लास्टिक सर्जरी शिविर

रत्नसंघीय श्रावकरत्न स्व. श्री सुगनचन्द जी भंडारी एवं उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी स्व. श्रीमती कमला देवी जी भंडारी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री दिलीप जी भंडारी के सौजन्य से राजदादी जी अस्पताल में २७.१.०८ से तीन दिवसीय प्लास्टिक सर्जरी का शिविर लगाया जा रहा है। शिविर में अमेरिका से डॉ. शरदकुमार दीक्षित गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सेवाएं देंगे। शिविर में चेहरे के दाग, पलक न खुलना, कटे-फटे होठ एवं भैंगापन से ग्रसित लोगों का निःशुल्क ऑपरेशन होगा।

सम्पर्क सूत्र- *सुभाष भण्डारी, १७ तापड़िया बिल्डिंग, जालोरी गेट, जोधपुर, मोबाइल-०९३१४७००५००४*

राष्ट्रीय माँस बोर्ड गठन का विरोध करें

भारत सरकार का खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय देश में एक राष्ट्रीय मांस बोर्ड गठन के प्रस्ताव पर गंभीरता से कार्य कर रहा है। बोर्ड मांस एवं मुर्गी उद्योग को बढ़ावा देने का काम भी करेगा। सरकार की कार्य योजना अभी प्रारम्भिक स्तर पर है। प्रत्येक अहिंसाप्रेमी व्यक्ति का नैतिक उत्तरदायित्व है कि वह मांस बोर्ड गठन का विरोध करे और खाद्य संस्करण उद्योग मंत्रालय, पंचशील भवन, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली-११००४९ को अपना विरोध-पत्र प्रेषित कर बोर्ड गठन प्रक्रिया रद्द करने की मांग करें।

-प्रो. रतन जैन-महासचिव

लन्दन में 'जैन कला और स्थापत्य' पर कार्यशाला

स्कूल ऑफ ओरियन्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज (SOAS) लन्दन विश्वविद्यालय, लन्दन द्वारा २०-२१ मार्च २००८ को 'जैन कला और स्थापत्य' विषय पर १०वीं कार्यशाला आयोजित की जायेगी, जिसमें जैन परम्परा की कला एवं स्थापत्य कला में भूमिका विषयक लेख आमंत्रित किये गये हैं। कार्यशाला में जैन धार्मिक स्थान, जैन मन्दिर, देवपूजा, मूर्ति शिल्प, पेन्टिंग, डिजाइन एवं पाण्डुलिपि आदि से सम्बन्धित अवदान पर चर्चा की जाएगी। *-डॉ. एस.एल. संचेती, जोधपुर*

बधाई/चुनाव

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की संयोजक एवं समाजसेवी सुश्राविका श्रीमती सुशीला जी बोहरा को

'नेशनल एसोशिएसन फॉर दी ब्लाइन्ड, दिल्ली' द्वारा 'सरोजनी त्रिलोकनाथ अवार्ड' से ७ जनवरी २००८ को दिल्ली में एक समारोह में सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप अभिनन्दन पत्र की राशि प्रदान की गई। १७ नवम्बर को सुश्राविका श्रीमती बोहरा को जोधपुर एसोशिएसन, मुम्बई ने ''समाज-रत्न'' की उपाधि से अलंकृत कर २१०००/- की राशि भेंट की है।

जयपुर- श्री हुकमचन्द जी जैन सुपुत्र स्व. श्री हम्मीरमल जी जैन (बिलोपा वाले), मानसरोवर, जयपुर की अधीक्षक केन्द्रीय उत्पाद सीमा शुल्क एवं सेवाकर के पद पर पदोन्नति हुई है, एतदर्थ बधाई।

शुजालपुर सिटी (म.प्र.)- सौ.कां. सुरभि जैन सुपुत्री श्री विनोद जी -प्रभा जी जैन निवासी अलिराजपुर ने चतुर्थ जिनेन्द्र भारत ज्ञान सुन्दरी प्रतियोगिता में भाग लिया। उन्हें उप-विजेता घोषित किया गया और स्वर्ण-पदक से सम्मानित किया गया।

त एग्रो इण्डस्ट्रीज प्रा.लि. को इकॉनोमिक डवलपमेंट फोरम द्वारा निर्यात के लिए ' एक्सपोर्ट क्वालिटी एक्सीलेंस अवार्ड' नई दिल्ली में प्रदान किया गया। कंपनी के संचालक श्री महावीर चन्द जी बोथरा ने न्यायमूर्ति श्री एम.एस. सिद्दिकी के कर-कमलों से यह अवार्ड स्वीकार किया। गुणवत्ता हेतु कम्पनी को I.M.O. सर्टिफिकेट प्राप्त है।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, कोण्डीतोप, चेन्नई की आमसभा में श्री विजयराज जी भंडारी अध्यक्ष, श्री सुरेशकुमार जी गेलड़ा और श्री सम्पतलाल जी सिंघवी- उपाध्यक्ष, श्री सुरेन्द्र कुमार जी कोठारी मंत्री, श्री शांतिलाल जी सिसोदिया सहमंत्री और श्री राजेशकुमार जी बाफना कोषाध्यक्ष चुने गये।

सिकन्दराबाद- माता मरुदेवी जैन महिला मण्डल के चुनाव में श्रीमती चंचलबाई पोकरणा - अध्यक्ष, श्रीमती मंजुला संचेती - कार्याध्यक्ष, श्रीमती शोभाबाई नाहर

मंत्री एवं श्रीमती पारसबाई गांधी-कोषाध्यक्ष निर्वाचित की गई। मण्डल प्रतिमाह १ व १५ तारीख को स्वाध्याय कक्षाएँ चलाता है।

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा २४ से ३० दिसम्बर, २००७ तक पावटा स्थानक में धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। शिविर में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा पहली से नवमी तक पाठ्यक्रमानुसार तथा दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रमानुसार अध्यापन कराया गया। शिविर में ९९ शिविरार्थियों ने पूर्ण उमंग-उत्साह से भाग लिया। शिविर के समापन पर प्रत्येक शिविरार्थी को पारितोषिक प्रदान किया गया।

अलवर- श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलवर ने व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ३ के महावीर भवन चातुर्मास पश्चात् दिनांक २७ नवम्बर को शांतिकुंज स्थित आचार्य हस्ती चिकित्सालय में प्रवचन सभा का आयोजन रखा। महासती श्री रुचिता जी म.सा. ने कहा कि बीमार होने पर आदमी नीरोग होने के लिए अस्पताल की शरण लेता है उसी प्रकार धर्म की शरण से आत्मा का उद्धार हो सकता है। मानव होकर भी यदि जीवन में मानवता नहीं आई तो जीवन व्यर्थ है। बीमार होकर शरीर नष्ट हो गया तो एक भव बिगड़ सकता है, लेकिन पाप कर्मों से भव-भव बिगड़ सकते हैं, अतः धर्म की शरण आवश्यक है। महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. ने कहा कि मानव की पहचान आकृति से नहीं बल्कि उसकी प्रकृति और संस्कृति से होती है।

पीपाड़- श्री परमात्माचन्द भण्डारी चेरीटेबल ट्रस्ट, जोधपुर द्वारा पीपाड़शहर में स्थापित गुरु हस्ती चिकित्सालय उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है। नेत्र रोगियों को गाँव-गाँव से लाना, ऑपरेशन करना, ऑपरेशन पश्चात् समुचित देखभाल करना, रोगियों के साथ आने वालों को आवास-भोजन व्यवस्था निःशुल्क प्रदान करना, लेंस की निःशुल्क व्यवस्था से चिकित्सालय में मरीजों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है।

भरतपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मौहल्ला-गोपालगढ़ भरतपुर में स्थानीय संघ एवं गजेन्द्रनिधि ट्रस्ट के सहयोग से 'रत्न स्वाध्याय भवन' का ६ दिसम्बर को उद्योगपति श्री प्रेमचन्द जी गोयल एवं श्री सुरेशचन्द जी जैन, जयपुर के कर-कमलों से

शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

मुम्बई- जैन इण्टरनेशनल ट्रेड ऑरगेनाइजेशन (JITO) ३ से ६ जनवरी २००८ तक व्यावसायिक मेले का आयोजन कर रहा है। जीतो जैन व्यवसायियों, उद्योगपतियों एवं बुद्धिजीवियों का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है।

कोटा- जैन दिवाकर उच्च माध्यमिक विद्यालय वल्लभबाड़ी में जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज के १३१ वाँ जन्म-दिवस साध्वीरत्ना श्री सुधाकर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में व्यसनमुक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने व्यसन से मुक्त रहने की शपथ ली।

हैदराबाद - २३ दिसम्बर २००७ को जैन रत्न युवक परिषद् आंध्र प्रदेश इकाई की चिन्तन संगोष्ठी रामकोट स्थित जैन सेवा संघ, हैदराबाद में रखी गई। युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रमों की क्रियान्विति में परिषद् सदस्यों की सक्रियता बढ़े एतदर्थ युवारत्न बन्धुओं ने विचार-विमर्श किया। सदस्यों की अच्छी उपस्थिति एवं सुन्दर सुझाव सामने आये। स्नेह-भोज में युवारत्न-बन्धुओं की आत्मीयता प्रमोदजन्य रही। *-श्रीपाल देशलहरा*

अजमेर - राजस्थान के श्वेताम्बर जैन परिवार जो बी.पी.एल. या अभावग्रस्त श्रेणी में हैं, वे अपने बच्चों के शिक्षण एवं परवरिश हेतु आवेदन कर सकते हैं। बच्चों की आयु कम-से-कम १२ वर्ष होनी चाहिये और दो साल का परीक्षा परिणाम जिसमें ८०% या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों, वे अपना संक्षिप्त परिचय 'ओजस्वी', ९५ एल.आई.सी कॉलोनी, वैशाली नगर- अजमेर ३०५००६ (०१४५-२६२२९०२, ९२५२८-३४०१६) E-mail gsbafna@yahoo.co.in पर भेजकर आवेदन कर सकते हैं।

हैदराबाद - प्राणी रक्षा संगठनों एवं सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की सक्रियता से बकरीद के दिन एवं उसके एक पखवाड़े पूर्व 'पशु बचाओ-देश बचाओ' अभियान में २०२ गायें व २० भैसें बचायी गई, जिन्हें गोशाला को सुपुर्द किया गया। आंध्रप्रदेश के पशु कल्याण अधिकारी श्री श्रीपाल जी देशलहरा ने पशु प्रेमियों से गोदान, चारा एवं औषधि के लिए समाज बन्धुओं से सहयोग की अपील की है। सहयोग राशि श्री श्रीपाल जी देशलहरा, करुणा इन्टरनेशनल, 2-2-83/1, Ist Floor, Pan Bazar, Secunderabad - 500003 (A.P.) 9391100774 पर भेज सकते हैं।

श्रद्धाञ्जलि

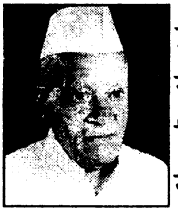

अजमेर- संघसेवी-संतसेवी, प्रज्ञावान श्रावक, प्रबुद्ध लेखक, प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभासम्पन्न आशुकवि, प्रख्यात पत्रकार स्थानकवासी समाज के गौरव श्री जीतमल जी चौपड़ा का लम्बी बीमारी के पश्चात् १९ दिसम्बर, २००७ को स्वर्गवास हो गया। अजमेर श्री संघ के चौपड़ा साहब वर्षो मंत्री रहे। फलस्वरूप जैन जगत् में अजमेर श्री संघ व श्री जीतमल जी चौपड़ा एक-दूसरे के पर्याय तुल्य समझे जाने लगे। संघ में एकता रहे, धर्मस्थान खाली न रहे, साधना-आराधना का अनवरत क्रम चले, इस दृष्टि से उन्होंने जिसका चातुर्मास चाहा, पाया। चातुर्मास में धर्म-साधना की प्रेरणा करने के साथ वे स्वयं दया-संवर, उपवास-पौषध की साधना करते थे। युवावस्था में श्री जीतमल जी चौपड़ा की कण्ठकला से प्रभावित हो उन्हें कई कलाकारों एवं रंगकर्मियों ने सुन्दर भविष्य के सुनहरे प्रस्ताव दिये, किन्तु आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने युवाहृदय चौपड़ाजी को धर्मसंघ में सक्रिय होने का आह्वान किया। गुरु हस्ती के साधनामय जीवन और गुरु हस्ती की सद्सीख को गुरुमंत्र मानकर चौपड़ाजी संघसेवा में सक्रिय हुए तो देशभर में संघहितैषी श्रावक के रूप में विख्यात हो गये। अजमेर में साधु सम्मेलन हुए, अनेक दीक्षाएँ हुईं, कई महापुरुषों ने संलेखना-संथारा कर समाधिमरण प्राप्त किया। अजमेर संघ-मंत्री के रूप में चौपड़ा साहब ने संघ की शोहरत वृद्धि में कोई कसर नहीं रखी। गुरु हस्ती के षट्टधर गुरु हीरा के वि.स. २०५३ के चातुर्मास में चौपड़ा साहब ने सामायिक-साधना, तप-आराधना और शासन प्रभावना में आचार्य श्री हीरा के कृतित्व को उजागर किया, चौपड़ा साहब के रचित भजन-गीत आज भी जन-मन की जिह्वा पर हैं। वे गुणग्राही श्रावक थे। स्थानकवासी समाज की एकता के लिए उनकी कलम बराबर चलती रही। सिद्धान्तों से समझौता उन्हें इष्ट नहीं था, इसलिए वे दो टूक शब्दों में न केवल अपनी बात रखते, अपितु बात के साथ पुष्ट प्रमाण रखने में भी उन्होंने सजगता रखी। समाजहित-चिन्तक चौपड़ा साहब के आत्मज विजय बाबू जीत की भेरी के माध्यम से संघसेवा में सक्रिय रहें और अपने पिताश्री के पदचिन्हों पर चलें, यही मंगल मनीषा है।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त सेवाभावी सुश्रावक श्री सुरेन्द्रचन्द जी सिंघवी का २२ दिसम्बर, २००७ को देहावसान हो गया। वे रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावक थे। सामायिक-

स्वाध्याय के प्रति सजग श्रावकरत्न का व्यवहार मधुर था।

सोजत सिटी- सुश्राविका श्रीमती विलमबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री मदनलाल जी सिंघवी का १०७ वर्ष की आयु में १४ दिसम्बर २००७ को संथारे के साथ स्वर्ग-गमन हो गया। श्राविकारत्न ने अपने जीवन में त्याग-तप को विशेष महत्त्व दिया। *-बलवन्तराज मेहता*

जयपुर- देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित संघसेवी-संतसेवी सुश्राविका श्रीमती

सरदारबाई जी बडेर धर्मपत्नी धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ रत्नव्यवसायी सुश्रावक श्री हरीशचन्द्र जी बडेर का ७२ वर्ष की आयु में २५ दिसम्बर २००७ को आकस्मिक निधन हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्री धनराज जी पुंगलिया की सुपुत्री एवं संघ संरक्षक स्व. श्री पूनमचन्द जी बडेर की पुत्रवधू थी। सेवा के साथ सरलता, सहनशीलता, सहजता, विनम्रता जैसे गुणों के कारण संघ-समाज में उनका अच्छा प्रभाव था। त्याग-तप में उन्होंने उपवास, बेले, तेले आदि की अनेक तपश्चर्याएँ कीं। विपश्यना साधना में रुचिशील श्राविका ने कई ध्यान शिविरों में भाग लिया, मौन साधना की। वे मूक पशु-पक्षियों की सेवा में भी सजग थीं। रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका में उदारता का विशेष गुण था और सत्संग-सेवा तथा सत्संग-समागम के सुयोग को पाकर वे हर्षित-पुलकित हो सेवा में सन्नद्ध रहीं। मरणोपरान्त नेत्रदान कर श्राविकारत्न ने नेत्रहीन के जीवन में प्रकाश भी दिया। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावकरत्न श्री हुक्मराज जी मेहता(खींवसरा) सुपुत्र स्व. श्री

मगराज जी मेहता का ३० दिसम्बर २००७ को स्वर्गवास हो गया। श्रावकरत्न की माताश्री ने रत्नसंघ में दीक्षित हो महासती श्री सज्जनकंवर जी म.सा. के रूप में शासन की महती प्रभावना की। आपके भ्राता श्री नगराज जी मेहता भी धर्मनिष्ठ श्रावक हैं और स्थानीय संघ के कोष का दायित्व संभाल रहे हैं। खींवसरा मेहता परिवार की संघ-सेवा अनुकरणीय है।

जयपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती भंवरी देवी जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री अजीतराज जी सिंघवी का ८ दिसम्बर २००७ को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका थीं। उनके जीवन पर गुरु हस्ती का विशेष प्रभाव रहा। मरणोपरान्त नेत्रदान कर श्राविकारत्न ने आदर्श उपस्थित किया।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्रावक श्री देवराज जी रांका सुपुत्र स्व. श्री बच्छराज

जी रांका (पालासनी वाले) का ४ जनवरी २००८ को संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। वे रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावक थे। सरलता, सादगी, सहिष्णुता, उदारता एवं सेवाभावना जैसे विशिष्ट गुणों का उनमें संगम था। श्रावकरत्न ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से पालासनी चातुर्मास के समय शीलव्रत अंगीकार किया था। श्रावकरत्न के संथारे की भावना साकार करने हेतु परिवारजनों ने महामन्दिर विराजित आचार्य श्री शुभचन्द्रजी म.सा. से निवेदन किया, आचार्य श्री ने अपने आज्ञानुवर्ती संत श्री जयघोष मुनि जी को संथारे के प्रत्याख्यान हेतु भेजा। संथारा अंगीकार करने के अनन्तर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चांदा देवी, पारिवारिक परिजनों एवं इष्ट-मित्रों ने स्तवन-भजन एवं नमस्कार महामंत्र जाप का बराबर सहयोग बनाए रखा। महामन्दिर क्षेत्र में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में अग्रणी रहने वाले श्रावकरत्न का पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- संतसेवी धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री ज्ञानचन्द जी चौपड़ा (अजमेर वाले) का

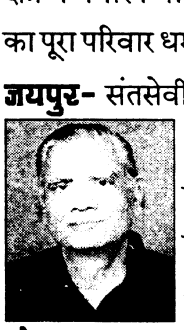

२१.१२.०७ को स्वर्गवास हो गया। प्रतिदिन पाँच सामायिक करने वाले श्रावकरत्न ने वर्षों पूर्व शीलव्रत का खंद कर लिया था। वे जमीकन्द के त्यागी थे एवं रात्रि-चौविहार त्याग रखते थे। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- सुज्ञ श्रावकरत्न दृढ़धर्मी श्री पृथ्वीराज जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री सलेराज

जी लुणावत का आकस्मिक निधन २७ दिसम्बर, २००७ को हो गया। सरल स्वभावी सुश्रावक की धर्म-साधना में अच्छी रुचि थी। संघसेवा में सक्रिय श्रावकरत्न के जीवन में सादगी, सहिष्णुता, उदारता और मधुरता का संगम था। उन्होंने मरणोपरान्त नेत्रदान की भावना व्यक्त की जिसकी परिवारजनों ने पूर्ति की। उनके सुपुत्र श्री महेन्द्र जी ने वाराणसी में सामाजिक, धार्मिक, व्यवसायिक क्षेत्र में अच्छी ख्याति अर्जित की है।

जयपुर- रत्नसंघ की समर्पित श्राविका श्रीमती कैलाशदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री रतनचन्द जी छाजेड़ का ६.१२.०७ को स्वर्गवास हो गया। सामायिक-स्वाध्याय और धर्म साधना में उनकी विशेष रुचि थी।

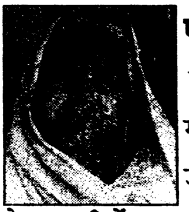

पाली- धर्मपरायणा श्रीमती लीलादेवी जी धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी बालिया का १९ दिसम्बर, २००७ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण और सेवाभावी श्राविका थीं। उनके सुपुत्र डॉ. प्रदीप जी बालिया सहित परिवार के सभी सदस्य सेवाभावी हैं।

जयपुर- समाज हितैषी श्री हरीशचन्द्र जी ढड्ढा सुपुत्र स्व. श्री दीपचन्द जी ढड्ढा का २१ दिसम्बर २००७ को देहावसान हो गया।

बैंगलोर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती जतनकंवर जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री गौतमचन्द जी चौपड़ा एवं सुपुत्री स्व.श्री शंकरलाल जी खींचा का १० दिसम्बर २००७ को स्वर्ग-गमन हो गया। सुश्राविका की आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति अनन्य आस्था थी। वे विगत ६ वर्षों से अस्वस्थ रहीं, किन्तु देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्थावान श्राविका ने अन्तर्मन की भांवना से आचार्यप्रवर से मांगलिक श्रवण करने पर स्वास्थ्य में सुधार अनुभव किया। सुश्राविका ने आचार्यप्रवर के बैंगलोर चातुर्मास में सेवा-भक्ति का लाभ लिया। बंगारपेट चातुर्मास में भी श्राविकाजी ने श्रद्धाभाव से सेवा-लाभ लिया। श्राविकारत्न की गुरुभक्ति के साथ संघ-सेवा और स्वधर्मी वात्सल्य सेवा अनुकरणीय रही।

हिण्डौनसिटी- रत्न संघ के सुज्ञ श्रावकरत्न श्री रामस्वरूप जी जैन का ८५ वर्ष की आयु में २६.११.०७ को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे। नित्यप्रति सामायिक करने वाले श्रावक रत्न का वर्षों से जमीकन्द का त्याग था। वे सेवाभावी सरल प्रवृत्ति वाले श्रावक थे। *-धर्मचन्द जैन, मंत्री*

बैंगलोर- संघसेवी, संतसेवी सुश्राविका श्रीमती मदनकंवर जी (धापूबाई) कोठारी

धर्मपत्नी सुश्रावक श्री मीठालाल जी कोठारी बिराटियां वाले का ७६ वर्ष की आयु में ३० नवम्बर, २००७ को स्वर्गवास हो गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के बैंगलोर चातुर्मास में एवं यशवन्तपुर पधारने पर व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित की। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में अग्रणी रहने वाली श्राविका ने उदारता, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा और परस्पर प्रेम का आदर्श उपस्थित किया।

हिण्डौनसिटी-संघ सेवी सुश्रावक श्री रामदयाल जी जैन, गढ़ी सवाईराम (जिला-अलवर) वांले का ८८ वर्ष की आयु में २८.११.०७ को स्वर्गवास हो गया। प्रतिदिन पाँच सामायिक करने वाले श्रावक के जीवन में त्याग-तप के प्रति अन्त तक भावना बनी रही। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। उनके भ्राता श्री हरिप्रसाद जी जैन ने लम्बे समय तक गुरुचरण सेवा में रहकर संघ-सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया।

-धर्मचन्द जैन, मंत्री

चैन्नई- सुश्रावक श्री महावीरचन्द जी मूथा सुपुत्र स्व. श्री एच.वी विजयराज जी मूथा

का ६४ वर्ष की आयु में ५.१२.०७ को असामयिक स्वर्गवास हो गया। सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में वे उदारतापूर्वक सहयोग करते थे। आचार्य श्री नानेश का उनके जीवन पर प्रभाव था।

बालोतरा- संघसेवी-संतसेवी सुश्राविका श्रीमती भूरीबाई जी लूंकड धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचन्द जी लूंकड़ का चार दिवसीय संथारे के साथ २५ दिसम्बर, २००७ को समाधिमरण हो गया। वे रत्नसंघ की समर्पित श्राविका थीं। उपाध्याय प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के बालोतरा चातुर्मास में श्राविकारत्न ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा और व्रत-प्रत्याख्यानों में उत्साह प्रदर्शित किया। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

सवाईमाधोपुर- संघसेवी स्वाध्यायी सुश्रावक श्री अनोखमल जी जैन चौरुवाले का ८३ वर्ष की आयु में ३०.११.०७ को संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक और त्याग-तप में अग्रणी श्रावक रत्न की समाज-सेवा में विशेष रुचि थी।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री तपस्वीनाथ जी मोदी का ६० वर्ष की आयु में १६ नवम्बर, २००७ को स्वर्गवास हो गया। सरलता की प्रतिमूर्ति श्रावकरत्न की चारित्रवान संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट आस्था थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

११०८२ जागीरदार श्री पृथ्वीराज जी सालेचा, बालोतरा (राज.)
११०८३ Shri Gyanchand ji Jain, Hubli (K.T.)
११०८४ Shri Bharat Ji Surana, Bangalore (K.T.)
११०८५ श्री राजेन्द्र जी चोरडिया (चौधरी), धुले (महाराष्ट्र)
११०८६ श्री बाबूलाल जी जीरावला, सिन्धनूर (कर्नाटक)
११०८७ Miss. Payal R. Kataria Ji, Dhulia (M.H.)
११०८८ Shri Bansilal Ji Parakh, Kandiwali, Mumbai (M.H.)
११०८९ श्री प्रवीण जी जैन, बड़ौत (उ.प्र.)
११०९० श्री पारसमल जी गोखरू, जयपुर (राज.)
११०९१ श्री रमेश कुमार जी बाफना, जोधपुर (राज.)
११०९२ श्रीमती पुष्पा जी कोठारी, अंधेरी पश्चिम, मुम्बई (महा.)
११०९३ श्री रविन्द्र कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)
११०९४ Shri Madan Chand ji Nahar, Chennai (T.N.)
११०९५ श्री नवनीत कुमार जी परमार, जयपुर (राज.)
११०९६ श्री राजेश जी कुम्भट, जयपुर (राज.)
११०९७ श्री मदनराज जी कटारिया, इन्दौर (म.प्र.)
११०९८ श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
११०९९ Shri Sandeep Kumar Ji Chajed, Hyderabad (A.P.)
१११०० Shri Jaipal Ji Mehta, Secunderabad (A.P.)
१११०१ श्री प्रवीणचन्द जी मोहनोत, मुम्बई (महा.)
१११०२ श्री निर्मल कुमार जी पालरेचा, बैंगलोर (कर्नाटक)
१११०३ Shri B.R. Bhandari, Mumbai (M.H.)
१११०४ श्रीमती मीनाक्षी जी गांधी, भीलवाड़ा (राज.)
१११०५ श्री सम्पत जी जैन, भीलवाड़ा (राज.)
१११०६ श्री नथमल जी चोरडिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)
१११०७ श्री विजयसिंह जी हिंगावत, इन्दौर (म.प्र.)
१११०८ Smt. Renu Devi Ji Srishrimal, Kolhapur (M.H.)

जिनवाणी हेतु साभार

५१००/- श्री महेन्द्र जी अरूणा जी कर्णावट, जयपुर, अपने सुपुत्र चि. विक्रम का शुभ विवाह दिनांक ३०.११.०७ को सौ. कां. रूना के संग सुसम्पन्न होने पर परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

११००/- श्री पुखराज जी, प्रकाशचन्द जी, रमेशचन्द जी, पदम कुमार जी बाघमार, चेन्नई, टीना सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी बाघमार (कोसाणा वाले) के ८ की तपस्या करने के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री चाँदमल जी जैन सुपुत्र श्री उच्छबराय जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, सुपुत्र चि. राजकुमार जी का विवाह सौ.कां.ऐनी सुपुत्री श्री नन्नुमल जी श्रीमाल, शिवपुरी के साथ दिनांक ०२.१२.२००७ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुशील कुमार जी डूंगरवाल (थांवला वाले), बैंगलोर, चि. सुशील कुमार का शुभ विवाह सौ. कां. शीतल के साथ सम्पन्न होने व सपरिवार गुरु भगवन्त के दर्शन लाभ लेने की खुशी में भेंट।

११००/- श्रीमती लाडकंवर जी, अमरेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर, श्री सुरेन्द्रचन्द जी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री नेमीचन्द जी सिंघवी का आकस्मिक निधन दि. २२.१२.०७ को होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

१०००/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी, अभिषेक जी बाघमार, मैसूर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में।

१०००/- श्री मुनेश्वरनाथ जी, दिनेश्वरनाथ जी मोदी, जोधपुर, पितृवर्य सुश्रावक श्री तपस्वीनाथ जी मोदी का दिनांक १६.११.२००७ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्री परमानन्द जी जैन, धनसुरेश जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. आशीष जी जैन सुपुत्र श्रीमती इन्दिरा जी धनसुरेश जी जैन का शुभ विवाह सौ. कां. अनुप्रिया सुपुत्री श्री अशोक जी जैन के साथ दिनांक ०४.१२.२००७ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५०१/- श्री ज्ञानमल जी मेहता, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी श्रीमती ऋषभकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रकाशमल जी मेहता की प्रथम पुण्य तिथि ४.१२.०७ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

५००/- श्री विजेन्द्र जी सुपुत्र श्री दौलतराम जी महमवाल, दिल्ली, श्रीमती सुनीता जी महमवाल धर्मपत्नी श्री विजेन्द्र जी महमवाल, दिल्ली के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री पन्नालाल जी, दीपककुमार जी, नवीन कुमार जी लुंकड़, कोयम्बटूर, चि. दीपक संग खुशबू का परिणय दिनांक ०४.१२.२००७ का सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री अरविन्द जी, महेन्द्र जी, नरेन्द्र जी, सुरेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी पूजनीय माताजी श्रीमती रतनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी सिंघवी का स्वर्गवास दि. १३.११.०७ को बड़ोदरा में होने पर उनकी पावन स्मृति में।

५००/- श्री शांतिलाल जी बालिया, पाली, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती लीला देवी जी का दिनांक १९.१२.०७ को जोधपुर में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

जीव दया हेतु साभार

१५००/- श्री आशुतोष जी सिंघवी, जोधपुर, पायल सिंघवी (पुत्री श्री नवरतन जी सुमन डागा) धर्मपत्नी श्री आशुतोष जी सिंघवी को पुत्र रत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुशील कुमार जी डूंगरवाल (थांवला वाले), बैंगलोर, चि. सुशील कुमार का शुभविवाह सौ. कां. शीतल के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री हुकमचन्द जी जैन, मानसरोवर, जयपुर, अधीक्षक-केन्द्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवाकर के पद पर पदोन्नति होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, उनियारा-टोंक, श्री गुलाबचन्द जी जैन का दिनांक १७.१०.२००७ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, श्रीमती कमला जी, श्री लोकेन्द्रनाथ जी, श्रीमती ऋतु जी मोदी, जोधपुर, अपने पूजनीय श्रीमान हुकमनाथ सा एवं श्रीमती कृष्णा जी मोदी की पुण्य स्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

५१००/- श्री सोहनलाल जी महावीरचन्द जी बोथरा पुत्रश्री सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव, अपनी फर्म द्वारा दालों के निर्यात में उत्कृष्ट क्वालिटी हेतु पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

१००००० /- श्री सोहनलाल जी हुण्डीवाल, चेन्नई, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक हीरा प्रवचन पीयूष भाग-२ व भाग-३ की ११००-११०० प्रतियों के पुनः मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया।

११०००/- श्री मांगीलाल जी, सुरेन्द्र कुमार जी चौपड़ा (लाधाणी) पाली वाले, मण्डल में साहित्य प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

४५००/- श्री ज्ञानचन्द जी जैन, हुबली, पुस्तकें २५ बोल मूल के पुनः मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया।

अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर शाखा को साभार

५१००/- श्रीमती अरूणा जी महेन्द्र जी कर्णावट, जयपुर, पुत्र विक्रम का शुभ विवाह सौ. कां.

रूना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

५०००/- श्रीमती मीना जी सुधीर जी गोलेछा, जयपुर, सुपुत्री के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

११००/- श्री दिग्विजयसिंह जी कोठारी, जयपुर, पूजनीय माताश्री श्रीमती प्रेमदेवी जी कोठारी की पुण्य स्मृति में।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

३१०००/- श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, चेन्नई, परीक्षा पुरस्कार हेतु।

५०००/- श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई, पुरस्कार हेतु।

२०००/- श्री संतोष जी, मन्दसौर, सहायतार्थ।

आगामी पर्व

पौष शुक्ला १४	सोमवार, २१.०१.२००८	चतुर्दशी, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वाँ जन्म दिवस।
पौष शुक्ला १५	मंगलवार, २२.०१.२००८	पक्खी
माघ कृष्णा ४	शनिवार, २६.०१.२००८	उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का ७४वाँ जन्म-दिवस।
माघ कृष्णा ८	बुधवार, ३०.०१.२००८	अष्टमी
माघ कृष्णा १४	बुधवार, ०६.०२.२००८	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ला २	शनिवार, ०९.०२.२००८	आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ८८वाँ दीक्षा-दिवस।
माघ शुक्ला ८	गुरुवार, १४.०२.२००८	अष्टमी
माघ शुक्ला १४	बुधवार, २०.०२.२००८	चतुर्दशी एव पक्खी

स्मरणीय क्षणिकाएँ

डॉ. दिलीप धींग

समता

हिंसा और विषमता करती,
मनुज मनुजता का संहार।
जीवन में अपनाओ समता,
समता सब ग्रन्थों का सार॥

स्वाध्याय

स्वाध्याय का तप करने से,
ज्योतिर्मय होता अन्तर्मन।
तम अज्ञान का हर जाता है,
पावन बन जाता है जीवन॥

-बम्बोरा, जिला- उदयपुर (राज.)

GURUDEV
Creating solid structures
that lasts a life-time and more
Excellent Bond Strength × Greater resistance to Corrosion Superior Weldability Excellent Ductility and
High Bendability ×Uniform Properties throughout length Enhanced Resistance to Fire Ability to withstand
Earthquakes × Bigger savings in steel consumption (almost 18%) Available in Fe 500 grade with IS 1786 standard
For marketing enquiries, contact : 98410-16666
Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 2852 5127 (3 Lines) / 28525596
Fax : 28520713 / 1143 E-mail : steelmktg@surana.org.in /
sllmkt@surana.org.in
Website www.surana.org.in
IS:1786
SURANA
yes, the best
TMT RE-BARS

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान पर जिसका अधिकार है, संसार उसके वश में है।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

स्वानुशासन से त्याग करना संस्कृति है

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008
Phone : 044-28553185, 4215478, 9881041097

(Branches at Chennai, Bangalore, Hyderabad and Goa)

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD NAVARATHAN KAVAD
RAVINDRA KAVAD ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No. : 044-65363944, 26274165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

लोक लज्जा से दिखावा तो हो सकता है, पर कर्म-निर्जरा नहीं होगी।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph.: 26272609, 55666555

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph.: 26272906, 55689588

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

हमारी दृष्टि कर्मक्षय पर है, समत्व की साधना पर है तो धर्म के फल से हम कभी वंचित नहीं हो सकते।

-आचार्य श्री हीरा

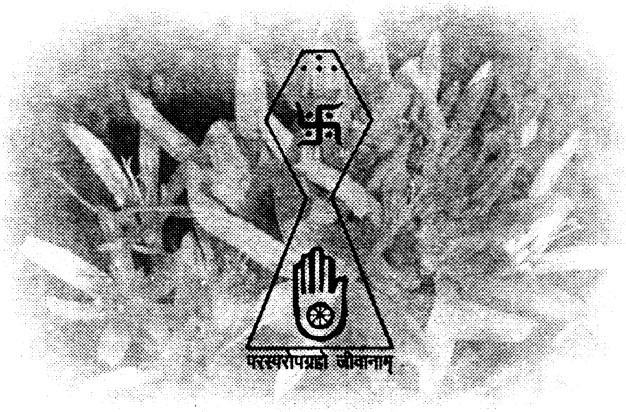

गुरु हीरा का यह संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश।

With Best Compliments From:

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1 Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30024282, 23669818
Mobile : 98210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण शाला, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 1 ★ मूल्य : 10 रु.
15 जनवरी, 2008 ★ पौष सं. 2064

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, **Ghatkopar (W)**

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road, **Andheri (E)**

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, **Mulund (E)**

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, **Thane (W)**

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visite: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD.
www.propertysolutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।